

मुस्तारे हिंद श्री जी साहिब महंमत रुहुल्लाह प्राणनाथ जी का

फ़रमान



पाक मकाम (पवित्र धर्मस्थान):- दरगाहें मुकद्दस श्री जी साहिब जी का गुम्मत साहब, मुक्ति धाम, ५ पदमावती पुरी, पन्ना, म.प्र.

प्रकाशक

श्री प्राणनाथ जी ज्ञानपीठ, सरसावा, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश

श्री जी साहिब सरदार महंमत रूहुल्लाह प्राणनाथ जी का

परमान



मुहद्दिसें आलम, मुख्तारें-ए-हिंद, हक़-हादी-ए-आज़म,
विजयाभिनंद बुद्ध निष्कलंक अवतार, आख़रूल इमाम
महमंद महदी साहिबुज़्ज़माँ-ए-मुन्तज़र, श्री जी साहिब,
सरदार महंमत रूहुल्लाह प्राणनाथ जी, की मेहर और
परमहंस महाराज रामरत्न nkl जी, धर्मवीर जागनी रत्न
सरकार साहब की नजरें करम से ग्रंथ प्रकाशित कराया



-प्रकाशक-

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा,
सहारनपुर, उत्तर प्रदेश

❧❧❧ विषय सूची ❧❧❧

	पृष्ठ संख्या
1. श्री जी का संदेश कुरान पाक से	1-72
2. कुरान पाक के सवाल (प्रश्न)	73-90
3. पत्र कुरान पाक का	91-116



- किताब - श्री जी साहिब महंमत प्राणनाथ जी का फ़रमान
समर्पण - हक-हादी ए-आज़म, (सत्य के महान सदगुरु)
मुख्तारे हिंद, (भारतीय प्रतिनिधि) श्री जी साहिब
सरदार महंमत (प्रशंसित) रूहुल्लाह (ब्रह्मात्मा)
प्राणनाथ जी, अहले बैत (सुन्दरसाथ), अमीरूल
मोमिनीन (ब्रह्ममुनि प्रमुख) महाराजा छत्रसाल जू
देव बुंदेला, गुम्मट साहब दरबार मुक्ति धाम परना।
प्रेरणास्रोत - परमहंस महाराज रामरत्न दास जी, ब्रह्ममुनि धर्मवीर
जागनी रत्न सरकार-ए-आज़म श्री जगदीश चंद्र जी
प्रस्तुति - सुल्तान-उल-कलम (सार्मथ्यवान ब्रह्मज्ञानी)
महात्मा श्री राजन स्वामी जी महाराज
(संस्थापक)
प्रकाशक - श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा
नकुड रोड, ज़िला सहारनपुर, उत्तर प्रदेश
श्री प्राणनाथ जी का दरबार
भाव दास मुहल्ला, शिया बाग, बड़ौदा (गुजरात)
संशोधक - वाहिद नशात वहदत (एक निजानंदी प्रतिनिधि)
एडवोकेट नरेश कुमार मार्तण्ड “तंनाज़”
सैंट्रल टाऊन, जालंधर शहर, पंजाब



मुद्रक-
बाला डिज़ाईन एण्ड प्रिंट
माई हीरा गेट, जालंधर, पंजाब

प्रतिया-एक हजार मात्र (1000)
संस्करण-प्रथम आवृत्ति वर्ष 2008
बुद्ध जी शाका संवत- 330



प्राक्कथन



प्राणाधार श्री सुन्दर साथ जी एवं धर्म प्रेमियों! प्रस्तुत ग्रंथ श्री जी साहिब महंमत रूहुल्लाह प्राणनाथ जी का “फ़रमान” विक्रमी संवत् 1737 में श्री जी द्वारा विद्वान भीम जी भाई से फ़ारसी, नागरी लिपि में लिखवाकर औरंगाबाद के राजा भाव सिंह के दरबार में नियुक्त इस्लामी विद्वान शेख़ फत्हुल्लाह, क़ाज़ी हिदायतुल्लाह एवं दीवान अमान ख़ान को भेजा गया। तत्पश्चात बादशाह मुईनद्दीन आलमगीर औरंगज़ेब के दरबार में नियुक्त क़ाज़ी शेख़ इस्लाम, शेख़ रिज़वी खान तथा पठान दौलत ख़ाँ को भेजा गया। ऐसी मान्यता है कि इन पत्रों को पढ़ने के पश्चात बादशाह आलमगीर ने श्री जी साहिब जी से गुप्त रूप में दो बार मुलाकात की एवं उनके ब्रह्मज्ञान से प्रभावित होकर उसने अपना शेष जीवन एक सच्चे धर्मनिष्ठ मुस्लिम के रूप औरंगाबाद में व्यतीत किया।

इन पत्रों द्वारा श्री जी ने क़ुरान पाक के बातिनी भेद धर्मग्रंथ कुल्ज़म स्वरूप वाणी के तारतम ज्ञान की रौशनी में प्रकट किये गये हैं। क्योंकि क़ुरान में वर्णित किस्से, कहानियाँ एक विशेष घटना-काल की और संकेत मात्र हैं। यदि पूर्व के किस्से इस धर्मग्रंथ में लिखवाये गये हैं, तो इसका सिर्फ़ एक अध्यात्मिक महत्व ही है। अन्यथा विचार कीजिए! कि पूर्व के वर्णित किस्से तो अंतिम धर्मग्रंथ के अवतरित होने के पश्चात रद हो गये थे।

अतः हमें निर्मल चित्त से इस धर्मग्रंथ को विचार करके, सत्यता को ग्रहण करना चाहिए। इससे ही धर्मग्रंथ की सार्थकता सिद्ध होती है। श्री जी के द्वारा लिखवाये गये, इन दुर्लभ पत्रों के संशोधन एवं भावार्थ करने की सेवा एडवोकेट श्री नेरश कुमार जी “मार्तण्ड” नशात वहदत जालंधर सुन्दरसाथ ने की है, जो अरबी, फारसी एवं उर्दू में उच्च स्तरीय विद्वान हैं। धाम धनी से प्रार्थना है कि उन पर हमेशा मेहर की वर्षा होती रहे।

आशा है कि श्री जी के पत्रों का यह संकलन सुन्दरसाथ एवं अन्य धर्म-प्रेमी सज्जनों को बहुत ही रूचिकर लगेगा। समस्त पवित्र धर्मग्रंथों के अनुसार अंतिम समय में एक सत्य धर्म की सार्थकता पूर्णरूप से तभी पूर्ण सत्य सिद्ध होगी। जबकि संसार की सम्पूर्ण मानवता में विश्वबंधुत्व एवं सोहार्द की भावना विकसित हो।

आपका

राजन स्वामी

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा

ज़िला सहारनपुर, उत्तर प्रदेश

फोन. 01331-246000

“श्री जी साहिब जी मेहरबान”

भावार्थ- प्राणाधार सुंदरसाथ जी एंव धर्म प्रेमियों! यह पुस्तक श्री जी साहिब महंमत प्राणनाथ जी ने वि०स० 1738, हिजरी सन् 1099 में शेख हिदातुल्लाह, शेख कायमुल्लाह को संबोधित करके भीम जी भाई से फारसी व देवनागरी लिपि में लिखवाई, तत्पश्चात शेखुल इस्लाम, रिजवी खान, दौलत खान पठान को भी भिजवाई, जिससे कि वह धर्म की वास्तकिता को समझ कर सत्य धर्म में सम्मिलित हो सके। एंव मायाजाल के बंधन से मुक्त होकर आत्म साक्षात्कार के पथ पर अग्रसर हो सके।

यथा-

फकीर (श्री जी साहिब महंमत प्राणनाथ जी) पाक कुरान, हदीसो

श्री जी साहिब महंमत प्राणनाथ लिखित वाणी शेख इस्लाम के ऊपर यह किताबत (पत्राचार) संवत 1738 हिजरी सदी ग्यारहवीं (1089) में लिखवाई।

शेख जी. सलामत। फकीर जो हैं, तो कलामुल्लाह और हदीसों रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलैहि व सल्लम की फरमाई का लिखेगा, अंदर के माएने बरहक कहे हैं, सो लेकर ज्यों एक हरूफ इख़िलाफ़ न होय, त्यों हक लिखते भावे राजी न हो, भावे तो दुःख पावे और यह बात तहकीक है, जो कुरान और हदीसों के शाहिदी हरूफ, सो खास उम्मत का जो कोई होयगा, तिनको तो बहुत प्यारे लगेंगे, और इनसे कोई मुनकर होयगा तिनको बुरे लगेंगे। पर किसी आदमी का मुँह रखो और हक को कौन इख़िलाफ़ करो, सो फकीर मैं नहीं। मैं फकीर रसूलिल्लाह का हो और हक बजाय लाऊंगा, फुरमाया पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि व आलैहि व सल्लम का सिर लेऊंगा।

शेख जी, बात है सो बड़ी है, तिस वास्ते में भी बहुतक लिखता हो पर मैं जानो जो आज जमाना ऐसा है, जिन कोई पढ़ते काहिली होय। और ए बात तहकीक है, जो कोई खासी उम्मत का कोई होयगा, सो पढ़ते काहिली (सुस्ती) न करेगा। सो तो एह हरूफ कलामुल्लाह के हरूफ और हदीसों के हरूफ जो कोई काफिर होयगा, सो न पढ़ेगा। हर हरूफ तो मुसलमान को शाहिदी के हैं।

शेख जी, तुम कुरान और हदीसों पढ़ते हो। सब बात जानते हो। चार आलिमों की भी सोहबत (साथ) करते हो। तिन सेती चार सुकन सुनते भी होवेगे। दिन पर दौर बदलता जाता है। सो भी जाहेर देखते हो। किस वास्ते कि कलामुल्लाह

के बातिनी (अन्दरूनी) रहस्य वर्णन करते हैं। अतः जो सच्चा मुस्लिम है उसको यह वाणी अत्यंत मधुर लगेगी। और जो कोई झूठा व्यक्ति होगा, उसको यह वाणी कैसे अच्छी लगे? क्योंकि कर्मकांडी को आत्म-साक्षात्कार किस प्रकार हो सकता है?

हे शेख (धर्मगुरु) जी आपने कुरान पाक, हदीसों को पढ़ा है। जिसका मर्म आप आज तक न समझ सके, कि दसवीं (10) सदी हिजरी में ईसा रूहुल्लाह (देवचंद जी) का अवतरण हो चुका है। एंव उनकी चालीस (40) वर्ष की पातसाही भी हो चुकी है। जिस मिनार पर वह उतरे हैं। वह “तारतम” भी प्रकट हो चुका है।

का और हदीस का फुरमाया हरूफ एक इख़्तिलाफ न होयगा। जो कलाम लिखा है, सो हुआ है, और होता है, और होयगा। और जो कोई मुसलमान है, तिनको ए बात बरहक (पूर्णसत्य) है। जो कोई मुनकर होयगा सो इस बात से शक (संदेह) ल्यावेगा।

शेख जी, हदीसों में ठौर-ठौर जाहिर लिखा है, कि जो हजरत ईसा का उतरना दसमी (10) सदी में है। और कुरान में इसारतों जंजीरों कर ठौर-ठौर लिखा है। सो जो किसी को रूहुल्लाह ईसा की मेहरबानी हुई होय सो अंदर के मायने सेती देख औरों को देखावे, तब जाहिर देखिये। सो हजरत ईसा रूहुल्लाह दसमी (10) सदी में चौथे (4) आसमान से नूर की बदली सेती मशरिक की तरफ नजीक मुनारे (मीनार) बेजा के उतरा, दो (2) जामे पहिने, चालीस (40) वर्ष पातशाही होयेगी। ए सुकन इख़्तिलाफ होने के नहीं।

और दसवी (10) सदी गुजरे तो (91) एकयानवे वर्ष हुए और यहाँ हजरत की मजलिस (धर्म सभा) तुमने देखी तो नहीं। अब कुरान और हदीसों के कौल को तुम क्यों कर जानते हो। जो इन कौलों से तो मुन्किर (अस्वीकृत) होयगा, काफिर (कृतधन) जानो, के ए कौल झूठे हुए। जो कोई रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलैहि व सल्लम की खासी उम्मत का होयगा, तिनको ए कौल बरहक है। जिनके वास्ते हजरत ईसा रूहुल्लाह ले आये किल्ली लाहूत सेती, खोलने मायने कुरान के, पाक इमाम महदी की जुबान सेती। और फिरिश्ता इसराफील गावेगा कुरान को, बजावेगा सूर को। और जिबराईल वकील उम्मत पर वास्ते साफ करने

अतः दसवीं (10) सदी हिजरी गुजरे हुये भी ती सौ सत्तासी (387) वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। फिर क्यों नहीं लोग इसको प्रत्यक्ष देख सके? कुरान पाक व हदीसों की इन बातों को जो कोई असत्य मानेगा, वि ईसा रूहुल्लाह (देवचंद) जी व इमाम महदी (महंमत मेहराज जी) का प्रकटीकरण दसवीं (10) सदी से लेकर बारहवीं (12) सदी हिजरी में हो चुका है। वह वास्तव में असत्य के पथ पर है। व उसकी मुक्ति कठिनातापूर्वक ही होगी।

क्योंकि जो कोई ईसा (श्री देवचंद जी) के प्रकट होने की बात

दिलों के और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलैहि व सल्लम वह अपनी मसनद पर पढ़े कुरान। अर्श इलाही का गंज खर्च करे, अपनी उम्मत पर दीन रहमानी के। एह बातें वास्ते उम्मत हादी के होयगा। वह दीन मोमिनो और एह कौल सब एक मरातब जाहिर होयगे।।

शेख जी, ए कौल तो इस भाँत फुरमाये है। अब इस मजलिस का कोई मुसलमान होवे दीन को अपनी मिसल में दाखिल हुए बगैर नौंद क्यों कर आवे, खाना और पीवना चैन क्यों कर होवे। और इस कौल को तो बरस एकयान्नवे (91) हुए और इस बड़े मिलावे का तो तुमको कोई अजू (अभी) मिला नहीं। और जाहिर (प्रकट) मायने लेते शर्त (वचन) तो कही गई। तो क्यों कर कहिये, जो इस कौल पर ईमान रहया। और इमाम कलाम छिपाता नहीं। जो किसी को ईमान होवे और आप उस खासी उम्मत का होवे, सो घर में बैठे क्यों कर रहवे, रात-दिन दीवाने की तरह ढूँढता फिरे, ठंडा होय न बैठे। या पातशाह या फकीर जो कोई होवे इस मिलावे का तिसकों ईमान का जोश बैठने न देवे। वह शख्स आखिरत की मजलिस वास्ते कुरान और हदीसों के सुकन पूछता फिरे। या आदमी या देव या पढ़ा या उम्मी या भला या बुरा या स्याना या दीवाना या हिंदू या मुसलमान, या हर कोई सबके पास कुरान और हदीसों की बातें आखिरत की पूछता फिरे। ईमान का जोश ऐसा है जो दानाई और बुजरकी ले न बैठते, तुम भी ठौर-ठौर और घर-घर पूछते फिरते, सो पूछा तो पीछा रहया, पर जो कोई यह बात पूछता सुनता होवे, सामी जो कोई तिनकी राह मारे, तो तिन को तुम क्या करार देते हो, ईमान के या कुफर। यह बात भली तरह दिल से

सुनकर खाना-पीना एवं निद्रा करेगा, अर्थात् सत्यता से मुँह फेरेगा वह व्यक्ति अपने रास्ते में स्वयं ही बाधाएँ उत्पन्न करता है।

ईमान)(विश्वास की निशानी इलम (ब्रह्मज्ञान) है। जो ब्रह्मसृष्टियाँ हैं, वह दिन-रात अपने प्रियतम को देवचंद जी की तरह ढूँढ़कर आत्म-साक्षात्कार करेंगी। अतः जो व्यक्ति अपने ज्ञान-चातुर्य में मगन रहेगा, तो उसकी मुक्ति किस प्रकार होगी?

हे धर्मगुरु जी! यदि आप हमारे हिंदु तन में अवतरित होने पर संदेहग्रस्त हैं। तो फिर कुरान के अनुसार कैसे हकीकत (सत्यता) की पहचान करोगे? कैसे अपनी ब्रह्मात्मा, देवताओं की पहचान करोगे?

विचार कर देखियों?

शेख जी, दानाई (चतुरता) जो ऊपर की दिखावते हो वास्ते अपनी बुजरकी के, सो दुनिया की तरफ काम आवती है, पर आखिरत को वह कुफर होवे, दोज़ख को खँचेगी। यह दानाई और यह बुजरकी खुदा की तरफ न पहुँचेगी और कोई कहेगा के हिंदू के खिलके (वेष), वास्ते यह बात न सुनिये। यह बात कुरान में या हदीसों में कहां तहकीक है। जिन कौल सेती इश्क पैदा होय अल्लाह और अल्लाह के रसूल पर। और जिन सेती इश्क पहुँचा हो या कुरान और हदीसों पर। जिस सेती इश्क पैदा होय नूर और नूरतजल्ला पर। जिस सेती इश्क पैदा होय जबरू त और लाहूत पर। जिससे तो पहचान होवे हकीकत मारिफत की जिन सेती पहचान होवे भिस्त हमेशगी की और भिस्तों की। जिस सेती पहचान होवे रूह की, जो बीच दरगाह खुदा की मों। जिस सेती पहचान होवे फिरश्ते नजीकियों की जो बीच दरगाह खुदा की मों। जिस सेती पहचान होवे फिरश्ते नजीकियों की जिस सेती पहचान होवें मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम की, और खासी उम्मत की, जो उतरे हैं मोमिन नूर बिलंद से, जिन सेती पहचान होवे आखिरत और क़ियामत की।। जिस सेती इश्क पैदा होवे हज़रत ईसा पर जिस सेती इश्क पैदा होवे पाक इमाम महदी साहिब पर जिन सेती इश्क पैदा होवें अम्नाफ़ील और रूहुलअमीन ज़िबराईल पर।। जिन सेती जोश आवे इस मिलावे का और दीदार पावे इस मिलावे का, कुरान की तिलावत से।।

शेख जी, यह किस ठौर मुकर्रर किया है, तुमने जो एह सुकन न सुनये खिलके

किस प्रकार जिब्रील (जोश), इस्राफील (बुद्धि) को जानोगे। कैसे परब्रह्म के अनन्य इश्क़ प्रेम को जानोगे। क्योंकि आज तक सभी पैगंबर (अवतार) यहूदियों (हिंदूओं) में ही अवतरित हुए हैं। तत्पश्चात् उन्होंने अपना भिन्न संप्रदाय बनाया है। यदि आप ईसा के अवतरण व इमाम महदी साहिब (श्री जी) के ज्ञान की सत्यता नहीं समझे, तो फिर कैसे मुहम्मदी धर्म के अनुयायी होने का दावा करते हैं। क्योंकि रसूल ख़ुदा ने तो कुरान-हदीसों में स्पष्ट कहा है कि ईसा रूहुल्लाह दसवीं (10) सदी में प्रकट होंगे। इनके मुँह पर पर्दा (आवरण) जो कहा है तो वह तन का

फकीरी हिंदुओं सेती। जिन की सोहोबत सेती कुफर पैदा होवे एह बात सुननी रवा (उचित) नहीं। पर जिन सेती दीन मुहम्मद के ऊपर इमान और इश्क़ पैदा होवे, सो कौन मुसलमान कहता है जो रवा नहीं।

हनोज लो (अभी तक) जेता कोई पैगंबर या रसूल पैदा हुए हैं सो सब जहूदों के सेती हुए हैं। और अब जो कोई जाहिर होयगा, सो जानते हो किस खिलके सेती जाहेर होयगा? जो तुमारे खिलके सेती पैदा हुए होते, तो एकयानवे (91) बरस तुम सेती छिपे न रहते। जो कदी तुमने उस मजलिस का दीदार न पाया, तो क्या हज़रत ईसा और इमाम न आए? ए फुरमाया हक का और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का झूठा करोंगे। एह कौल झूठे होने के नहीं। कौल कुरान के और हदीसों के बरहक है। और हज़रत ईसा आये अपनी मजलिस समेत। जो लिखा है जिस भाँत हमेशा ज्यों आवते हैं पैगंबर जहूदों से या नसारों से, त्यों आये जहूदों सेती, वास्ते उम्मत रसूल सल्लल्लाहि अलैहि व आलैहि व सल्लम के।। और कुफर तोड़ेगे दोनो जहान का। और सबको एक दीन करेंगा महदी, जहाँ आखिरी इमाम की सिफत लिखी है, तहाँ उम्मी (अंपढ़) लिखे है और जुबान अटकती लिखी है। सो क्या दुनिया की न्यात (भाँति) तोंतले हैं और जहाँ रसूल साहेब की सिफत लिखी है, तहाँ भी उम्मी लिखे है। और मुँह पर बुरका (पर्दा) लिखा है सो क्या कपड़ा मुँह पर डाल बैठते हैं। और मुँह पर बदली लिखी है। सो तो झूठी बदली तो नहीं, ओ तो नूर की बदली लिखी है। इस भाँत बहुत इसारतें लिखियाँ हैं। बड़ा सुकन जेता कोई लिखा है, सो सारा अंदर के मायने इसारत सेती लिखा है।। तिस वास्ते दिल के दीदों

आवरण है। आप इमाम (धर्मनेता धर्मगुरु) तो पैगंबर (ईशदूत) की तरह ही अंपद है। जो इनकी बातों पर विश्वास करेगा, वही नूरे इलाही (परब्रह्म की दिव्य आभा) का दर्शन कर सकेगा। अतः आप हृदय की आँखों को खोलकर सत्य को पहचानो, इमाम महदी, रूहुल्लाह (श्री जी साहिब महंमत प्राणनाथ जी) के बताए सत्य मार्ग पर अग्रसर होकर सच्चा मुस्लिम बनकर हक़ हादी (सत्य सदगुरु) की प्राप्ति करके जीवन अपना धन्य-धन्य कर लीजिए।

ए शेख जी! खुदा तआला (परब्रह्म स्वामी) ने कुरान में वर्णन

(द्रष्टि) खोलकर अंदर के मायने सेती देखोगे, जब पहचान होयगी। और दीदार भी पाओगे।

शेख जी! ए कलामुल्लाह और हदीसों जो कहूँ अच्छे ठौर पढ़ते, तो ऊपर का मायना ना लेते।। और जो कदी खुदा का फरमाया करते तो फकीरों के खिलके सामी (सामने) न देखते, दिल के सामने देखते।। खुदा तआला ने फरमाया है, जो मेरी नजर दिलों पर है वजूदों (तनों) पर नहीं। कलामुल्लाह और हदीसों के नूर के सुकन खुदा के गंज खुले थे। तुम तिन सामने देखते। दो दिन हमारी सोहोबत करते। हमारे दिलों के ईमान की पहचान करते और हमारी मजलिस की पहचान करते। तब देखते के जो ए हुकम बजाय ल्याये हैं, के नहीं ल्वाये हैं, और कदी तुम ऐता भी न कर सके, तो तुमारे मुसलमान जो हमारी सोहोबत करते थे, तिनों के पास हमारी हकीकत लेनी थी। और जो कदी तुम उनों को उम्मी पर समझे तों मियां जॉन मुहम्मद उम्मी न था। चार सुकन पढ़ा था बूढ़ा था, लड़का न था। स्याना था। दीवाना न था। तुमारा अजीज़ (प्रिय) था। तुम्हारा दुश्मन न था। तुम इनसे मजलिस करते थे। मजलिस करने भेजा था। जो तुम स्याने होते, तो तुम इनकों दिल दे पूछते। साँच और झूठ स्याने के आगे छिपा नहीं रहता। जो यह बात हमारी इख़्तिलाफ देखते तो तुम काजी शरः या दीवान कों या हाकिम को सुनवाते। और स्याने थे और हम भी जाहेर बैठे थे। जो आये साँच-झूठ करते, और तुम न्यात (रहस्य) बगैर समझे दीन की राह न मारते।

शेख जी! तुमने बगैर समझे दीन मुहम्मद सल्लल्लाहू अलैहि व आलैहि

किया है कि मेरी द्रष्टि मिथ्या तनों पर नहीं, हृदयों पर है। यदि आप हमारी मजलिस (धर्मगोष्ठी) में आकर सत्यता का दर्शन करते, तो आपको भी ज्ञात होता, कि वास्तविक धर्म क्या है। यदि आप एक अंपढ़ फ़कीर के साथ मुस्लिमों के चलने के कारण कोधित हैं तो जान मुहम्मद तो अंपढ़ नहीं था? युवक नहीं वृद्ध था। दीवाना नहीं ज्ञानी था। आपका (शत्रु) दुश्मन नहीं मित्र था। आप इनसे गोष्ठी वार्तालाप करते थे। आपने हमसे वार्ता करने का भेजा था, तो क्यों वह हमारे निर्देशों के अनुसार चलने को तत्पर हुआ? अतः प्रत्यक्ष सत्यता को देख-समझ करके ही आप आरोप-

व सल्लम क़ी राह मारी है ॥ यह बड़ा जुल्म किया है ॥ तुमकों ए न चाहिए ॥ अपनी दुनिया की बुजरकी वास्ते एता कुफर सिर लिया ॥ सो अब छिपने का नहीं। जो यह बात हमने अल्लाह और अल्लाह के रसूल के फुरमाये सेती इख़िलाफ बोले होयेंगे। तो यह कुफर छिपा न रहेगा। तुमारी हाँसी होगी। और जो हम दोनों फरमाये बरहक कर बजाय ल्याये होयेंगे। कुरान और हदीसों माफिक बोलते होंयेंगे, तो तहकीक जानियों के तुमारा कुफर चारो खूँटों में जाहेर होयगा।

शेख जी, यह कुफर तुमने कुछ छोटा नहीं किया जो छिपा रहे। या गरीब या पातशाह तमाम मुसलमानों में सब ठौरों जाहिर होयगा। तुमों नो बगैर समझे अपनी बुजरकी दुनिया को दिखावने वास्ते करी। तिन किल्ली सेत दोजख के दरवाजे का कलफ खुल्या है। अब थोड़े दिनों में अपनी नजरों देखेंगे। यह तो खुदा तआला की बड़ी मेहरबानी, हजरत ईसा रूहुल्लाह ल्याये है। जिन मेहेरबानी के चार सुकन। और भी केतिक भाँत की मेहरबानी रसूल साहेब के हुकम सेती हमारे पास आई है। सो हमों ने जान्या के चार मुसलमान भले होवे। तिनसे, वो पढ़े, साफ दिल होवें। तिन से सोहोबत, करके यह मेहरबानगी के चार सुकन, और भाँत की भी जो कोई मेहरबानी है, सो सब पढ़ों, के आगे मजकूर करें। भली तरह सुकन जो कोई मेहरबानी है, सो वह समझे पीछे। पढ़ें काजी और दीवान या हाकिम से मिलेंगे। तब यह खुदा तआला की मेहरबानी सारे शहर में फैलेगी। तहाँ सेती बड़े ठौरों शर:तौर:कों पहुँचेगी। तिन मेहरबानी सेती सब ठोरों का अक्स होता है सो सब मिट जायगा। तिस पीछे सब दोनों जहान में या फकीर या पातशाह सबको पहुँचेगी। दीन

प्रत्यारोप करते। परन्तु शेख जी आपने बिना देखे-सुने ही हम पर असत्य आरोप लगाकर एक सत्य धर्म की राह में अड़चन उत्पन्न की है। तो परब्रह्म स्वामी इसका दण्ड भी आपको निःसंदेह देंगे। अब सभी मनुष्यों के एक ही सत्य धर्म में दीक्षित होने का समय निकट आ रहा है। जिससे सभी ईसा रूहुल्लाह (देवचंद जी) इमाम महदी (श्री जी साहिब) के वास्तविक स्वरूप को पहचान करके, परब्रह्म प्रियतम की कृपाओं को प्रत्यक्ष देखकर आनन्दित होंगे। प्रत्येक नगर-नगर, गाँव-गाँव में यह ब्रह्मज्ञान का आभा मण्डल पल-पल प्रतिदिन वृद्धि करेगा। आइये! आप

महदी की राह खुली थी।

शेख जी, सो राह तुमों ने मारी है। तिस वास्ते खुदा तआला की सब पर उस्तरी है, सो तो किसकी रखी न रहेगी। पर जो जैसा वजूद होता है, खुदा तआला तिनकों तैसी बुजरकी देता है। साफ दिलों को ईमान, स्याह दिलों को कुफर।। सिपारा दस (10) सूरत तौबा मों लिखा हैं- वलो करेहल काफिर न- कराहत रखते हैं काफिर ईमान से। कराहत इनों को बुरा नहीं याने बदी नहीं। के बुलावनी राह रास्ती की, सबाब ने कोई ख्वाहिश दीवानगी खसलत इनों की फेर मयस्सर है न होना आफ़ताब का।

बैत।। “हया चाहे के आफ़ताब न होवे तो खूब है। तो देखूँ उनों की आँखे मुरजबूम हाथ कुदरत के हर जगह चिराग रोशनी होवे, जो अंधली चमगादर होवे हो, वल्लसी असल वह खुदा का भेजा रसूल है, पैग़बर अपने के ताँई बिल्हुदा एक चीज के सब बरहनुमाई की याने कुरान वदीनिल्हक के, दीन रास्ते के मिल्लत गिरोह नपाकी लेयुल्हिरस तो गालिब, करे इस दीन के ताँई अलदीने कुल्लसे ही, सब दीन के ऊपर और मजहब बाखू नाजिल होने ईसा अलैहिस्सलाम के, तमाम आलमीन दीन इस्लाम कबूल करे “वलोकरेहलू मुशिरकून ” जितने एक शिर्क करने वाले जाहेर दीन मुहम्मद अलैहिस्सलाम के जो कोई खबरदार और कबूल करने वाले जाहेर दीन मुहम्मद अलैहिस्सलाम के और कबूल करने वाले हैं साबूती तौहिदी की, वह झूठ शिर्क।।

शेख जी हमको एक बड़ा अचंभा होता है जो तुम कुरान या हदीस पढ़ते हो पर एक हरूफ का मायना नहीं जानते हो। आप बुजरक उलमा कहावते हो सो क्या? सिपार

भी इस धर्मगोष्ठी में सादर आमंत्रित है, जिससे कि स्वयं आकर अपने संदेह दूर कर लीजिए। अन्यथा तो कुरान पाक में लिखा ही है कि ईसा, महदी (श्री जी साहिब) के अलौकिक ब्रह्मज्ञान के कारण विद्वान उनसे सहयोग न करेंगे, हे धर्मगुरु जी हमें अत्यंत हैरानी है, कि आप विद्वान तो हैं परन्तु बातिनी रहस्य कुरान-हदीसों के नहीं जानते हो। क्यों कि कुरान पाक के किस्से एक सूत्र में रखकर ही रहस्य समझे जा सकते हैं, अन्यथा भेद नहीं समझ आ सकते हैं। चाहे अपनी कितनी भी बुद्धि चातुर्य लगाये जाए। यह इलाही (ब्रह्म) वाणी का धन ब्रह्मसृष्टियों व देवगणों के कारण

नौवां (9) में लिखा है कुरान के मायने हैं सो जंजीर मोतियो में पिरोहनी है। इसका मायना क्या? याने हरूफ-हरूफ का जुदा मायना। और जंजीर की न्यात का एक दूजी सों लगाय बातें करी है। सो वह जंजीर की कड़ी की कड़ी से पहचान हुई होवे, तब मिसल की मिसल कड़ी-लगाय देखे। अगली से पिछली या पिछली से अगली मिसल पहचान के लगावे, तब जाय मायना खुले।। और ऊपर का मायना ले सीधा चला जाय, मिसल की कड़ी मिसल कों न लगावे, तब तो मायना कहू का कहू होवें।। और तब तो ठौर-ठौर कहाँ है, के मायने कुरान के इसारतों हैं और अंदर के दिलो पर है।

शेख जी, कुरान है सो कलामुल्लाह के हैं। और हदीस जो है सो हुकम रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम के हैं। इसकी पहचान तुमको नहीं। तुमकों आप अपनी पहचान नहीं, तो इन कौलों को क्यों कर पहचानोगे? लाख बेर पढ़ो और लाख बेर अपनी दानाईयाँ दौड़ाओ, तो भी इनों के एक हरूफ की पहचान न होवे।? इन हरूफों सों पढ़ें का और दानाई का बल नहीं चलता।। और ए जो गिरोह दो कही है, आखिरत को, एक फिरस्तों की। दूसरी रूहों की खासी उम्मत। जिनके वास्ते कुरान और हदीसे आईयाँ हैं। सब हरूफ सो समझेंगे, पढ़या बगैर पढ़े। मायना भी करेंगे। इस कलाम को मोमिन और मुत्तकी बगैर कोई नहीं समझे, या आलिम या आरिफ नाम धाराओ, पर इनमें दाखिल कोई कर न सके।

पढ़े तो ऐसा मायना करते हैं और कहते हैं, के कुरान में किस्सा है, सो पहले हो गये हैं। एता भी विचारते नहीं, जो ए आखिरी किताब है। और आखिरी

ही अवतरित हुआ है।

कुरान पाक के किस्से पूर्व में घटित नहीं हो चुके हैं, बल्कि यह भविष्य के संकेतो का वर्णन है। क्योंकि पूर्व के रद जमाने का वर्णन आखिरी पैगंबर सल्ल० क्यो लेकर आयेगे विचारिए? यह पूर्व निर्धारित है कि पैगंबर सल्ल० अपनी किताब के भेद आप पढ़कर खोलेंगे। इसी लिए शरा (नियम) का भेद तोरा (अध्यात्म) में समाहित है।

मौलवी कमालुद्दीन हुसैन वाइज काशिफी (भविष्यवक्ता) ने तफ़सीरे मवाहिब आलियः में कुरान पाक के सोलहवें (16) पारा के

पैगम्बर लियाया है। यामें हकीकत सारी आखिरत पर हैं। सो सब उम्मत के मकसद (उद्देशित) का है। सो सब होनियाँ है। बगैर मकसद का एक हरूफ नहीं। सो सब होनियाँ है। सो मजकूर ज्यों मकसद क्या है, सो तुम कहते हो, जो अगले जमाने हो गये है। जो कुरान ने अगला जमाना रद किया है, सो तुम उम्मियो कलामुल्लाह का मजकूर अगले जमाने हो गये, यह कहते हो।।

शेख जी तुम मायना ऐसा लेते हो। तिस मायनो सेती जो फरमाया है वास्ते मकसद के सो सब रद होता है। तुम एता भी नहीं समझे हो जो अगले रद जमाने की मजकूर आखिरी फिरकान में, आखिरी पैगम्बर क्यों कर ल्यावेंगा। पर तुम पढ़ें क्या करो।। ए आयते सूरतें हदीसों सब इशारतों में लिखियाँ है। सो जिनके वास्ते आइयाँ है सोई उम्मत समझे। सो उम्मत खोलें और इनों सेती सब ठौरों पहुँचे। पर और पढ़े किसका दखल इनमें होने पावे नहीं।

शेख जी, ए फिरकान और हदीसों में सब फरमाया है। पैदा हुआ अब जो है, और होयगा। रसूल साहेब आखिर अपनी उम्मत में उठ खड़े होयेगे। अपनी किताब को आप पढ़ेंगे। मायने अब खुलेंगे। शरा (न्याय) अब होयगा हनोज तोड़ी (अब तक) हुआ नहीं। किस वास्ते जब तोड़ी (तक) रसूल साहेब अपने मुकाम पहुँचे के दो गवाही शरः को न देवें तब तोड़ी शरा कबूल न करे।। और जिस मुकाम रसूल साहेब पहुँचे तिस मुकाम की शाहिदी दूसरा कौन देवें।। तिस वास्ते शरा हुआ नहीं ए थोड़ी सी इसारत सिपारा सतरहवां (17) में लिखा है। और ठौर भी लिखा है। पारः सोलहवां (16) सूरत मरियम में लिखा है। के कहा रसूल साहेब ने मेरी

सूर: मरियम में वर्णित है कि मुहम्मद साहेब की तीन सूरते हैं। यथा-

1. मुहम्मद मुस्तुफा रसूलुल्लाह सल्ल० (महंमद साहिब)

2. मुहम्मद ईसा रूहुल्लाह (देवचंद जी)

3. मुहम्मद महदी साहिबुज्जमाँ (मेराज जी)

कुरान पाक के अठ्ठारवें (18) पार: में वर्णित है कि ईसा चौथे (4) आसमान से उतरकर दो (2) जामे हरा हुल्ला सफेद गुदरी पहनेगा, तथा चालीस (40) वर्ष तक संसार में रहेंगे, उनका शादी (विवाह) बच्चे होंगे तथा लैल-तुल कद्र के भेद समझायेंगे। कियामत के सातों बड़े निशान

जहाँ तीन सूरतें खुदा के नजीक पहुँची है। तहाँ और कोई नहीं पहुँचा तिनमें एक सूरत अपनी आप फिरकान को पढ़ेंगे। और मायना खोलेंगे। शरा करेंगे। अपनी उम्मत में। जब दूजी दो सूरते अपनी कही, सो रसूल साहेब के मुकाम पहुँचे की शाहिदी देंगे। और अपनी खासी उम्मत भी उस मुकाम पहुँचेगी शाहिदी देंगे। और बरहक करेगी। तब दोनों जहान कों रसूल साहेब पर यकीन आवेगा। तब एक दीन होयगा।

शेख जी, इन कलामुल्लाह और हदीसों कों तुम पढ़कर मायना करते हो। त्यों नहीं। इन मों लिखा है, सो सब हुआ है, और होना है, सो अब जाहिर होयगा। एक दौर, या सदी, या बरस, या महीना, या रोज़। या घड़ी, ऐ सब लिखा है। सो क्या इस भाँति होयगी, इस भाँति आप काजी हो बैठेंगे?

सिपारा अठ्ठारहवां (18) बरक एक सौ सतरह (117) कद अफलहल्मो मिनून सूर: नूर (24) पकद काज बोकुम इस भाँति रसूल साहेब शामिल होयगें। इस भाँति हजरत ईसा चौथे (4) आसमान से नूर की बदली सेती उतरेगा। इस भाँति दो (2) जामे पहेनेगा। इस भाँति पाक इमाम महदी होयगा। इस भाँति फिरस्ता जिब्राईल गिरोह पर वकील होयगा इस भाँति इसराफील कुरान कों गावेंगा। दो सूर फूँकेगा। इस भाँति ज्यों की सफ़े खड़ी होंगी। इस भाँति फिरिश्तों की सफ़े खड़ी होंगी। इस भाँति बहत्तर (72) जाहिर फिरके अपना किया देखेंगे। पीछे मेहरबानगी से साफ होंगे। इस भाँति बड़े निशान सेती होयगे इस भाँति दाब तुल अर्ज होयगा। इस भाँति सूरज मगरिब (पश्चिम) की तरफ उगेगा। इस भाँति

(1) दाब तुल अर्ज (विशाल दानव) (2) याजूज-माजूज का प्रकटीकरण (3) सूरज का पश्चिम से उदय, (4) इमाम महदी का प्रकट होना, (5) अस्माफील का सूरः फूँकना, (6) काना दज्जाल का प्रकट होना, (7) ईसा रूहुल्ला (देवचंद जी) इल्में लहुन्नी (ताततम) लाने का पूर्ण होना, दसवीं (10) सदी से 12वीं सदी तक है।

ईसा (देवचंद जी) के दो बेटो (बिहारी जी, मेराज जी) का आपस में धर्म संघर्ष होगा। नजरी (धर्मपुत्र श्री मेराज जी) पुत्र के हाथ में निजानंद संप्रदाय की कुल संपंदा है। कुरान पाक में लिखा है। कि कुरान

याजूज-माजूज / रात-दिन की चार लाख क्रौम होयगी। इस भाँति इनके तीन लश्कर होंयगे।। तिनके नाम तूला, ताबा, साबा (प्रातः अपरांह सांय)। इस भाँत तीन रात दिन होंयगे। इस भाँत लैल तुल कद्र के तीन तकरार होयगे।। इस भाँत दुनिया सात हजार (7000) बरस रहेगी।। ए सब आखिरत को हकीकत लिखी है। सो सब एक मरातबे जाहेर होंयगे। ए बातें आखिरी पैंगम्बर फिरकान से करेगा।। जिन फिरकान की मजकूर तुम कहते हो के वे पहले होई गइयाँ।। ऐ सब अब जाहेर होंयगी।। तुम अपनी नजरों देखोंगे।।

सिपारा नौवां (9) मों इसारत सेती मजकूर है। ज्यों हज़रत ईसा दसमी सदी मों आया। तिनकी पैंगम्बरी वास्ते दो पैंगम्बर जादे लड़ते है। दोनों के साथ गिरोह है। एक पैंगम्बरजादे ने कौल रद किया। और एक पैंगम्बरजादे ने कौल बरहक किया है। नेक गिरोह बंदगी सेती इनके साथ है। तिन पर खुदा तआला ने भेजा तिन पर रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम, और किताब तौरैत।। तिन किताबों को और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलैहि व सल्लम को उन मुनकरों ने न माना।। तब रसूल साहेब ने उस गिरोह को डाला।।

अब जो एह किस्से जाहेर लिखे हैं कुरान में सो तुम जानते हो जो पहले हो गये।। और ए बातें सब अब होंयगी। ए पैंगम्बरजादो का झगड़ा शरः तौरः अब आना है। एक पैंगम्बरजादों का झगड़ा और दुनिया की न्यात न चुके।। उनका झगड़ा तब चुके जब कुरान की इसारते खुलें। किस वास्ते के कुरान के खुलने की किल्ली उनके हाथ है। बरकत हज़रत ईसा के सेती, इनका झगड़ा चुकते, दोनों जहान आपे

के मायने ऊपर की नज़र से नहीं मिलते हैं। क्योंकि कुरान पाक का कहना है कि विद्वानों की विद्वता से अर्थ का नर्थ हो जाता है। अतः ब्रह्मविद्या तारतम ज्ञान के बिना कुरान के रहस्य समझ नहीं आते हैं।

हे शेख जी कुरान के तीसवें (30) पारः अम्म में वर्णित है कि उम्मते मुहम्मदी को दस (10) तरह की दोजख का सामना करना होगा। आप कहिए इसका मायना जाहिरी है कि बातिनी? निःसंदेह बातिनी है क्योंकि मोमिन को नर्क की अग्नि नहीं जला सकती है। अतः आप सच जानिये के कुरान पाक के मायने बातिनी भेद समझने से है। जाहिरी अर्थ

राजी होय के दीन मुहम्मद का कबूल करेंगे। एक इसारतां खुले सेती सबों का दिल साफ होयगा। किसी को जोरावरी करनी न पड़ेगी। इन सबकों कुरान साफ करेगा।

शेख जी, तुम कुरान पढ़कर ऐसा मायना लेते हो जो किस्से हो गये।। खुदा तआला के फरमाये को रद करते हो।। ए फिरकान के मायने अब खुलेंगे। तुम आप नजर से देखेंगे। हनोज तोडी (आज तक) कुरान के मायने खुले नहीं। सिपारा अट्ठारहवां (18) मों लिखा है। के तब ताँई कुरान किस्से पढ़ा नहीं। जब ताँई अंदर के मायनों को नहीं पहुँचा। जब अंदर के मगज कों पहुँचेगा। तब कुरान की खबर होयगी ये क्यों भेजा। किस वास्ते।। किस वास्ते ए जो ऊपर का मायना ले आप अपनी दानाई के घोड़े दौड़ावते हो, सो इस मायनों को क्यों कर पहुँचेगे?

शेख जी, कुरान पढ़ते हो और इतना भी दिल में विचार नहीं करते हो, जो हम बगैर फरमाये ऊपर का मायना लेते हैं तिनकी बात खुदा तआला ने रवा नहीं करी।। ऊपर का मायना कौन लेवे-देवे शैतान।। और लिखा है के ऊपर के मायने लेने वालों ऊपर कुरान नहीं आया है। ऐसा कलामुल्लाह में सख्त सुकन लिखा है, तो भी तुम ऊपर का मायना नहीं छोड़ते हो।। सो क्या।। सिपारा आठवां (8) मों लिखा है के ऊपर का मायना अजाजील (विष्णु देवता, रोज़ी, रोटी का) लिया है। जो ऐसे बुजरक फिरस्ते कों ऊपर का मायना लिये वास्ते लानत का तौँक (दुत्कार) गले में पड़ा। तिन अजाजील की अरवाह इब्लीस (नारद मुनि) नाम धरा। ए सब बनी आदम के दिल बीच शैतान है। दुश्मनाई सेती राह मारता है। ऊपर के मायने ले

लगाने से भेद समझ नहीं आ सकते हैं।

हे शेख जी! ग्यारवीं (11) सदी हिजरी कब की पूर्ण होकर अभी चौदहवीं सदी हिजरी व्यतीत होने लगी है तो क्या खुदा तआला (परब्रह्म स्वामी) ने अपने वचन अनुसार ईसा व महदी (श्री जी) को नहीं भेजा? कुरान पाक के अनुसार शरा का न्याय करने का अधिकार आखिरी पैगंबर सल्ल० को भी नहीं है। तो फिर हमारी व आपकी क्या हैसियत है। कि हम न्यायाधीश बनकर सही न्याय कर सकते हैं?

दूसरी बात यह है कि आप खुदा (परब्रह्म) के आदेश से शरा तो पालन कर रहे हैं। परन्तु क्या हम अपने क्रोध पर नियंत्रण कर पाये हैं?

तिनकों जो दिल पर पातशाही दुश्मन शैतान करता है। इस भाँत ठौर-ठौर लिखा है, तो भी तुम ऊपर का मायना नहीं छोड़ते हो। और अरिफ नाम धरावते हो। और इतना भी नहीं विचारते हो के हक़ फुरमाया चलते हो के बगैर फुरमाया चलते हैं और आप उलमा नाम धराय के औरों को समझावने बैठते हो।। और तिनको भी उल्टा डालते हो।। ऐ आखिरत को तुमारा क्या हाल होयगा।। और तुम्हारे वे भी दामनगीर होयगे। पर ए तुम क्या करो।। ए सब तुमारा दुश्मन करता है और सब खुदा तआला का फरमाया होता है, सिपारा छठा (6) मों लिखा है खुदा तआला फुरमावता है के मैं उलमाओं के दिलों पर कलफ (स्याही) दिया है और आँखों और कानों पर। एह अजाब बड़ा लिखा है। इस भाँत बहुत ठौर लिखा है, सो में केता लिखों।।

शेख जी, ए सख्त सुकन (वचन) मैं लिखता हों सो सब तुम्हारी भलाई के वास्ते लिखता हो। पर ए भी जो तुम ऊपर का मायना लेवोगे तो ए लिखा तुमको दुश्मन होय लगेगा। और शेख जी तुम उल्माव (विद्वान) होकर उम्मी दुनिया को ऐसा ऊपर का मायना समझावते हो। और सरीखी तुम उम्मेद बड़ी दरगाह की रखते हो, जो हम उम्मत खासी मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि व आलैहि व सल्लम की है। तिस वास्ते सिपारा तीसवाँ (30) मों सूरत अमेत सालून मों लिखा है, जो रसूल साहेब ने कहा है के मेरी उम्मत को दस (10) भाँत की दोजख होयगी।। अब तुम दिल से विचार देखो के उम्मत खासी बीच दरगाह के कही। ए दोजख तिनकों लिखी है, के ऊपर मायना लेते हैं। जिनकों लिखी है।। कुरान के कायम खड़े हो। अंदर के मायने पर सिदक नहीं।। ए सब वही दुश्मन करावता है।। और जमाना भी उसी

सोचिए! क्या हम आपसी ईर्ष्या, द्वेष, निन्दा, चुगली, बुराई से मुक्त हो पाये हैं। विचारिये फिर विद्वता का ऐसा दिखावा करने से क्या उद्देश्य प्राप्त होगा?

ऐ विद्वानो! विचारिए कि रसूल साहिब खुदा से मिलकर वार्तालाप करके आए। परन्तु हम कहते हैं कि खुदा (परब्रह्म) निराकार, निरंजन, शुन्य, निर्गुण है। तब क्या हम मोमिन (ब्रह्मसृष्टि) कहलाने के योग्य हैं? तो फिर मेअराज में किसका दीदार मुहम्मद सल्ल० ने किया?

यदि हम मायावी (संसारिक) कार्यों को प्रमुखता देकर धार्मिक गोष्ठी करने में किंचित भी विलंब करते हैं। तो क्या हम सच्चे विद्वान

दुश्मन का आया है, तिस वास्ते जमाने को भी तो देखो तो अंदर का मायना देखो। जो अंदर का मायना लेओ और जो अंदर का मायना ले तुम देखोगे तो आए जाहिर हुए देखोगे।।

शेख जी, ए ग्यारवीं (11) सदी जाती है। बाकी नौ (9) बरस रहे हैं। गंज सुब्हान तआला की रोशनाई के आखिरत की सब वात मेहरबानी के वास्ते खासी उम्मत के। इसी नौ (9) बरस के बीच जाहिर होनी हजरत रूहुल्लाह ईसा की, और हजरत ईसा के दो जामे की, और पाक इमाम महदी की, या आखिरी रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलैहि व सल्लम की। सिपारा नौवां (9) मों जिनके सिर पर चोटी कही है। तिनको।। और खासी उम्मत की। और जिब्राईल उम्मत के सफ किये की। और कुरान और हदीसों के अंदर के मायनों की। इनकी सब रोशनाई की। और नूर जाहिर होना है इस नौ (9) बरस के बीच।। इस मजलिस के और इस वक्त के बदले की बेशुमार सिफत है। सो इस कागद में केती लिखों। ए सब हनोज तोड़ी (अब तक) तुमसे छिपी रही हैं सो सब जाहिर होती हैं। तुम भी कहते हो के जाहिर होना बरहक है।

यह इसारत (संकेत) सिपारा सोलहवां (16) मों लिखा हैं। जब रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलैहि व सल्लम आए तब शरःका हुक्म करने बैठे। खुदा का हुक्म आया के, तुम मत करो, जब तोड़ी के वह आवे।। तो इल्म ज्यादा सीखो। जंब मायने खोलो। तब शरा का हुक्म करो। तब रसूल साहेब ने ज्यादा इल्म तलब किया खुदा तआला सेती। आखिरत को हजरत मूसा ने ज्यादा इल्म किया, तब

कहलाने के अधिकारी है? यदि आप विद्वतगण धर्म का मार्ग अवरूद्ध करोगे तो न्याय के दिन किस मुँह से परब्रह्म का साक्षात्कार कर पाएंगे? इस माया प्रपंच के अन्दर केवल इबलीस नामक राक्षस लोगो को धर्म कर्म की राह से भटकाता है। परन्तु ब्रह्मसृष्टि इसके आधीन नहीं हो पाती क्योंकि उनके साथ परब्रह्म है।

हे शेख जी! आप कहते हैं कि कुरान पाक हमारा है परन्तु एक भी अक्षर का बातूनी भेद नहीं जानते हो। तब आपके इस अधिकार का क्या औचित्य है? यदि आपके लिए ही यह कुरान पाक अवतरित हुआ है। तो

हजरत मूसा को खुदा तआला ने रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम के तारीबी (अधीन) किया।।

शेख जी, सो मायने खोलने का इल्म आखिरत कों मूसा के साथ जो ताबें रसूल साहेब के हुआ कहा था, सो अब आया। एह उम्मत खासी का और मजलिस शरा का कौल अव्वल का था, सो सुख का दिन आया। और बरकत इनों के जो कोई साफ दिल है तिनों की शादी का दिन आया। और दोनों जहान का दोजखी अंजाम देखकर आखिर साफ होयगें। आखिर एक दीन होने का।। एह सबका मजकूर है। नौ (9) दस (10) बरस के दरम्यान होना है।

शेख जी, इस मजलिस की रोशनाई की मजकूर किनों ने थोड़ी सी खुदा के हुक्म सेती पाई होवे। तो इस मुसलमान साफ दिल अपना दोस्त इस मजलिस का जाने, तो तिसके आगे ए मजकूर करे कें ना करें, तुम इस मजलिस में आपको गिनते हो, दीनों (धर्मों) में भी आप बुजरक आरिफ (ब्रह्मज्ञानी) कहावते हो। फेर उलटी दुश्मनाई भी ऐसी मजल की रोशनाई जाहिर होने से रखते हो।। हाय-हाय वक्त दज्जाल का किस तरह हुआ है। जो मुसलमान हैं और दुनिया सब उलटे चलते हैं। और दिल में जानते हैं के हम हमारे दीन पर सीधा चलते हैं। और अपने दीन की राह मारते हैं।। इस भाँति दज्जाल ने घेर लिये हैं। के भाँति के बदफैल करावता है।। इस भाँति उलटे मारकर सबों के दिल पर पातशाही करता है, ऐसा दुश्मन हुआ बैठा है।। और एह बात सब कोई जानता है, जो शैतान लानती हमारे दिलों पर बैठा है, दुश्मन हुआ राह

फिर क्यों आपको इसके रहस्य समझ नहीं आते हैं? विचारिए! कि सच्चा मोमिन (ब्रह्ममुनि) कौन है? कुरान के अनुसार चार आसमानी किताबें, जंबूर, तौरेत, इंजील, कुरान हैं। जो चार पैगंबर दाऊद, मूसा, ईसा, मुहम्मद साहिब लेकर आये हैं। तो फिर कुरान पाक के अनुसार वे कौन सी किताबें व आयतें हैं जो कि रद (परिवर्तित) करके नये नामों से किताबें आयते आवेंगी? आपको क्या जानकारी है। कि वे कौन सी किताबों की आयतें हैं। यदि ज्ञात नहीं तो फिर क्यों दावा करते हो कि हम मोमिन हैं? हम उम्मत-ए-रसूल हैं? एवं हम ही कुरान पाक के वारिस

मारता है। और सब कोई मुँह सेती जाहिर कहते हैं। और फेर ऊपर का मायना जो लेते हैं। सो कहते हैं, के दज्जाल वजूद पर आवेगा। हम मुसलमान तिनसे लड़ेगे। ऐसे दज्जाल ने तुम जैसे उलमाओं को गाफिल (भ्रमित) किये हैं। और तुम ऐसी बुजरकी ले, औरों को भी गाफिल करते हो।

शेख जी, एक दोय बात इस वक्त की और भी सुनो। एक जो खुदा तआला के फुरमाये सेती शरा लिये बैठे हैं, तिनमें केतेक साफ दिल जो खुदा का डर रख-कर करते हैं। और तिनमें केतेक उलमा तुम जैसे जाहिल (मुख) और गुस्सा सख्ती से लिये बैठे हैं। और आखिरत जो खासी मजलिस के शादी के दिन की सिफतें जाहिर होने की बात जो कोई किसी से करते देखे, तो बगैर समझे, बगैर पहचान उसकों कल्ल करें और मुँह सो भी कह, के खुदा तआला हमको वह आखिरत का दिन न दिखाईये। जिस दिन मों मुसलमान साफ दिल बरहक होयेगे। और बंदगियाँ बरहक होयगी। सो दिन नहीं चाहते हैं। और आपकी मजलिस उस उम्मत की मों सिरदार गिनते हैं और इस मजलिस के सुख का दिन खुदा तआला की मेहरबानी का दिन, सो आप नहीं चाहते हो। जो कोई मुसलमान चाहता होवे, तो जिससे दुश्मनी रखते हो। इस भाँत का दौर हुआ है। और दूसरे केतेक उलमाव,

शेख जी, तुम जैसे बहुत पढ़े हैं। सो कहते हैं के हम अंदर के मायनों को पहुँचे हैं। खुदा तआला बेचून बेचगून बेसबी बेनिमून (निराकार, निर्गुण, निरंजन शून्य) हैं। सो सब दुनिया के अंदर है। और जो कुछ चौदे तबकों में हैं। सो भी सब हमारे अंदर

है !

क्या आपको हौज, कौसर, जमुना-जोय नदी, की पहचान है? क्या कयामत के सात बड़े निशानों की पहचान आपको है? यदि नहीं तो फिर क्यों विद्वान होकर विद्धता के अंहकार में स्वयं का एवं दूसरों का अहित कर रहे हो। न्याय दिवस पर हम आपसे आपका दामन पकड़कर परब्रह्म से न्याय मांगेंगे। तब आपका क्या हाल होगा? सोचिएगा !

क्यों कि कुरान पाक के सोलहवें (16) सिपारे अनुसार कुरान का ज्ञान आसमान व जमीन के बीच के लोगों को नहीं है। सिर्फ मोमिन

है। या आखिरत या कयामत अपने आप ताई है। आप बगैर और कुछ नहीं।।

अर्श शर:कों मानते, ऐ जान, इल्म सेती कुरान से झूठे पड़ते हो। किस वास्ते के खुदा बेचून बोचगून, बेसबी बेनमून आप बीच ठहरावते हैं। और मेअराजनामे में लिखा है जो रसूल साहिब मेअराज को पहुँचे, तब सात (7) तबक के आसमान के ऊपर हवा के ऊपर नूर, तिन आगे नूरतजल्ला को पहुँचे हैं। तहाँ रद-बदल की, वास्ते उम्मत के। और नब्बे हजार (9000) हरूफ सुनके आये।। तो ऐ बेचून बेचगून बेसबी बेनिमून (अनुपम, अलौकिक अद्धितीय अदभुत) लिखा है। पर तिनका अंदर का मायना तो पाया नहीं। पीछे ऐसा मायना ले कुरान से और कयामत से आखिरत की मजलिस से मुन्कर होते हैं।। और इतना समझते नहीं जो हम ए मायना लिखे कुरान सेती झूठे पड़ते हैं। ए भी आखिरत की मजलिस की रोशनाई की तिससे दुश्मनाई होती है। ए भी एही दो दौर की बरकत सेती होती है। अब शेख जी, तीसरे जो बुजरक तुम उलमाव इस दौर के माफिक चलने वाले, सो भी आखिरत की मजलिस शादी (आन्नद) की सो दुश्मनाई ले बैठे हो।।

शेख जी, अब कहो शरा-तौरा सो तो दुनिया का औरै दीन का बंध वस्तु ले बैठे हो। इनकों तो कार-भार कारोबार (व्यापार) चलावना है। जो इतना न करें तो साहेबी का बंधे जी रहवे नहीं।। तिस वास्ते ए जो अपनी साहेबी रखने को सिर लेवे और उस मजलिस को दुश्मनी करे।। पर जो तुम दुश्मनाई करते हो इस मजलिस से, सो तुम्हारी साहेबी कौन सी जाती है? और तुमारा बंधेज (बंधन) कौन सा टूटता है?

(ब्रह्मात्माएँ) ही बातिनी भेदः इल्में लहुन्नी से (“तारतम ज्ञान”) जानेगे। तो क्या आपके पास वह ईश्वरीय ज्ञान है। हम आपसे चार सवाल (प्रश्न) कर रहे हैं। खुदा को हाजिर-नाजिर (साक्षात उपस्थित) मानकर दिल पर हाथ रखकर जवाब (प्रत्युत्तर) देना। यदि आपको हमारी पहचान हो गयी, तो जो आप कहेंगे हम करेंगे। परन्तु शर्त इतनी है कि उत्तर कुरान पाक, हदीसों से प्रमाणित करके ही कहना। मैं अकेला नहीं हूँ मेरे पीछे हिंदुस्तान (भारतवर्ष) के अनेकों कबीले (परिवार) हैं। यदि आप मेरी जिज्ञासा को दूर कर दे, तो हम सभी आपके कथन अनुसार

हाय-हाय! दज्जाल के दौर ने उलमाओं बड़ों को ढकेले (पतनोमुख) हैं। पर ऐसा जो ना होवे तो क्यामत क्यों कर आई जानिये? ए ही निशानी क्रियामत की जाहिर है। किस वास्ते आपको बुजरक उलमाओं आरिफ करार देते हैं और खासी उम्मत मुहम्मद की मिने गिनते हो। और कहते हो के हम उस बड़ी मिने बुजरक हैं। और उलटे उसी मजलिस खासी उम्मत से दुश्मनाई भाँत-भाँत से करते हो। और कहते हो के हम बड़ा सबाब इन बातों का लेते हैं। पर जिन किनों ने अंदर के मायने पाये हैं सो तुमकों उम्मत के जाहेर दुश्मन देखते हैं। और तुम दीन की राह मारते हो। पर तुम क्या करो। खुदा ने यूँ ही फुरमाया है। सिपारा आठवां (8) मों लिखा है, के इबलीस को खुदा ने साथ के पास से भगाया है, के मैं आदमी की राह मारो, इनकी नजर मैं खुलने कभी न देऊँ। और अंदर मारो, तुमको जानने न पावे। खुदा ने इसकी बात कबूल की है। तिस वास्ते शैतान तुम्हारे दिल पर बैठा होय, अक्ल उलटाये के यह फैल करावता है। और आप जानते हो जो हम रसूलिल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलैहि व सल्लम का फुरमाया करते हैं।

शेख जी, कोई बदफैल करने वाला काफिर दुनिया की हर चीज वास्ते मुसलमान होते हैं। ऐसे ईमानवालों को तुम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व आलैहि व सल्लम की खासी उम्मत में गिनते हो। तो भी खासी उम्मत की पहचान नहीं और कहते हो के हम आरिफ, कुरान के मायने खोलते हैं। और जानते हो के हम खासी उम्मत में बुजरक हैं। और ना सुध उम्मत की, जो कौन उम्मत है? और किन ठौर से आई है? और किस मुकाम को पहुँचेगी और मालूम नही के मुसलमान

चलेगे तब आपको इसका पुण्य मिलेगा। हम तो फकीर (ब्रह्ममुनि) है। उम्मत-ए-मुहम्मदी (निजानंदी) है। अतः आप एक धर्म के प्रचार-प्रसार होने में सहायक बने। जिससे कि दोनो (लोक-परलोक) संसार में आपकी प्रसिद्धि होगी।

हे धर्मगुरु जी! आप तो विद्वान हैं। कुरान पाक व हदीसों के शब्द-शब्द को जानते हैं तो क्या आपके काम हाल नूरमयी (अलौकिक) हैं? क्यों कि लिखा है कि मोमिन के काम-हाल नूर (दिव्य) के हैं। वही परब्रह्म के समीप विराजमान हैं।

कितने गिनती हैं? ए सुध तो है नहीं। और कहते हो के हम खासी उम्मत है। और भी कहते हो जो कुरान हमारा, और हमारे वास्ते नाजिल हुआ है। हम पढ़े हैं। और मायना करते हैं। और खबर तो एक हरूफ की नहीं? जो कुरान में इशारातों जंजीरा किया हैं, सो किस मतलब पर किया हैं? और कहते हो जो कुरान हमारा है। और तुम तो चार किताबों जाहेर जानते हो।। सो चार पैगम्बरो पर उतरियाँ हैं। और कुरान में तो एही किताबां सौ ठौरों भेजियां लिखियां हैं। इसी नाम की किताबें रद किया है। और इसी नाम की किताबों को बरहक किया है। तुमकों एती खबर नहीं जो कौन सी रद किया है? और कौन सी बरहक किया हैं।। और कहते हो के हम कुरान पढ़ते हो।। और न खबर रसूलिल्लाह सल्लल्लाहो अलेहि व आलैहि व सल्लम की। और न खबर और पैगम्बरों की, जो कौन-कौन मुकाम पहुँचे हैं। और कहते हो के हम खासी उम्मत हैं। और न खबर नजीकी फ़िरिश्ते की हैं? ना खबर तिनकी? दरगाह बीच रूह कहे हैं ना तिनकी? और न खबर जबरूत की। न लाहूत की। न सुध नूर की? न नूरतजल्ला की? न खबर हौज कौसर की? ना खबर हमेशगी भिस्त की? ना खबर भिस्त जो पैदा होयगी तिनकी? ना खबर भिस्त के चश्मे की? न झरने की? ना खबर अर्शुल अजीम की? ना खबर मारिफत की? ना खबर आखिर की? ना खबर आखिर के बड़े निशानों की? ना खबर दाब-तुल अर्ज की? ना खबर सूरज मगरिब की तरफ उगने की? ना खबर याजूज-माजूज की? ना खबर दज्जाल के वजूद की? ना खबर कजा की? जो किस ठौर कौन करेगा? ना खबर बाकी दिनों की? ना खबर दुनिया फना होने की? के किस सेती होयगी? ना खबर उगने कायम

परब्रह्म के अर्श (धाम) को उठाने वाले देवतागण सत्य है। तो क्या आप मोमिन (ब्रह्मसृष्टि) है। अथवा आप फरिश्ते (ईश्वरी सृष्टि) है। निःसंकोच कहिएगा? क्यो कि चौथे (4) आसमान पर जो मोमिन रूह तस्बीह (सुमरनी) करती है। उससे बारह हजार (12000) फरिश्तें रूहें (ब्रह्ममुनि) उत्पन्न होते है तो क्या आप वह रूह (ब्रह्मात्मा) है? क्यो कि कियामत के दिन इनका ही हुक्म चलेगा।

स्पष्ट रूप से इसका वर्णन करके निःसंकोच कहना कि हे शेख जी आप कौन है। क्या रूह मोमिन (ब्रह्ममुनि) अथवा फरिश्ता (देवता)?

सूरज की? ना तिस ठौर की? इस भाँत केतिक लिखों? और खबर तो तुम एक हरूफ की नहीं रखते हो? और जुबान से कहते हो के हम मुसलमान खासी उम्मत के हैं। और आरिफ सब पहचान रखता हो कुरान की।। सिपारा सोलहवां (16) में लिखा है जो आसमान और ज़मीन के बीच जो कुछ है तिनका इल्म आसमान और ज़मीन के लोगों के पास नहीं।। सो इल्म इस खासी उम्मत से पहुँचेगा। तिस वास्ते जो कोई इस उम्मत का होवे सो शाहिदी देवे।। और इल्म सबकों पहुँचावे।। और ऐसे तुम खुदा के नजीकी बुजरक खासे मुहम्मद की उम्मत हो, और उलमाव हो, आरिफ़ आलिम हो, बुजरक हो।। काजी, मुल्ला, मखदूम, इमाम, खलीफा, जो कोई इस मसनद का बैठने वाला होय। ए सुकन में तिन सबों को लिखता हो। जो हम तो उम्मी हैं। इस उम्मत खासी में दाखिल होना चाहता है। तिस वास्ते हम चार (4) सवाल अल्लाह के कागज में लिख भेजते है। तिसका जवाब दीजियो।। ज्यों हमकों इस उम्मत की शहादत की निसाँ होवे? जब तुम हमारी निसाँ करोगे, तब ज्यों तुम फ़रमाओ त्यों हम करें।। जो कोई इस उम्मत का होवे सो शाहिदी कुरान माफिक देकर हम को लेवे। तो तिसके आगे हम हमारे वजूद की चमड़ी उतारे।। तिस का जामा तिस तरह कहो, तिस तरह बंद करके पहने।। और जहाँ खड़े रखो तहाँ रहें। और मैं एक्ला (अकेला) नहीं, बहुत कबीले हैं।। ए तुमको बड़ा सबाब (पुण्य) होयगा। जो तुम इस बात-बात में ढील करोगे, तो हम रोज कयामत को तुमारे दावनगीर होंयगे। हम इस उम्मत में दाखिल होना चाहते है। हमारी निसाँ किये बगैर तुमकों पानी पीवने का रवा (उचित) नहीं।। ना कोई और काम करने का रवा

कुरान-पाक के सवाल मुजब (अग्रलिखित) है। यथा-

1. कुरान पाक के पहला (1) पारः सूरः अल बक्र अलिफ, लाम, मीम, में मुहम्मद रसूलुल्लाह की अत्यंत महिमा वर्णित है। तो वह रसूल कौन है। व कहाँ पर है? जिनकी महिमा बेशुमार है।

2. ईसा रूहुल्लाह (देवचंद जी) की महिमा कुरान के सभी पारः में वर्णित है तो वह आखिरी ईसा कहाँ पर है? जिनकी इतनी शोभा कही गई है।

3. मूसा कलीमुल्लाह की शोभा (महिमा) कई जगह कुरान में वर्णित है।

हैं। तिस वास्ते ए सवाल कुरान के तुम पर भेंजे हैं। जो कोई गरीब अजिज़ फ़कीर ईसा मुहम्मद साहिब की उम्मत के, जैसे के कहे हैं, ऐसा होवे, और कुरान को अपना कहता होवे, सो खास मुसलमान से ना छिपावेगा। जो कोई सुने सो एक दूसरे से जाहिर करे। जो कोई एह कलाम रोशन के शाहिदी कलामुल्लाह और हदीसों के लिखा है, तिनकों छिपावेगा, सो खुदा का बेफुरमानी होयगा। और खासी मुसलमान जो कोई होय तिनको तो। ऐ शादी के सुकन हैं।

शेख जी, पहले भी तुमों ने तुमारी बात मजकूर काजी, दीवान को सुनाई है त्यों अब ऐसी न कीजो। यह सिताब से उहाँ सुनाईयो। यह उम्मत की शादी (आनंद) का काम है। और जो हमारी निसाँ न कर सके। तो पैगम्बरजादे मसनद हज़रत ईसा की पर लड़े है, वास्ते पैगबरी के। तिनों पास पहचान कुरान की। और पहचान रसूलिल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि व आलैहि व सल्लम की। और खासी उम्मत की। जैसी कहे हैं कुरान में। तिस बात की शाहिदी तिनों के पास है। एक दीन होने की। आखिरत की।

शेख जी, रसूलिल्लाह पहुँचे नूर तजल्ला कों। सो शाहिदी देवगा उम्मत खासी। जिनका इल्म पहुँचेगा सब दुनियाँ को। पहचान होयगी खुदा की। सब दुनिया को इनकी शाहिदी के इल्म से।

शेख जी, तुम इन उम्मत में के हो। जिन उम्मत सेती मायने सब कुरान के, और हदीसों के, हरूफ-हरूफ के रूजू (प्रकट) होंयगे। सब दुनिया को।

शेख जी, तुम इस उम्मत के में के हो। जो के मोमिन आये नूरबिलंद सेती। जिनका

तो वह आखिरी मूसा कहाँ पर है। जिनकी महिमा अत्यंत है।

4. इब्राहिम खलीलुल्लाह की अत्यंत महिमा कुरान में कही गई है। तो वह आखिरी इब्राहिम कहाँ पर है?

5. आदम सफीउल्लाह की बेशुमार सिफत कुरान में वर्णित है तो वह आदम कौन है व कहाँ पर है।

6. दूसरा पार: सयकूल में तालूत की अत्यंत महिमा वर्णित है। इद्रीस पैगंबर की भी शोभा वर्णित है। वह कौन है?

7. सोलहवां (16) पार: मे नाजी गिरोह बनी इस्राईल की सिफत अत्यंत

काम और हाल नूर है बीच नूर के।।

शेख जी, तुम इन मोमिनों मिने (में) के हो।। जो जमीन सेती अर्श कुरसी ताई जेती कोई पैदाईश है, तिन सबों को खास उम्मत पाक करेंगी। शेख जी तुम इस उम्मत के हो?

खुदा के अर्श को उठावने वाले फिरश्ते सो साँचे है। बख़्शवाना मुहम्मद सल्लल्लाहो अलेहि व आलैहि व सल्लम की उम्मत का।।

शेख जी, तुम तिनमें के हो।। जो रूहें साफ कही बीच दरगाह खुदा के।। शेख जी तुम तिन साफ मिने के हो।।

जो रूहें बारे हज़ार तसबी करते हैं चौथे (4) आसमान।। हर तसबी सेती फिरश्ते पैदा होते हैं। शेख जी तुम इन रूहों मिने के हो, जो उतरी है रूहें और फिरश्ते लैल तुल कद्र के बीच। फजर के वक़्त जिनका हुकम चलेगा।। खुदा के नजीकी जो होंयगे सो इनों सेती। शेख जी, तुम इन मिसल के हो।। इस भाँति इसका भली-भाँति से मुकरर करना।।



है। तो वह गिरोह कौन सी है?

8. मेअराजनामे में तीन सौ तेरह (313) पैगंबरों का वर्णन है। इनमें से एक पैगंबर की महिमा बेशुमार है। जो कि सभी पैगंबरों (अवतारों) की उम्मत (अनुयायियों) को मुक्ति प्रदान करवायेगा, वह पैगंबर (अवतार) कौन है?

9. पैगंबर, यूसुफ़, यूनस, इलियास, सुलेमान इत्यादि तथा अबु बक्र सिद्दीक, अली मुर्तज़ा पैगंबर के वारिस उत्तराधिकारी इनकी शोभा अंतिम समय में अत्यंत कही है क्योंकि?

अब आगे कुरान पाक के सवाल लिखे हैं।।

तिसका भली-भाँत से मुक़रर करना--

॥ कुरान और हदीसों के सवाल ॥

कुरान में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहों अलैहि व आलैहि व सल्लम की सिफ़त सिपारा पहला (1) मों, दूसरा (2) मों, तीसरा (3) मों, बुजरकी बहुत निहायत लिखी है जो इस बराबर खुदा के नजीकी न कोई फिरश्ता ना कोई पैगंबर या ना कोई और, सबों के आगे इस बगैर सब शर्मिंदे हैं सबों को बख्शावेगा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहों अलैहि व आलैहि व सल्लम की और भी बहुत सिफ़तें बुजरकियां लिखियाँ, हैं कहूँ केतेक पैगंबरों की सिफ़त बेशुमार लिखी हैं, मानिंद खुदा के, जमीन आसमान के नई पैदास करने वाले एही है ऐसी बुजरकियाँ कितनी जगह-जगह लिखिया है। हजरत ईसा रूहुल्लाह की सिफ़त सब सिपारों में बुलंद बुजरक कही।। इब्राहिम खलीलुल्लाह दोस्त खुदा की सिफ़त तीसवां (30) सिपारा में कही।। हजरत मूसा की सब ठौरों बुजरकी बड़ी कही।। और कुरान दूसरा (2) के कई सिपारे में कही।। और कुरान में इशारतों कही।। सिपारे मों कजा इमाम सिर कही तालूत की सिफ़त सिपारा दूसरा (2) मों बड़ी कही।। आदम की सिफ़त सिपारा पहला (1) मों बुजरकी बहुत बड़ी कही याने फिर या कि सिफ़त सिपारा उस मों बड़ी कही पैगंबर इदरीस की सिफ़त सिपारे इसों बड़ी कही रसूल साहेब के बराबर याने दोनों को एक किये गाजी बनी इसराईल की सिफ़त सिपारे उस मों बड़ी कही सिपारे सोलहवां (16) सूरत ताहा मों मर्द एक की सिफ़त बड़ी कही।।

10. पारः सोलहवां (16) में वर्णित है कि रसूलुल्लाह के आगे व पीछे कोई नबी नही, केवल एक ईसा आयेगा तो फिर खात्मुलनबी मुहम्मद सल्ल० को कहने का आशय क्या है? इसका विवेचन विस्तारपूर्वक करना जी?

11. पारः उन्नीसवां (19) में वर्णन है कि कितनो ने परब्रह्म ने आदेशो की अवहेलना करके अपने लिये कष्टदायकता की अवस्था बनाई। तो ऐसा क्यों कर कहा? विवेचन कीजिए?

12. कुरान पाक में तौरैत की अत्यंत शोभा वर्णित की गई है। वह नई तौरैत

सवाल- इस भाँति से बुजरकियाँ सब पैगम्बरों की लिखियाँ पैगम्बर दाऊद, पैगम्बर जकरिया, पैगम्बर इसहाक, अबू बक्र सिद्दीक, अली मुतर्तज़ा पैगम्बर युनूस, पैगम्बर, अयूब, पैगम्बर इलियास, पैगम्बर बोहोना-सुलेमान पैगम्बर बहुत लिखे हैं। मेंअराजनामे मों तीन सौ तेरह (313) पैगम्बर लिखे हैं, जो रसूलिल्लाह सल्लल्लाहों व आलैहि अलैहि व आलैहि व सल्लम ने देखे।। तिन सबों की सिफ्त जुदे-जुदे सिपारों में लिखी है। बहुत बुजरकी, कहा कहूँ आखिर तक की केतेक पैगम्बरों पर लिखी है। तिस वास्ते एक आखिरत को छुड़ावेगा, कि सब अपनी उम्मत छुड़ावेगें, और जो एक छुड़ावेगा दुनिया को, तो एतेक (इतने) नाम पर एतिया (इतने) सिफ्तें क्यों कर कहियाँ मायने इनका मुकर्रर करना। और क्लाम एते पैगम्बर को बुजरकियाँ दिया सो भी कौल साबित करना।।

सवाल- सिपारे सतरहवां (17) मों लिखा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम के आगे न कोई पैगम्बर न कोई रसूल न कोई नबी भेजा मैंने, और न कोई पीछे आवेगा किस वास्ते कि खात्मुल नबी कहा ए भी कलामुल्लाह का कौल साबित करना और रसूलिल्लाह सल्लल्लाहों अलैहि व आलैहि व सल्लम के आगे न कोई नबी न कोई रसूल आया न कोई पीछे आवेगा, ए कौल भी साबित रखना एक मायना दुरुस्त करना और जिन पैगम्बरों को बुजरगी मानिंद खुदा के कहया तिन पैगम्बरों की उम्मत तो सिपारा उन्नीसवां (19) मों निशानियाँ लिखिया है। किस वास्ते कि तिनों ने बेफुरमानी की जो जिनकी ये उम्मत सरिया (नियमावली) रानियाँ कहिया तो तिनों पैगम्बरों ने किनकों पैगाम दियो किनको

कौन सी? क्योंकि पुरानी तौरेत तो रद्द हो गई? जबकि नई तौरेत में एक व्यक्ति पैगंबर सल्ल० के समान कहा है। तो वह कौन है?

13. पार: सौलहवां (16) में पैगंबर इद्रीस पर तीस (30) सहीफ़े (ब्रह्मवाणी के प्रकरण) अवतरित होने के वर्णन का क्या रहस्य है? तथा वह ग्रंथ कौन सा है?

14. पार: तीसरा (3) में कहा गया है कि, खल्ना (इंद्रि यनिग्रह) वाले खुदा पर एतबार (विश्वास) करेंगे परन्तु इसके कलाम (वाणी) को नहीं पहचानेंगे, तो वह तौरेत कौन सी है?

समझाये जिन किया (इतनी) बजरकियाँ कहिया मानिंद खुदा के। एक कलामुल्लाह के कौल सो तो इख़िलाफ न होय। तिस वास्ते बुजरकियाँ कहिया सो भी कौल साबित रखना, दुरुस्त करना ?

तौरेत पर प्रश्न ।।

सवाल- कुरान में तौरेत बहुते जगह पर वही लिखी है। सिपारे पहिला (1) में बीच गिरोह जहूदों के पैगंबर आखिर जमाने के साथ तौरेत तिनमें सिफ़त मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहों अलैहि व आलैहि व सल्लम की, इस भाँति होवे कि मर्द एक नेक मुँह, चोटी, बाल भी उसके, रंग उसका गेहूँआ वर्ण, स्याह आँखे, कि एक पैगंबर आखिर जमाने का होवे। ऐ तौरेत कौन सी? सिपारा दूसरा (2) सयकूल पाना 92 में लिखा है कि मायने इस रूजू होने के साथ उम्मत के हैं, वे कोई के दी है, इनों को ताँई तौरेत, पहचानते हैं कुरान कों और पैगंबरों को। यह तौरेत कौन सी ?

सवाल- सिपारा तीसरा (3) तिलर्करसूल में पन्ना 55 तफसीरे हुसैनी में लिखा है- कि इख़िलाफ नहीं किया है, बीच दीन मुसलमान के कि हक़ है और मुहम्मद महदी व पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम बरहक़ है। दी है इनों के ताँई तौरेत पीछे इनके आया ऊपर इनके दानाई कुरान ऊपर इनके ।। ए तौरेत कौन सी? सिपारा पहला (1) में लिखा है पन्ना 6 कि कहो ऐ मुहम्मद! उनकी नीके ताँई कि किताब उनों को दी है। याने तौरेत जहूद और नसारा को। एह तौरेत कौन सी? सिपारा सोलहवां (16) पाना 21 में लिखा है कि पैगंबर इद्रीस पर तीस (30) वरक नाजिल हुए, जिन की सिफ़त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व

15. पार: दूसरा (2) में कहा गया है कि पाँचवी (5) आसमानी किताब ल्याने वाला साहिब-ए-हक (श्री जी साहिब) है तो वह कौन है? तथा वह कौन सी नई किताब लेकर आया है?

16. पार: तीन (3) के अनुसार परब्रह्म अपने बंदो से संवाद स्थापित रखता है तो वह तौरैत कौन सी किताब है?

17. पार: पहला (1) में वर्णन है कि पाँचवी (5) किताब की शोभा चार (4) किताबों में मुख्य है तो वह कौन सी किताब है?

18. पार: अठ्ठारह (18) में यहूद और नसारो में पाँचवी (5) किताब

सल्लम ने कही ॥ एक बरक कौन से?

सिपारा सोलहवां (16) में लिखा है कि बुजरकी कि दी मैं पीछे मूसा अलौहिस्सलाम ऊपर तौरैत, एह तौरैत कौन सी ?

सिपारा तीसरा (3) पन्ना 77 में लिखा है, मिन तौराते ॥ आया हूँ ऊपर तुमारे सांच करने वाली ऊपर उस चीज के कि, आग मुझसे थी वह किताब कि मूसा और ईसा की ॥ वह तौरैत कौन सी ।?

सवाल- सिपारा एक (1) पन्ना 59 में लिखा है कि न ईमान ल्यावते हैं बीच तौरैत के गिरोह एक, दो मिने से ऊपर इसके उस वास्ते कि आया, ऊपर इसके नजीक खुदा तआला के से, मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम एतबार रखने वाले हैं, उस तौरैत के कि साथ इनके हैं कि खत्ना किया है गिरोह एक का, उस वास्ते कि बख्सावना किया है बीच तौरैत के, जिनमें कलामुल्लाह है । एह तौरैत कौन सी ।?

सवाल- सिपारा दूसरा (2) पन्ना 106 बरक 24 बीच रोशनी बंदो के और साहेब किताबों के ऊपर पांचमी किताब के, मदत तलक के या बंदो को लेवे या आजाद करे ॥ एह किताब कौन सी ।?

सवाल- सिपारा तीसरा (3) पन्ना 59 में लिखा है, कि नाम बिन अबी उफी ने कहा है, कि ऐ मुहम्मद ! साथ तौरैत, हाजिर आदम जो दीन अपने के हैं मैं उनसे गुफ्तगोय करता हूँ । हजरत रिसालत पनाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व

कौन सी अवतरित होने को कही है।

19. कुरान पाक के अनुसार अनेक स्थानों पर लिखा है कि हमने किताब दी, चार (4) किताबों का तो आपको ज्ञान है। पाँचवी किताब (ग्रंथ) कौन सा है? पहली तीन (3) मन्सूख (रद) किताबें कौन सी हैं?

20. रसूल के बरहक़ (पूर्ण सत्य) वहोने व कुरान के बेशक होने का क्या रहस्य है। व कुरान के रहस्य किस प्रकार प्रकट होंगे? विस्तारपूर्वक कहिएगा?

22. सूरत “इन्ना इंजलिना” में कहा गया है कि अर्श से रूहें ब्रह्मात्माएँ व

सल्लम ने फरमाया कि वह किताब तौरत के से मिली हुई, ऊपर सिफ़्त मेरी और मेरी के है।। एह तौरत कौन सी।?

सिपारा सतरहवां (17) पन्ना 123 में लिखा है कि ल्याओ दलीलें पाने खुदा के, कि याद किया उन किनों के ताई, कि साथ मेरे हैं, यानि उम्मत मेरी कुरान माने। एह कि याद किया वह मेरे आगे थी तौरत और इंजील तमाम किताबें आसमानी उस जगह देखो।। एह तौरत कौन सी।? और एह आसमानी किताबें कौन सी? सिपारा एक (1) पन्ना 25 उस्तवारी उस कौल की मकसूद उस कौल सेती है कि बीच तौरत के साथ बनी इसराईल के बाँधा है ऊपर पैगंबर आखिर जमाने के।। एह तौरत कौन सी?

सवाल- सिपारा एक (1) पन्ना 59 में लिखा है, जिस वक्त कि वह पहचान करने वाला है उस चीज के कि आगे उसके उतरी है, अब साथ इनके है, वह किताब कि उतरना उसका मानिंद तौरत के और इंजील को और कुरान से राह दिखावने वाला है, तरफ हक के खुशखबरी देने वाले है उन मुसलमानों के ताई खलासी और मर्तबा।। एह किताब कौन सी।?

सवाल- सिपारा चार (4) पाना 16 में लिखा है, खुदा तआला कहता है कि तहकीक सुनोगे उन सेती किताब दी है, उनको आगे तुमारे जहूद और नसारो कों, और भी सुनोगे उन ही सेती।। एह किताब कौन सी।? सिपारा अठ्ठारह (18) पन्ना 124 में लिखा है, तहकीक वो कोई काफिर हुए हैं, जहूद से और नसारा से, साथ मुशरिक अरब के, किस वास्ते नहीं भेजता है, ऊपर इनके कुरान सबों पर, यानि ए

फरिश्तें (देवतागण) दुनिया में अवतरित हुए हैं। इनकी सिफ़्त हज़ार (1000) महीने तक कही गई है। इनके हाथ हक़ का हुक्म है तो कहिए कि वह रूहें (ब्रह्मसृष्टियाँ) कौन सी हैं। जिनके हाथ में कुल (समस्त) अम्र (हुक्म) कहा गया है? फरिश्तों (देवताओं) से भिन्न आदमी कौन से कहे गये हैं?

23. पार: अट्ठारह (18) में वर्णित फरिश्तों (देवताओं) की फौज अवतरित हुई। इनके वास्ते लिये कुरान पाक आया, तो वह फरिश्तें कौन से हैं? तथा रूह मोमिन (ब्रह्मसृष्टि) नूर बिलंद (परमधाम) से अवतरित

सब आपस में एक हैं, यानि एक मर्तबे, हर एक पर किताब नाज़िल फिर ॥ एह किताब कौन सी?

इस जगह बहुत ठौरों किताबों दिया लिखियाँ हैं। और जाहिर मायने तो तुम चार (4) जानते हो, तिनमें तीन (3) तो मन्सूख कियाँ लिखियाँ हैं, हज़रत मूसा, ईसा और दाऊद के जमाने की। और ए जो बहुतों पर दिया लिखी है, तिनमें इन नाम को केते ठौर बरहक किया है, किसमें कलामुल्लाह कहे हैं, केतिक मिने अल्लाह और रसूल की पहचान कही है। केतिक मिने कुरान की पहचान कही है। जैसे कि पहचानने का हक है। केतिक ठौर आखिर पैगंबर पर दिया लिखियाँ हैं ॥ तिस वास्ते ए तो मैं थोड़े ठौर के नाम लिखे हैं, पर बहुतों पर दिया लिखियाँ हैं। तिस वास्ते खुदा केतक कौल साबित रखके किताबों का मुकर्रर करना ॥ बाजी जगह उतारना के जुदा-जुदा लिखा है। ठौर तीन (3) दिया लिखा है। किसी ठौर दो (2) दिया लिखा है किसी ठौर एक (1) दिया लिखा है। इसी नाम को बरहक दिया लिखियाँ हैं। इसी नाम की मन्सूख किया लिखियाँ हैं। जब तोड़ी (तक) किताबों का मुकर्रर ना होवें और जिनको दिया है। ए मुकर्रर न होवे तब तोड़ी (तक) किताबों का मुकर्रर न होवे। तब तोड़ी (तक) मायना दुरुस्त क्यों कर लेवे। इन किताबों का मुकर्रर किया चाहिए ॥ ?

॥ उम्मत तीन (3) बजह (प्रकार) की ॥

तिनमें रूहों की सिफ़्त ॥

सवाल- सिपारा तीसवां (30) सूरत अम्पयत साअलून मों लिखा है, कि रूहों से

हुए है। इनकी रहनी नूरी है। काफ़िर (कृत्ज़न) अंधेरे से आये है। इनके काम अंधेरे है। एंव मोमिन पर इलाही (ईश्वरीय) रहस्य संपदा खर्च होगी। तो इसका क्या सबब (कारण) है कहिएगा?

24. पार: तीस (30) में कहा गया है कि कुरान पाक रूहों (ब्रह्मात्माओं) के लिये ही आया है, रूहों के (देवता) साथ फरिश्तें आये है। न्याय रूहों (ब्रह्मामुनियों) के हाथ कहा गया है। क्यों कर, बताईए?

25. पार: तीन (3) में वर्णन है, कि मोमिनो (ब्रह्मामुनियों) की महिमा अनंत है। क्यों कि मोमिन (ब्रह्मसृष्टि) ही चौदे तबक (लोक) को इल्म

बुजरक और कोई नहीं। न कोई पैगंबर, न कोई फ़िरिश्ता, न कोई और। और मरतबा रूहों का चौथा (4) आस्मान है। हर रोज बारह हजार (12,000) तसबीह करते हैं। हर तसबीह फ़िरिश्ता पैदा होता है। सिफ्त आदमियों की। न इन आदमियों से।। सिपारा चौदहवां (14) मों लिखा है, कि रूहें है सो खुदा की दरगाह बीच है।।

सवाल- सिपारे तीसवां (30) मों सूरत इन्ना-इन्जलिना मों लिखा है, फ़िरिश्ते और रूहें लैल तुल कद्र के बीच उतारे हैं। और पावेगे हजार (1000) महीने से। नेमतें खुदा की तिनसे आखिरत के हुक्म सब इनके साथ होवेगे।। और भले काम करेंगे। इस भाँति रूहों की सिफ्त बहुत ठौरो लिखी है।।

सवाल- अब कहो जी जिन रूहों की इतनी सिफ्त कही जो खुदा की दरगाह बीच के हैं, और पैदाईश सबसे बुजरक तर हैं, और आखिर का कुल अम्र (आदेश) इनके हाथ कहा, और फ़िरिश्तों की पैदाईश से आदमी जुदे कही।। ए कौन सी रूहों की सिफ्त कही है?

॥ फ़िरिश्तों की सिफ्त ॥

सिपारा अट्ठारहवां (18) कद् अफ्तहल् मोमिनून, मों लिखा है, कि फ़िरिश्तों की फौज उतरी है, वास्ते कुरान के, कुरान उतरयां है वास्ते इनके। सिपारा तीसवां (30) सूरत वन्नाजिआत मों लिखा है, अमूरूनू- फौज फ़िरिश्ते इसराफील की नाजिल है, ऊपर कज़ा के कि कज़ा तअल्लुक (संबध) इनके है। सिपारा तीसवां (30) सूरत इन्ना अंजलिना मों लिखा है, कि जहाँ रूहें और फ़िरिश्ते मिलेंगे

(ज्ञान) से पाक-साफ़ (पवित्र) करेंगे। जिससे खुदा (परब्रह्म) की पहचान होगी। तो वह इल्म (ब्रह्मज्ञान) कौन सा है?

26. पार: तीसवां (30) सूरत “क्रद्र” पैगंबर मुहम्मद स० ने अपने यारों को कहा, कि बनी इस्राईल की महिमा अनंत है। तो यारों ने कहा कि हम इस स्तर तक क्यों कर पहुँचेंगे को इसका क्या रहस्य है? तो वह बनी इस्राईल कौन है। जिनमें ईसा (देवचंद जी) का अवतरण होगा? जिनकी इतनी महिमा कुरान पाक में है।

27. पार: दूसरा (2), तीसरा (3) पाँचवा (5), में यहूदियों की महिमा

कुल अम्र इन रूहों और फिरिश्तों के साथ होयगा।।

इस भाँति फिरिश्तों की सिफ्त बहुत ठोरों लिखी है। फिरिश्तों की सिफ्त जो कही आखिर की, रूहों के साथ इनका हुक्म चलेगा। और कुरान इनों पर आया, और ए कुरान ऊपर उतरे। और कजा इनके हाथ कही।। ए जो फिरिश्तों की फौज कही सी कौन सी? कि जिनका मर्तबा इतना कलामुल्लाह में लिखा है।?

॥ मोमिनों के गिरोह की सिफ्त ॥

सिपारा दूसरा (2) पन्ना 89 में लिखा है- गिरोह एक कि अदल सेती उठाई गई, तो होवे गवाह वास्ते पैगंबरों के ऊपर मुन्करों के पैगंबरों से रोज क्यामत के होवे, भेजा हुआ मेरा, याने मुहम्मंद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम है, ऊपर पकड़ा है इल्म उसके ने, सो गिरोह पाक करेगी जमीन से तो अर्श की कुर्सी तोड़ी है सब आलम सो।

मेअराजनामे में लिखा है कि, अर्श के उठावने वाले फिरिश्ते बख़्सावना चाहते हैं उस उम्मत की बात रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व व आलैहि व सल्लम की का।

सिपारा अठारवां (18) कद अफ़्तहल्मोमिनून में पन्ना 85 कि मोमिन आये हैं, नूर बिलंद से, और इनका काम और हाल नूर है, बीच नूर के। और काफिर आये हैं अंधेरी से। इनका दिल और काम अंधेरा है बीच अंधेरे के।। सिपारा तीसरा (3) तिलकरसुल में लिखा है, पन्ना 56 कि साहेब इल्म के वे कौल माने मोमिन, शाहिदी देने वाले इल्म से, हर एक इल्म से खबरदार है। इनकी सोहबत शाहिदी सेती

का वर्णन है। तो वह यहूदी कौन से है? क्यों कि पूर्व वर्णित यहूदी की जाति तो कुरान से रद्द हो गई, परन्तु वह यहूदी कहाँ है? जिनसे अंतिम पैगंबर की महिमा वर्णन होगी?

28. न्याय तो एक परब्रह्म प्रियतम स्वामी ही करेगा इस का वर्णन कीजिए? कि वे न्याय किस स्थान पर बैठकर करेंगे? क्यों कि कुरान बरहक़ (पूर्णसत्य) है।

29. याजूज़-माजूज़ दुनिया को कैसे खायेंगे? जबकि यह तो नूह नबी के पोते कहे गये हैं।

पहचान होवे खुदा की।।

सिपारा अट्ठारवां (18) कदअफ़त लहलमोमिनून में लिखा है, कि आखिर को गंज अर्श इलाही का खर्च होयगा सब मोमिनों पर।।

सवाल- सिपारा तीसरा (3) तिलकर्सूल में लिखा है, कि तमाम गिरोह की बुजरकी होनी है रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम की गिरोह सेती।। इस भाँति बहुत ठौरों इन गिरोह की बुजरकी भाँति-भाँति लिखी है।।

अब कहो जी जिन मोमिनो की सिफ़्त कही जो मोमिन नूर बिलंद से आये, इनका हाल और काम सब नूर कहा बीच नूर के।। और गिरोह अदल सेती उठाई गई, जो शाहिदी देने वाली और चौदह तबकों को पाक करने वाली और सबों को इल्म देने वाली, जिन इल्म सेती पहचान होवे खुदा की। और अर्श के उठावने वाले फिरिश्ते भी बख़्सावना इस उम्मत को चाहते हैं। और अर्श इलाही का गंज इस उम्मत पर खर्च होयगा आखिर को। ए गिरोह मोमिन की कही सो कौन सी? जिनकी बुजरकी एती कही।

॥ बनी इसराईल (इस्राईल) की गिरोह ॥

सिपारा दूसरा (2) सयकूल पन्ना 166वरक 14 मों लिखा है, कि बनी इसराईल का पैगंबर तहकीक खुद (स्वयं) साहिबुज्ज़माँ है।

सिपारा चौथा (4) लन्तनामों पन्ना 120 मों लिखा है, कि उल्मा बनी इसराईल के ऊपर पैगंबर आखिर जमाने के ताँई उतरा, यानि कुरान।।

सिपारा गयारहवां (11) मों लिखा हैं कि उतरने मोजिजे और हुज्जतें

30. अस्राफील के एक सूर (नरसिंहा) फूँकने से दुनिया कैसे मर जायेगी, फिर दोबारा सूर फूँकने कैसे जीवित हो जायेगी?

31. पार: तीस (30) में वर्णन है कि रसूल मेअराज को चले तो इनका भी दिल पवित्र किया गया। आबे ज़मजम क्या है। जिससे कि दिल पवित्र हो गया? आगे जाने पर देखा दरवाज़े बंद है तथा इनका मार्ग मुहम्मद का दिल क्यों कहा है? आखिरत को मुहम्मद सल्ल० के द्वारा शिफायत (प्रशंसा) करने का रहस्य है?

32. पार: उन्नतीस (29) में वर्णित है। कि आठ (8) फरिश्तों ने खुदा (परब्रह्म) के सिंहांसन को उठाया हुआ है। जबकि आज के दिन तक चार मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम पर, कि जारी करना नहरों का, कैसे पाक होना आसमान का कि उतरना इल्म गैब का खास खुदा के ताई एह बुजरकी बीच सूरत बनी इसराईल के मजकूर होयगा।।

सिपारा तीसवां (30) सूरत इन्ना इंजलीना में लिखा है, कि बनी इसराईल की बुजरकी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम ने अपने यारों के आगे कही। तब उन यारो ने अचरज होय के कहा! कि हम इस बुजरकी को क्यों कर पहुँचेगे? जिनकी एती बड़ी बुजरकी कही है।।

सिपारा दुसरा (2) में पन्ना 98मों लिखा है कि राह दिखावना नेमत का कि सिफ्त मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहों अलैहि व आलैहि व सल्लम की से पीछे उसके बयान किया मैं रहा वास्ते बनी इसराईल के।

सिपारा पहला (1) आलिफ लाम मीम मों पन्ना 26पीछे उस्तवारी उस कौल की मकसूद जिन कौल सेती है बीच तौरेत के साथ बनी इसराईल के बाँधा है ऊपर पैरवी पैगंबर आखिर जमाने के।। इस भाँति बहुत ठौरों बनी इसराईल की बुजरकी लिखी है।।

सवाल- अब कहो जी जिन बनी इसराईल का पैगंबर खुद (स्वयं) इमामे ज़माँ को कहा, और आखिर जमाने का पैगम्बर भी इनमें आया कहा, और कुरान के पकड़ने वाले भी इनको कहा और तौरेत इंजील भी इनों पर आई कही, और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहों अलैहि व आलैहि व सल्लम ने आपने यारों के आगे इनों की बुजरकी

(4) फरिश्तों का ही वर्णन है तो आठ सफें (पंक्तिया) फरिश्तों की, इसका क्या भेद है? तथा आठ (8) अर्श (धाम) कौन से है? जो कि आसमान ज़मीन के बीच (मध्य) स्थित है।

33. पारः सोलहवां (16) की तफ़सीर अनुसार सात (7) तबक (लोक) ज़मीन (पृथ्वी) के फरिश्तें (देवता) के कंधे पर है। फरिश्तें के पैर शिखर पर है। शिखर बैल के सींग पर है। बैल अखण्ड कहा है। बैल मछली की पीठ पर खड़ा है। मछली हौज़ कौसर में की है। मछली दरिया के पानी से जीवित है। दरिया (समुद्र) के ऊपर दो ज़ख (नर्क) है। इसके

कही, तब यारों ने कहा कि हम इन बुजरकी को क्यों कर पहुँचेंगे? खास मोमिन भी इनों को कहे, जहूद भी इनों को कहा। हजरत ईसा रूहुल्लाह भी इन पर आया, आखिर की बुजरकी भी इनों को कही सो बनी इसराईल कौन से? जिनकी बुजरकी इतनी कुरान में लिखी है।?

जहूदों (यहुदियों) की सिफ़्त ।।

सिपारा दूसरा (2) पन्ना 91 मों लिखा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम आये वास्ते जहूदों के और नसारों (ईसाईयो) के कि दी है जिनकों किताब कि ल्यावें हर मोजिजों के ताई और खुलासा करें ।।

सिपारा पांचमा (5) पन्ना 29 मों लिखा है कि गिरोह जहूदों की मों आखिरत मुल्क नबूवत का है। पातशाही रसूलिल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम के बीच फकीरों के साथ इन जहूदों के ।।

सिपारा तीसरा (3) तिलर्करसूल मों लिखा है कि लाहूत की निशानी जहूद नसारों की जात (वंश/अनुयायी) से जाहिर होनी है ।।

सवाल- सिपारा चौथा (4) लन्तना मों लिखा है कि अहलें किताब तीनों के ज़बूर, तौरैत, इंजील, कि इनों को मोमिन खास खुदा से कहे जिनकी सिफ़्त साथ पैगंबर के कही जिन पर तीन किताबें उतरी। जिन पर छिपियाँ भलाईयाँ उतारी। सिपारे दूसरा (2) सयकूल मों लिखा कि मायने रूजू होने साथ उम्मत के, दी है जिनों को किताब तौरैत, पहचानते हैं कुरान को और पैगंबर को जैसे कि पहचानने का हक है इस भाँत

ऊपर अंधेरा है। अंधेरा के ऊपर सुरैया (ज्योति) है। आसमान, ज़मीन के लोगों की नज़र यहाँ तक भी नहीं पहुँचती सो क्यों कर?

अतः बताईए कि—

वह फरिश्ता कौन है?

जिसके कंधे पर समस्त संसार टिका है?

जिस शिखर पर फरिश्ता खड़ा है। वह शिखर कौन सा है?

शिखर बैल की पीठ पर स्थित है तो वह बैल कौन सा है?

बैल मछली की पीठ पर कहा है। तो वह मछली कौन सी है?

जहूदों की सिफ़्त कलामुल्लाह में बहुत ठौरों लिखी है ए गिरोह जहूद मोमिनों की कौन सी।?

सवाल- अब कहो जी जिन जहूदों के ऊपर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम आये और जिनको किताब दी सब हादियों के मोजिजों की, जिन सेती मायने की, जिन सेती मायने जाहिर होंयगे और आखिरत को नबूवत की पातशाही रसूल की निशानी इनमें जाहिर होयगी और किताबां इनों को दी राह दिखावने वाले कुरान से और खास मोमिन भी इनों को कहे जो जहूदों की गिरोह जिनकी इतनी बुजरकी कही, सो कौन सी गिरोह जिनकी सिफ़्त कलाम में लिखी हैं।। अब कहो जी इन पाँचो (5) उम्मतों की सिफ़्त कलामुल्लाह में बहुत कही है, सो पाँचो उम्मतों का मुकरर (निश्चित) करना। जो इनमें खासी उम्मत कौन सी? और चारों (4) को एती बुजरकी कही सो ए चारो (4) कौन सी।? तीसवां (30) पार अम्मयत साअलून में पाना 2 बरक 395 में लिखा है, वजन्नातिन- और दरख्त बागों के अल्फ़क।। मिले हुए लपेटे हुए याने बहुत एक दूसरे के नजदीक इन्नायोमन् फ़स्लै- बदुरूस्ती कि रोज़ हुक्म याने क़ियामत, पाना बीच काम खुदा के, मीकातन् वक्त एक बरकरार किया गया वास्ते हिसाब के याने खलकों के और वास्ते तबीयत इनके।। सिपारा तीसवां (30) सूरत इन्ना अन्जलिना में लिखा है पन्ना 78वरक 498“मिन्कुल्ले अमरिन सलामुन” वास्ते काम बुजरक के कि हक सुब्हान तआला ने कजा फरमाई है, तो बीच हर एक कौम के, खैर, बरकत, और सलामती, उस हुक्म सेती कि तलब करे बीच सब सख्तियों के।।

मछली हौज़ कौसर में की है। तो व हौज़ कौसर कौन सा है?
मछली दरिया (सुमुंद्र) में जीवित है। वह दरिया कौन सा है?
दरिया के ऊपर दोज़ख कहा है, सो क्यों कर?
दोज़ख के ऊपर रूआ (अंधेरा) कहा गया है तो अंधेरा क्या है?
अंधेरे के ऊपर सुरैया (ज्योति) का पर्दा कहा गया है तो पर्दा (आवरण)
क्यो कर कहाँ है?
दुनिया के लोगो की नज़र (दृष्टि) सुरैया से पार क्यो नही जाती?

34. पार: सत्तरह (17) में लिखा है कि पैगंबर सल्ल० से पहले कोई

अब कहो जी कजा तो बहुतों पर लिखी है। एक ठौर लिखा कि खुदा तआला आप काजी होयगा। एक ठौर लिखा कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम आप कजा करेंगे। एक ठौर लिखा कि इब्राहिम, के इसराफ़ील की फौज कजा करेगी। एक ठौर लिखा कि बागों के दरख्त आपस में लपेटे जायेंगे, मिलेंगे एक दूसरे से तहाँ कजा होयगी। एक ठौर लिखा कि रूह और फिरिश्ते मिलेंगे, तहाँ कजा होयगी, और भी इस भाँति बहुतों के नाम लिखे हैं।

सवाल- अब कहो जी कजा तो एक खाविंद करेगा, और कुरान में तो बहुतों पर लिखी है। उसका मुकरर करना। जो ए कौन करेगा? और ए तो कलामुल्लाह के हरूफ सो तो इखतिलाफ न होवे।। तिस वास्ते जेतों के नाम लिखे सो भी कौल साबित करना। और मायने एक का एक साबित करना।। सिपारा 30 अम्म सूरत नाजिआत मक्कीए पन्ना 387 मों लिखा है, कि मल्कुल्मौत सब दुनिया को कबा (अधीन) करेगा, और अपने आप भी कब्ज करेगा। छूटे खुदा से और कोई न रहेगा।।

सिपारा सत्ताईसवां (27) पन्ना 280 मों लिखा है कि बहरूल हैवान के तले अर्श के है। आलम सबकों यह लेवेंगा।।

सिपारे सतरहवां (17) पन्ना 33 मों लिखा है कि याजूज-माजूज सब दुनिया को खायेंगे।।

सिपारा तेइसवां (23) पन्ना 108 मों लिखा कि इसराफ़ील के एक सूर से

रसूल नही भेजा, रसूल के आधीन नबी है। रसूल शरिअत का है। शरिअत इब्राहिम की का पालन क्यों कर ने को कहा गया है? जबकि पूर्व की किताबें कुरान पाके से रद कर दी है।

35. वह रसूल साहिब कौन से है? जिसको सब किताबें एकत्र करने को लिखा गया है। जबकि लिखा है कि रसूल-ए-खुदा व खुदा तआला (परब्रह्म स्वामी) के मध्य और कोई रसूल नहीं है। तो फिर वह आखिरी रसूल कौन सा है? तथा कहा पर है, कहिएगा?

36. एक सवाल (प्रश्न) का निर्णय कीजिए एक तरफ तो कहा गया है कि

सब दुनिया मरेगी और दूसरे सूर से उठा के कायम करेगा।।

सिपारा छब्बीसवां (26) मों लिखा कि इश्क की आग ऐसी जलावेगी जो ना दाना रहेगा न घास रहेगा। एक कौल मों यूँ लिखा है कि खुदा तआला फिरिश्तों को हुक्म करेगा सो जमीन सबको तबाह करेंगे, तिसके बीच दुनिया सब मरेगी।। एक कौल में लिखा है कि जमीन सबको जिबराईल बख्सावेगा।। इस भाँति दुनिया का मौत बहुत ठौरों जुदी-जुदी जिनसों लिखी है। दुनिया तो एक वही, और तिनका मौत जुदी-जुदी भाँतो कहा सों क्यों कर? तिस वास्ते ए तो कलाम अल्लाह के कौल, जिनका एक हरूफ इख़्तिलाफ होने का नहीं।।

सिपारा पहला (1) आलिफ लाम मीम में लिखा है पन्ना 78व इन्नूह बिल्आखिरते। बस तहकीक कि बीच उस जगह के, लमिन रसालेहीन, याने सबों सिफ्तों से पाया गया है, बीच कोई के, “इजू दाल लूह” –और याद करो उस वक्त को कि कहा इब्राहिम को “इब्ब हू” परवरदिगार उसके ने “अस्लिम गद्न” – रखना “हुम्म” – मेरे से या सौंपने वाले को बीच हर चीजों के काम जारी होने के से कि हुक्म कजा का ऊपर तेरे जारी होवे काल अलस्तो-कहा इब्रराहिम ने, कि मैं उस्तवार किया अपने ताँई ले रब्बिल आलमीन।। कि वास्ते पालने वाले खलकों के, ताँकि जो कुछ कि चाहे सो करे, कि बीच जाहिर करने हयात के और निशानी गुजरने के याने पातशाह जो तबकान का है। छोड़े हम मसलत अपनी ऊपर दोस्त के याने में सौँपा आपको, दोस्त के ताँई दोस्त सेती मेरे ताँई जो कछु एक पहुँचे बहुत नेक है।।

पहले रसूल नहीं भेजा। दूसरी तरफ कहा गया है कि नबी इब्राहिम, मूसा, लूत, समनून ईसा, इत्यादि संसार में भेजे कहे गये सो क्यों कर?

37. पारः ग्यारह (11) अनुसार आदम अलैहिस्सलाम के बाद नूह के समय तूफान कहा गया है। तो समस्त संसार तो जल प्रलय में नष्ट हो गया, फिर कुफ्र (कृत्जनता) करने वाले कहाँ से आये? क्यों कि नूह ने खुदा के हुक्म से समस्त नेक प्राणियों का एक-एक जोड़ा किशती (नाव) में रख लिया था। परन्तु उनका एक पुत्र परब्रह्म के प्रति समर्पित न होने से नष्ट हो गया। तो शेष कुफ्र (कृत्जनता) पर चलने वाले कैसे रहे?

सिपारा तीसवां (30) सूरत अल नज़म में लिखा है, कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम चले मेअराज कों, जिबराईल ने तकिया दिया, छाती और दिल चीरा, हिकमत सूँ, और तुरंत मैकाईल ने ज़मज़म के आब से धोया, अरक दुनिया का और नूर ईमान के सुपुर्द किया। आगे को चले। देखा। दरवाजा कुलफ कज़ा के सों बाँधा है। और खुदा के खजाने का भेद है। सो दिल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम का है। किल्ली इनकी बीच दिल इनके दी है। और उसके ताँई ऊपर पकड़ा है। आखिर जो दुआ रसूलिल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि सल्लम की कबूल हुई। आखिर के दिन दुनिया सब इनके हाथ कबूल हुई।।

॥ काजी की कजा के सवाल ॥

सवाल- सिपारा दूसरा (2) में लिखा है पन्ना 110 वाका 25 फ मत खौफ- पस जो कोई कि जाने या पावे ख़्वाहिश के ताँई या इमाम काजी होंवे। सिपारा तीसवां (30) रसूल दमोजआते में लिखा है। पाना 9 वरक 387 ॥ “अमरन ”- फौज इसराईल की, कि नाजिल है बीच हुक्म के, कि सब हुक्म कजा को और कद्र। कि कज़ा ताअल्लुक इनके हैं ॥

सिपारा तीसरा (3) पन्ना 94 में कान ते बशरिन-कभी न था और न होय और नहीं लायक एक खास पैदा करने वाले के ताँई याने ईसा यति यहूल्ला हुलू किताब-इस वास्ते कि देवे खुदा उसके ताँई इंजील, वल्कुम्म- और समझ अव्वल उसकी बीच बुजरक हुक्म और बीच कजा के वन्नुबूवत-और नबूवत और पैगंबरी

38. पैगंबर, इब्राहिम, इस्माईल, याहिया की उम्मत के होते हुए भी रसूल सल्ल० के आने के समय तक कोई मुसलमान नहीं था। तो जो एक लाख चौबीस हजार (1,24,000) पैगंबर कहे गये हैं। फिर कुफ्र (कृत्त्रनता) क्यों नहीं खत्म हुआ? इन्होंने किनको पैगाम (संदेश) दिये? स्पष्ट कीजिएगा!

39. समस्त संसार के मानव प्राणियों की उत्पत्ति तूफान के पश्चात नूह के बेटों शाम, हाम, याफिस द्वारा पुनः की गई तो फिर सभी कुफ्र (कृत्त्रनता) पर कैसे चले गये?

के सिपारा तीसवां (30) सूरत इजस्समाऊन् फतहत् मक्कीये में पन्ना 25 वरक 393 में बयान है, यौम ला तम्लेको-जिस रोज के पातशाह होवे पुरसिश का। नफ्सुन्-कोई दम। तेन फसिन्-वास्ते किसी दम के, शय्यन-एक चीज के ताई नफ याने कोई न सके बीच कुदरत कुव्व-अपनी नफा किसी के ताई पहुँचाया, वलअमरों-और हुक्म फरमान के का यौमे जिल्लिल्लाहे-उस रोज कि खुदा के ताई है शिफायत देना मोमिनो का कुदरत अपनी से नफः इनके ऊपर पहुँचाये, जिसके ताई कि चाहे उनके हक बीच करे सिपारा तीसवां (30) सूरत तिस वास्ते इस भाँति जो कौल लिखे है, सो सब साबित रख के एक पर मुकर्र करना।। सिपारा उन्तीसवां (29) सूरत पचपनवां (55) वा तवार कल्लजी अल्लहावक्तों मतवक्तों, वरक 366 में बयान है। अर्श रब्बि का- अर्श परवरदिगार तेरे का, फैकहुमूं- ऊपर तले फिरिश्तों के बराबर जगह आसमान के हैं, या मेले फिरिश्तों के बराबर जागे आसमान के हैं यों में जिन- उस रोज बीच समानियतुन्।। आठ (8) फिरिश्ते। और आज के दिन अर्श के उठावने वाले चार (4) हैं। बीच मबालम के ल्यावते हैं कि उस रोज बीच सब आद अर्श होते, ऊपर सूरत पहाड़ी बकरी के। छाती से तो रात ताई दरम्यान, उसके एता फर्क होवे आसमान से, तो और आसमान ताई और कहा है कि आठ (8) सफे फिरिश्तों से उठावें इनके ताई और कोई न जाने छूटे खुदा।।

सवाल- अब कहीं जी सूरत पहाड़ी की कही, सो वह कौन सी बकरी कि जिनकी छाती से तो जानु ताई आठ (8) अर्श कहे। दरम्यान आसमान से और आसमान ताई बीच इतने तफावत में आठ (8) अर्श कहे इतने बड़े सो क्यों कर? और वे आठ

40. शाम को अरब, फारस (ईरान), हाम को हिंद (भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश, अफगानिस्तान, नेपाल, भूटान, म्यामार, इत्यादि) याफिस को तुर्कीस्तान, रूस, यूरोप, चीन इत्यादि देशों के निवासियों का पूर्वज कहा गया है। तो ऐसे बुर्जुग आज तक छिपे हुए हैं क्यों कर? तथा इन देशों के निवासी एक दूसरे से आपस में लड़ते हैं किस लिए?

41. जादल मिसल किताब के अनुसार एक औरत को उसके शौहर (पति) ने तमाचा (चांटा) मारने पर भी मुहम्मद सल्ल० को न्याय करने का निर्देश खुदा तआला (परब्रह्म स्वामी) ने नहीं दिया तो क्यों कर? इसी

अर्श कौन से? और आज आठ (8) कहे सो क्यों कौन से।?

सिपारा सोलहवां (16) सूरत ताहा में लिखा पन्ना 43 वरक॥ वमा तहतुस्सरा॥ जो कछुक कि बीच तले तबके सरा के हैं, जमीन के तले से और ऊपर सरा से तब मन तले हैं, तबके जमीन के से, तिन मों जमा एक है, कि शिखर दिलों के ऊपर उसके हैं, और तप्सीरों के और बीच रिवायतों के बरहक ऊपर काँधे फिरश्ते के हैं, और कदम फिरश्ते का ऊपर शिखर के हैं, और शिखर बैल के सींग पर है, और बैल बहिस्त (स्वर्ग) का है। और कायमी बैल की, मछली की पीठ पर है। और मछली हौज कौसर की है। और मछली साबूत (जीवित) है ऊपर दरिया के। और दरिया ऊपर दोजख के हैं। दोजख ऊपर ऐ कछुऐ के हैं। ऐ कछुऐ ऊपर परदे अंधेरी के है। अंधेरा ऊपर, सुरैया के। आसमान और जमीन के लोगों की पहचान सुरैया (ज्योति स्वरूप) तोड़ी (तक) है, आगे नहीं पहुँचती।

अब कहो जी सात (7) तबके जमीन के ऊपर काँधे फिरश्ते के सो है, सो फिरश्ता कौन सा? और कदम फिरश्ते का ऊपर शिखर के कहा, सो शिखर कौन सा? और शिखर बैल के सींग पर कहा, सो बैल कौन सा? और कायमी बैल मछली की पीठ में कही, सो मछली कौन सी और मछली हौज कौसर की कही, सो हौज कौसर कौन सा? और मछली साबित दरिया पर सो साबित क्यों कर? और सो दरिया कौन सा? दरिया ऊपर दोजख के कहा, सो क्यों कर? और दोजख ऊपर कछुआ के कहा, सो क्यों कर? रू ऊपर परदे के कहा, सो परदा कौन सा? अंधेरा ऊपर सुरैया के कहा, सो क्यों कर। जमीन और आसमान के लोगों की पहचान सुरैया तोड़ी (तक) है,

लिए खुदा ने आयत भेजी कि ए पैगंबर ज्यादा अधिक ज्ञान शरियत (नियम) का सीखो! सो क्यों सीखने को कहा? यदि आप स्वयं पूर्ण है, तो किसलिये सीखा जाये? इसका विवेचन विस्तारपूर्वक कीजिए?

42. यदि कुल इल्म (समस्त ब्रह्मज्ञान) पैगंबर सल्ल० ही ले आये तो क्यों इल्ममें लहुन्नी (तारतम ज्ञान) के जरियें (द्वारा) कुरान पाक के रहस्य जाहिर होने के शर्त (वचन) रखा। तथा क्यों पैगंबर सल्ल० को अधिक ज्ञान सीखने के लिये खुदा तआला से निर्देश प्राप्त हुआ?

43. पार: तीसरा (3) में कितने प्रकार की खल्कत (प्राणीयों) की

आगे नहीं सो क्यों कर।।

सिपारा सतरहवां (17) पन्ना 214 वरक 431 व मा अर्सत्ना- और नहीं भेजया। मैं मिन कबूले का, आगे भेजने तेरे मिन रसूलिन् और कोई विलान, बीयिन्- और न भेजया मैं आगे तेरे कोई पैगंबर न कोई नबी। बीच फ़र्क नबी के और रसूल के एह है- कि रसूल साहेब शरिअत का है और नबी उसके ताबें है बीच शरा के जैसे कि लूत बीच शरीअत इब्राहीम के दावत करता था। और ऐसे ही याहया और मूसा और शमऊन और ईसा अलैहिस्सलाम। या रसूल बुलावने वाला है, बीच शरिअत खास के, और नबी आम है रसूल के। और कहा कि रसूल वह कोई, कि जमा करे मोजिजों को या किताबों को कि उतरी सो ऊपर उसके। और नबी छोटा रसूल होवे कि किताब उस पर न उतरी होंवे। और कहते हैं कि रसूल वह होवे कि फिरिश्ता वास्ते उसके वहीं तले ल्यावे। और नबी वह होवे कि आवाज एक सुने या इल्हाम होवे, ऐ ख्वाब देखे पस हर एक तकदीर के हक तआला फरमावते हैं कि कोई रसूल और न कोई नबी के ताई भेज्या मैंने।।

सवाल- एह सवाल मुकरर करना। कि इहाँ तो कहा कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम बगैर न कोई रसूल भेजया है, न कोई नबी भेज्या हैं मैं। और इसी सुकन (संकेत) में कहा है, जो रसूल नबी लूत, इब्राहिम, याहया, मूसा, ईसा, शमऊन- छः (6) नाम तो इसी में आये हैं। और के पैगंबर आये कहे। जिनकी मिसलों तिनकी। गिरोह तिनके कलमे जुदे-जुदे तिनकी बुजरकिया ऐती तिनको न भेज्या। कहा सो क्यों कर? ए दोनो कौल कलामुल्लाह के, तिस वास्ते सो तो

उत्पत्ति का वर्णन है तथा आप उनमें से किस में आते हैं। विस्तारपूर्वक व्याख्या कीजिए?

44. पार: अट्ठारहवां (18) के अनुसार सफेद बादलों के नीचे सात (7) आसमान (आकाश) है। क्रियामत के दिन वह आसमान टुकड़े-टुकड़े होंगे। क्योंकि बादल तो आसमान के नीचे होता है तो फिर यह बादल कौन सा है जो कि आसमानों के ऊपर कहा गया है? इतना विशाल बादल क्यों कर कहा है?

45. पार: दूसरा (2) के अनुसार समस्त सृष्टि की रचना “कुंन” (हो

इख्तिलाफ न हो वे। ए दोनो कौल साबित रख के मायना मुकरर करना।

सिपारा गयारहवां (11) यातजरन पन्ना 126मों लिखा है “व मा कानन्न सो-” और न थे आदमी। “इल्ला उम्मतन् वाहेदन्-” मगर उम्मत एक बेगानी अपनी। एक बात पर सवाल है। ऊपर दीन इस्लाम के। बीच जमाने आदम अलैहिस्सलाम के या पीछे होने तूफान के कि बगैर नूह अलैहिस्सलाम और चलावने वाला किशती का कोई न था। या इत्तफाक करने वाले थे, ऊपर कुफर के बीच जमाने पैदा होने इब्राहिम खलीलुल्लाह के, सलवातुला व रहमान व सल्लम। फिखतलूफ। पीछे-बेफुरमानी की उनों ने सबब पैदा होने रिसालत के, याने बाजे ईमान ल्याये और बाजे ऊपर कुफर के रहे। या अरब के रहने वाले ऊपर दीन इस्माइल अलैहिस्सलाम के मातहत-याने कबूल करने वाले थे, पीछे बेफुरमान हुए, सबब दीन याहिया के से हुक्म जाहिलियत के झूठ पैदा किया।

सवाल- अब कहो जी आदम से नूह के तो तूफान तोड़ी एक गिरोह थी ऊपर दीन इस्लाम के और सब कुफर पर थे, बीच पैदा होने इब्राहिम के बीच जमाने पैदा होने रसूल के से बेफुरमानी की, बाजे ईमान लयाये, बाजे न लयाये, ऊपर कुफर के रहे। इस मुद्दत ताई के मुसलमान कोई न थे, इस्माइल ऊपर ईमान ल्यावते थे, सो वे भी बेफुरमान हुए, सबब दीन याहिया के से। रसूल साहेब आये इतने तोड़ी (तक) कोई मुसलमान न था। तो इतने जो पैगंबर पहले हो गये, तिनों ने कितने को पैगाम दिया। किनो कौन समझाये इहाँ तो कहा कि मुसलमान मुतलक कोई न था, सब कुफर ऊपर थे, कहे सो क्यों कर। अब इतने पैगंबर आये कहे, तिनों ने पैगाम दिया कहा,

जा) शब्द से कही गई है। तब मलायक (फरिश्ते) रूहें (ब्रह्मात्माएँ) जो संसार में अवतरित हुई हैं। सो कौन सी है? तथा कहाँ पर है?

46. पार: तीसवां (30) के अनुसार लैल-तुल-कद्र (ब्रज, रास, जागनी) के तीन तकरार (विवाद) कौन-कौन से हैं? जिसमें रूहें (ब्रह्मासृष्टियाँ) व फरिश्ते (ईश्वरी सृष्टियाँ) उतरे हैं।

47. पार: चौबीस (24) में वर्णन है कि दज़्जाल (कलियुगी दानव) की पातसाही समस्त जंगल, दरिया (सुमुंद्र) में होगी। सब इसके हुक्म (आदेश) के आधीन कहे हैं। तो दज़्जाल (दानव) के आधीन कौन है? तथा दज़्जाल की लम्बाई-चौड़ाई ज़मीन से आसमान (आकाश) तक

सो भी साबित रखना। और इतने बीच मुसलमान कोई न था, सो भी साबित रखना। मायना दुरूस्त करना?

सिपारा बारहवां (12) वमा मिन दाब्बमिन पन्ना 29 में लिखा है-कील यानूहो-कहा गया है नूह हबित- तले ऊपर किशती से बेसलामिन्- सलामती से, हासिल मेरी दरगाह से, मुझसे तो आब से या सलाम से या तोहफे ऊपर तेरे हैं, व बरकातिन्- और बरकतें बहुतक अलेके- ऊपर तेरे बीच नसल तेरी के। आदम सानी याने दूसरा होयगा बीच निस्बत। आदम के बीच तेरे के हैं, न कि एह है किशती के लोगों से छूट नूह अलैहिस्सलाम और उसके बेटे पीछे कोई न रहा, और तमाम पैदाश आलम के लोकों की ऊपर इन तीन शख्सों के मुकरर होती है। साम चाँद अरब और फारस का। याफिस चाँद तुर्कों का। हिसाम चाँद हिन्द का।

सवाल- अब कहो जी ऐ तीनों ठौरों के तीन चाँद जुदे-जुदे कहे, जिन तीनों से दुनिया की पैदाईस कही।। अब अरब और फ़ारस का चांद साम कहा, सो कौन सा? और याफिस चांद तुर्कों का कहया सो कौन सा? और हिसाम चांद हिन्द का कहा सो कौन सा? ए तीनों ऐसे बुजरक कहे, जिनसे दुनिया की पैदाईस कही सो छिपे क्यों कर रहे?

सिपारा सोलहवां (16) काल अलम् अकुलुलूका सूरत ताहा, पन्ना 95 वरक 201 फतआलल्लाहो- पीछे बरतर है खुदा बुजरक बरतर को सिफ्त पैदाईस की से, बुजरकतर है कौल मुशरिकों के- अल्मलिकुल्ह-कूको-याने पातशाह जारी

कही है। कि सातों समुद्र का पानी भी इसकी जंघा (जांघ) को छूँ नहीं सकता? ऐसा विशाल दज्जाल (दानव) अपने कद के समान ही गधे पर बैठेगा, सो किस प्रकार से तथा किस स्थान पर बैठेगा?

48. पारः पहला (1) में वर्णित है। खुदा तआला (परब्रह्म स्वामी) जिसे चाहता है। शोभा, मान देता है। तथा जिसको चाहता है। अपमान देता है। सो क्योंकर? इब्ने इस्लाम (निजानंद संप्रदाय के वारिस) कौन है? जिनको तूफान के वक्त किशती में बचाया था। कुरान-पाक के अनुसार वह गिरोह नाजी (मुक्त) कही गई है?

49. पारः दूसरा (2) में जिनको आसमानी किताब (दिव्य ग्रंथों के

करने वाला हुक्म साबिती का बीच जात के, और सिफ्त अपनी के, या लायक के, बीच सिफ्त तमाम के, और वही है बुजरक तआला। ल्यावते हैं जो जिबराईल अलैहिसलाम को बीच वही के नाजिल किया, आयत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलैहि व सल्लम पर, कही उस वक्त वह दरगाह आगे तमाम होने उस आयत के, बीच दरगाह के दहसत उस से मगर कजा होवे या भुलावना करे जिबराईल बिल कुरआने-याने सिताबी मत फरमावे बीच किरअत कुरान के, मिन कब्ले अइयुक्जा।। आगे उस सेती कि अदा किया जावे। “इल्क वज्हेई”। ऊपर तेरे वही ल्यावता।। “मावरदी” फरमावता है कि “सुल ना जि कुरान” का मत करे आगे उस सेती कि वही आवे। और कहते हैं कि भेद कुरान का मत पहुँचावे ऊपर खलकों के, तब ताँई के बयान उसका ऊपर तेरे आवे। बीच जादल मिसल के कौल इमाम हसन बसरी का रहमत हूजो, खुदा की, कि एक मर्द ने औरत अपनी को तमाचा मारा, वह आगे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम के आई, और बदला उसने तलब किया, उस वक्त चाहे कि बदले का हुकम करे, कि एह आयत तले उतरी कि हजरत रिसालत पनाह बीच उस हुक्म के ढील करने वाले हुए। एह आयत उस बाब को नाजिल हुई “आरिजालो कोवासून अलनिन्साये”।। नाजिल हुआ ऊपर इन बातों के कि हुक्म मत करे बीच कुरान के, याने जब वह उतरे तब हुक्म कुरान का कीजो। व कुल रब्बों-कहो ए परवर दिगार मेरे “जिदू दी इल्मन्”- ज्यादा कर मेरे ताँई दानाई-हुक्म शरा का साथ कुरान के मायने के। या मायने उसके ज्यादा कर बीच याद मेरे। तो चलावना करूँ मैं जो कुछ एक मेरे वहीं

अनुयायी) वाले कहा है। जिनको बातिनी (भेद) मालूम (जानकारी) है। वह कौन है? तथा हब्सा का पातसाह कौन है? जिस पर तीस (30) प्रकरण उतरेंगे? जिसके हाथ आखिरत (महाप्रलय) का हुक्म है।

50. जबूर दाऊद पैगंबर पर, तौरेत मूसा कलीमुल्लाह पर इंजील ईसा रुहुल्लाह पर कुरान-पाक, मुहम्मद रसूलुल्लाह पर आया है। प्रत्येक इस सच्चाई को जानता है। यह किताबें (धर्मग्रंथ) पुनः अवतरित हुई तो, इसका स्थान कहा पर स्थित है?

51. पारः चार (4) अनुसार बनी इस्राईल के वंश में पुनः तौरेत, इंजील अवतरित हुई है तो यह बनी इस्राईल कौन है? जिससे इमाम-ए-जमाना

कर तूँ यादे मेरे ताई दानाई पीछे मालूम के बीच, लतायफ केसरी के नकल, याने जिकर है कि हजरत मूसा अलैहिस्सलाम ने ज्यादा इल्म तलब किया उनके ताई रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ताबे न किया, पीछे तबके पैगंबर मेरे ने ज्यादा चाह रखी और हवाले और के न किया, तो मालूम होय मगर वह कि बीच मक्तब अदब के, अहबनी रब्बी फअदसन तादबी सबक-याने सिखलाया मेरे ताई अदब खुदा ने पहले “बकाल रब्बे जिदनी इल्मन” – कहा ए परवर दिगार निदनी, ज्यादा कर मेरे ताई इल्म पढ़ा कर तहकीक बीच पढ़ने की जगह के व आलमक मालूम तुकून तालम-याने पहचान दी मेरे ताई जो कुछक कि न जानता था, पहचान से नुक्ता याने भेद फअहिम्तो इल्मन अव्वलीन वल आखिरीन-पस पहचान दी मेरे ताई पहचान अव्वल और आखिर के से बीच काम अकल के वे जो फायदा रखने वाले भेद कहे हैं पैदाईश से कैसे पहुँचाये, कहते हैं कि पहचान पैगंबरों को और औलियाओ की बीच दिल उसके रोशन दे, मानिंद आफताब रोशन के आलम को सिखलावने वाला खुदा एक होवे पहचान उसकी बहुत तमामों से होवे, व तबद अहिदना-पस तहकीक कि वही भेजी “इलाआदम”। तरफ आदम सफ़ीउल्लाह के॥

सवाल- अब कहो जी, औरत एक फरियाद आई, वास्ते तमाचा मारा खसम ने, तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम ने जाना कि हुक्म करें, तब आयत खुदा से आई कि हुक्म मत करें, जब तोड़ी (तक) कि वह आवे, तब कीजो, और इल्म ज्यादा सीखो। तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम

विजयाभिनंद बुद्ध निष्कलंक आखरूल इमाम महंमद महदी रूहुल्लाह (श्री जी साहिब जी) अवतरित हुआ है।

52. पार: तीस (30) “इन्ना इंजलिना” में लिखा है कि बनी इस्राईल ने हजार (1000) महीने तक बख़्तर (सुरक्षा कवच) पहना, वास्ते दीन (धर्म) की सच्चाई प्रकट करने के लिये। तो वह उम्मत (अनुयायी) कौन सी कही है? तथा वह सत्य धर्म कौन सा कहा गया है?

53. पार: चार (4) में वर्णित है कि बनी इस्राईल (यहूदीयों/हिंदुओं) में कुरान के भेद इमामे जमाँ (श्री जी) प्रकट करेंगे तो वह कौन है तथा इसके विद्वान प्रचारक कौन लोग है?

ने दानाई ज्यादा माँगी खुदा तआला सेती, कहा कि कुरान के मायने सेती शरा हुक्म मेरे से होय, ज्यों न भूलूँ। तब मूसा अलैहिस्सलाम ने ज्यादा इल्म तलब किया सो, तो आखिर तोड़ी (तक) सब इल्म शरा और किसी के ताबे न किया।। अब कहो जी, एक तमाचे की फरियाद का हुक्म रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को खुदा तआला ने करने न दिया सो क्या? कोई करेगा कि तिस वक्त रसूलिल्लाह सल्लल्लाहों अलैहि व आलैहि व सल्लम के पास पूरा इल्म न था। सो क्या सोलह (16) सिपारे आये तब तोड़ी एता भी इल्म न था जो एक तमाचे के बदले का हुक्म करें। इसका मुक़रर करना। मूसा अलैहिस्सलाम ने ज्यादा इल्म तलब किया, जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम के ताबे हुआ। जिन सेती रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलैहि व सल्लम ज्यादा इल्म सीखें सो क्या।। ए मूसा कौन सा? मूसा तो हजरत ईसा अलैहि स्सलाम के आगे हो गये हैं। तिन ईसा के पीछे रसूल अलैहिस्सलाम आये, तिस पीछे मूसा रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व आलैहि व सल्लम के ताबे हुआ सो क्यों कर। और मूसा सेती रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम ज्यादा इल्म दानाई सीखें, सो क्यों कर।। ए मायने सब मुक़रर करना।। सिपारा तीसरा (3) तिलक़रसूल पन्ना 13 वरक 45 में बयान है कल्ब- दिल मेरा बीच देखने के कि किस भाँति से एक वह कि कुसादे होने के, कि जिक्र किया गया के कहया- याने जिंदगानी किस भाँति से होवे। जैसे कि खलकों का कि बाजें कलमें कुन के से मौजूद हुए। और थोड़े हाथों से। और थोड़े के बेदीन के पैदा किये और एक जमात इब्तदाय से मौजूद ल्याया। और एक

54. पारः दूसरा (2) में वर्णित है कि तालूत-समनून पातसाह का प्रकरण है। तो यहूदियों का पातसाह तालूत को कहा गया है। तब वह तालूत कौन है? क्यों कि पूर्व का प्रकरण तो कुरान पाक से रद्द है। तो वह बनी इस्राईल (यहूदी/हिंदू) कौन है? जिनमें पैगंबर भेजने का वायदा (वचन) खुदा (परब्रह्म) ने कुरान पाक में दिया है!

55. पारः ग्यारहवां (11) में वर्णन है कि मुहम्मद सल्ल० पर मोज़िज़े (ईश्वरीय चमत्कार) अवतरित हुंए। जबकि बनी इस्राईल कहते थे, कि मोज़िज़े नाज़िल (प्रकट) नहीं होते हैं। तब आयत आई कि यह मोज़िज़े खुदा तआला (परब्रह्म स्वामी) की कृपाएँ हैं। तो वह मोज़िज़े क्या है?

तबके को सब खिलक्त और के से पैदा किया ॥

सवाल- अब कहो जी बाजे कुंन से पैदा हुए सो कौन से? और थोड़े हाथ से पैदा हुए सो कौन से? और थोड़े बेदीन के पैदा किये सी कौन से? और एक जमात को इब्तदाय से मौजूद ल्याये सो कौन? इन पाँच (5) भाँति की पैदाईस का तहकीक मुक़र्रर करना ॥

सवाल- सिपारा अट्ठारहवां (18) कद अलमोमिनून मों पन्ना 17 मों बयान है। वयम। याद कर रोज एक के ताँई कि उस बीच. योमे तसफकुसमाआ-दो (2) टुकड़े होवें आसमान। बेलगमी में। सबब बादल सुपेत (सफेद) के से कि ऊपर सात (7) तबकों के आसमान के हैं। और चौथा (4) ए उसका ऊपर सब आसमानों के हैं। और वह भारी तरह सब आसमानों से। खुदा तआला ने आज उसको कुदरत सूँ। नागा रखा है। रोज क्यामत के उसके ताँई आसमान पर डाले। ऊपर जिस आसमान के पहुँचे- वह आसमान दो (2) टुकड़े होवे ॥

सवाल- अब कहो जी, बादल तो आसमान तले होता है। और एह बादल तो आसमान के ऊपर कहा। भारी तर सारो सो बड़ा सब आसमानों को तोड़ेगा। सो एह बादल कौन सा ?

॥ सिपारा तीसवां (30) आम सूरत इन्ना अंजलना मों लिखा है कि लैल तुल क़द्र के (3) तीन तकरार मों उतरे हैं, मलायक और रूहें बक्त फजर के बीच आखिर का हुक्म इनके साथ होयगा ॥

56. सूरत बनी इस्माईल (इस्माईली वंश) के कहा गया है कि मुहम्मद सल्ल० पर मोजिजे (ईश्वरीय चमत्कार) नाज़िल प्रकट हुऐ है तो वह बनी इस्राईल कौन से है?

57. पार: पहला (1) के अनुसार तौरैत को कुरान पाक से रद कर दिया गया तथा कुरान के रहस्य छिपे रहे, उम्मत से एक अनुयायी गिरोह से रहस्य छिपे रहे, दूसरी गिरोह के द्वारा भेद प्रकट होंगे। तो वह गिरोह (संप्रदाय) कौन सा है?

58. पार: चौदहवां (14) में वर्णित है कि खुदा (परब्रह्म) की रूहों (ब्रह्मसृष्टियों) से एकदिली कही है। परन्तु रूहों के (ब्रह्मात्माओं)

सवाल- सिपारे दूसरा (2) में लिखा है कि सब पैदा कुंन से हुई तो ए जो मलायक और रूहें अर्श से उतरी कही सो कौन सी।? क्यों कर? और तीन (3) तक़रार लैल तुल कद्र के कहे सौ कौन से? इन दोनों सवालों का मुकर्रर करना।

सिपारा चौबीसवां (24) वायालसून बरक 218मों लिखा है कि दज्जाल की पातशाही जंगल और दरिया सबको पहुँचेगी। आब बोय सब उसके हुक्म सों चलेगी। और दज्जाल को आदमी कहा। और पैदाईश दज्जाल की जमीन आसमान से बड़ा कहा। और हदीसों मों कहा कि दज्जाल का गधा ऐसा बड़ा है जो सात (7) दरियाओं फिरते, तो पानी उसकी रान ताई न पहुँचे। तो ऐसा बड़ा सो गधा तिन पर कद कर बड़ा कहा। दज्जाल जमीन और आसमान सेती। सो उस गधे पर असवार होयगा सो जमीन आसमान के बीच क्यों कर के समावेगा और कहा कि असवार होयगा सो तो कौल कलामुल्लाह का बरहक सो तो इख़्तिलाफ होवे नहीं, तिस वास्ते इन सवाल का मायना मुकर्रर करना।

पन्द्रहवां (15) सिपारा। सुब्हानल्लाजी आलिफ रे लाम मीम पाना 70 वरक 17 मों बयान है वला नसीरिनु।। और न कोई यारी करने वाला जाहेर यह खिताब हजरत के साथ है और मायने इसके रूजू करने वाला साथ उम्मत के है। अल्लजीन-वे कोई कि, आतेना हमुल्किताब-बख्शीश किया मैं इनों के ताई किताब याने तोरैत और कौल एक से आयत बीच इब्ने इसलाम के मर्तबे और असहाब उसके होवे या इंजील कौल एक से असहाब के मरातबे यानि साहेब किशती के होवे मिलने वाले नज्जासी के साथ जाफ़र बेटा अबू तालिब के, राजी हूँ जो खुदा उनके

संसार में अवतरित होने के कारण फरिश्तों (ईश्वरी सृष्टियों) को सहयोग के कारण साथ भेजा है, तथा कहा कि केवल मेरी ही बंदगी पूजा करना, अन्य किसी की नहीं। तो वह रूहें (ब्रह्ममुनि) कौन सी है तथा फरिश्तें कौन से हैं?

59. हज़रत ईसा रूहुल्लाह (देवचंद जी) के दो (2) जामा हरा हुल्ला (आलौकिक वस्त्र), सफेद का क्या रहस्य है तथा चालीस (40) वर्ष इल्में लहुन्नी (तारतम ज्ञान) का खज़ाना (ब्रह्मज्ञान की संपदा) बटँने (वितरित) का क्या सबब (कारण) है?

60. पारः छठा (6) में लिखा है कि हज़रत ईसा रूहुल्लाह (देवचंद जी)

और यार हब्सः के बीच मदीने के आये कुरान कौल एक से कि आयतें बीच मर्तबे मुसलमानों के उतरी होय ऊपर हर एक भाँत के यतलूँ-- पढ़ते हैं उस किताब के ताँई या कुरान की फरमान-बरदारी करते हैं या पैरवी करते हैं हक तिलावते ही - जैसे कि हक पढ़ने का है या पैरवी करने का है। उलायक-- वे गिरोह यू मिन नविही- ।। ईमान रखते हैं किताब से नहीं वे कोई कि मुँह फिरावना करते हैं। वे मैंय कुफर बिही-जो कोई काफिर होवें किताब और हुक्म इनके ताँई तागीर देवे। पस लायक- पीछे वह गिरोह हुमुल्खासिरून - यह है बयान करने वाले ।।

सवाल- अब कहो जी, इब्ने इस्लाम के मर्तबे कहे, और साहेब किस्ती के कहे, जो साहेब इंजील के कहे, एक कौल के। और उतरी आयते कुरान के बीच मर्तबे इस्लाम के। एक कौल कि दी, जिनको तौरेत जिसकी पहचान सूँ कुरान को पढ़ते हैं, उस किताब से फरमाबरदार करते हैं कुरान की और दीन की और ईमान रखने वाले मिलने वाले निज्जसी के यार हब्सः के साथ जाफर बेटे अबू तालिब के जिअल्लाह-काफिर होवे जो फिरे इनसे जो बयान करे आपको ।। अब एक गिरोह कही जिनको दी तौरेत बराबर कुरान के। एह कौल से कही, सो ए तौरेत कौन सी? और ए गिरोह इब्ने इस्लाम के मर्तबे कही, सो ए गिरोह कौन सी? वो मिलने वाली निज्जासी की, और ईमानदार। और तौरेत अंजील और फुरकान इन पर नाजिल कही। सो ए कौन सी गिरोह?

सिपारा तीसरा (3) तिलकरसुल, वरक 55 पन्ना 56, सूरत आले इमरान, अल्लजी जों कही है याने उस्तवार तारीफ करने वालों को, मगर ऊपर भाँत हुक्म के,

उम्मत मुहम्मदी (निजानदी संप्रदाय) में आवेगा जो सबका कुफ्र (कृत्त्रनता) तोड़ देगा। तो समझाईये! कियदि आखिरी (अंतिम) पैगंबर (अवतार) मुहम्मद सल्ल० (रसूले अरबी) को कहा गया है। तो फिर ईसा रुहुल्लाह (देवचंद जी) क्या करने आयेगे। इससे क्यामत (महाप्रलाय) किस प्रकार होगी? इस भेद को विस्तारपूर्वक कहिएगा?

61. कुरान-पाक में जगह-जगह लिखा है कि खुदा (परब्रह्म) शहरग (हृदय धमनी) से भी निकट है। फिर जिब्रील (जोश शक्ति) क्यो बार-बार खुदा (परब्रह्म) और रसूल (ईशदूत) के बीच संदेश लेकर आता है? क्या खुदा, परब्रह्म रसूल (ईशदूत) से दूर है? तो दुनिया में शहरग (हृदय

क्योंकि सब हुक्म किये गये हैं उस पर कि एक जानना और एक जानने वाला और सिफ्त तारीफ करने वाले की ऊपर मुँह हुक्म के सब हुक्म बरदार है सिवाय खुदा बीच जाहिर करने कलमा तौहीद के अल हकीम।। दाना है बीच शाहिद वहदत अपनी के।। इमल्लजीन बदुरुस्ती-कि दीन कबूल किया, इन्हल्लाहिल इसलामो-नजीक खुदा तआला के सेती, दी मुसलमानी काहे न जहूद को न नसारों को, वमखतूलफल्लजीन- और खिलाफ नहीं किया है बीच दीन मुसलमानी के किहक है और मुहम्मद पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम बरहक है, अतुल्किताब - दी है, इनके ताई तौरेत और इंजील, इलामिन् वादे माजाअहुमुल्दिल्मो, - पीछे उसके आया, इनको दानाई बीच हकीकत के हुक्म याने कुरान ऊपर इनों के आया कुरान माफिक आकीन के किताब इनों के, वह कि उन्होंने इब्तदाय के इख्तलाफ किया है। बगमन् बैन हुम-मुँह डाला हक से या जुल्म के से कि दरम्यान इनों के है मैल याने सिरदारी जेर बुजर्गी हुक्म की।।

सवाल- अब कहो जी, जिनको कहा कवि और गालिब। सो मना करने वाला है, दाना है बीच जाहिर करने वहदत अपनी के और दीन कबूल किया है, नजीक खुदा तआला के सेती, न किसी और सेती इख्तिलाफ नहीं किया है, दीन मुसलमानी का और मुहम्मद पैगंबर बरहक किया, दी इनों को तौरेत जिन सेती दानाई पाई हकीकत के हुक्म आया जिन पर कुरान माफिक आकीन के किताब इनों की कही सो ए कौन सी गिरोह? जिनकी सेती बुजरकी कही जिन पर कुरान का हुक्म आया, कुरान माफिक आकीन के किताब आई, जिन सेती दानाई पाई सो कौन? और इनके

धमनी) से भी निकट क्यों कहा गया है?

62. पार: सत्ताईसवें (27) के अनुसार खुदा (ईशदूत) ने अपने नूर (आभा) को छिपा लिया था। सो किस प्रकार व क्यों कर?

63. मेअराजनामे के अनुसार पैगंबर रसूलुल्लाह का कदम (पवित्र चरण) मस्जिद के दरवाजे के निकट पड़े पत्थर पर पड़ा। तब पत्थर ने कहा कि मैं यहाँ सत्तर हजार (70,000) वर्ष से पड़ा हूँ। तथा अब किसी के पैर मुझ पर नहीं। पड़े। जबकि दुनिया की उम्र तो कुरान-पाक अनुसार केवल सात हजार (7,000) वर्ष ही कही है। यह क्या भेद है समझाईयें?

64. पार: पाँचवा (5) के अनुसार इब्राहिम पैगंबर के वंशज दाऊद, मूसा,

दरम्यान बुजरक गिरोह चाहे सिरदारी और इख्तिलाफ किया कुरान और तौरैत सो मुँह किन से, जुल्म से, सो कौन?

सिपारा दूसरा (2) सयकूल पाना 92 वरक 20 मों बया न है इन्नक अबुरुस्ती-कि होवे तू इंजील उस वक्त कि पैरवी इनकी करे तू ले मिनज्जालेमीन। तमाम सितम करने वालों से जाहिर खिताब रूजू तेरे का साथ पैगंबर के जमा भावना रूजू होने साथ उम्मत के है। अल्लजीन- के कोई कि आतेनाहुमुल्किताब दी है, इनों के ताई तौरैत यारिफूनहूँ-पहचानते हैं कुरान के ताई और रौशन यह है कि पैगंबर के ताई वयामारिफून- जैसे कि पहचान हक तेरे का है, अबनाअ हुम। बेटे अपनों को बीच लड़कपन के पहचान तामें के रौशन रखते हैं बीच बाब सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम के।।

सवाल- अब कहो जी, जिनको जाहिर किताब रूजू होना साथ पैगंबर के, जिन सेती मायने रूजू होंयगे तमाम गिरोह पर व कोई कि दी है, जिन को तौरैत। रौशन एह होवे कि पहचानते हैं, कुरान को और पैगंबर के ताई, जैसे कि पहचानने का हक है।

।। सिपारा 4 लन्तला वस वरक 87 पाना 177। वमा इन्दल्लाहे-जो कुछ के नजीक खुदा के है भलाईयाँ और मेहेरबानियाँ छिपियाँ खेरुल्लित् अबरारे।।

बेहतर है नेककारों को मता फ़ानी दुनिया के से व इन्नमिस्मन् अहिलिल किताबें-तहकीक के अहले किताब, ल मेयमिन्-कोई है पकड़ता है बिल्लाहे-खुदा से, व मा उन्जिल इलैकुम्-जो कुछ के तुमारे ऊपरा उतरा हैं, कुरान वमा उन्जिल

ईसा पैगंबर कहे गये हैं। तो दाऊद पैगंबर के द्वारा निर्मित की मस्जिद सत्तर हजार (70,000) वर्ष पुरानी किस प्रकार क्यों कही गई है?

65. मेराजनामे में लिखा है कि पैगंबर मुहम्मद सल्ल० ने कल्मः इशारात (संकेत) से कहा तथा दरवाजे खुल गये तो देखा कि दरिया रहमत (कृपा का समुद्र) के किनारे दरख्त (वृक्ष) पर एक मुर्ग (पक्षी) अपनी चोंच में खाक (राख) लेकर बैठा है। तथा पल-पल कहता है कि अगर मैं खाक छोड़ूं तो कैसे छोड़ूं? क्योंकि खाक के छोड़ते ही संसार में अंधेरा हो जायेगा सो यह क्या रहस्य है?

इलेहिम्-उनों के ताई के उनों पर भेजी है, तौरैत और इंजील मुराद इब्ने इस्लाम है। और असहाब उसके वह निज्जासी, याने वह पातशाह के हब्सा का था और पैरवी करने वाले उसके अर्श इन लिल्लाहो- बीच उस हाल के कि डरने वालों से या महल वाले खास खुदा से, ला यशतरन-बदला नहीं करते हैं। बेजा याल्लिहे-हुकम तौरैत के साथ सिफ्त पैंगबर के सामनून् कलीलन्- वास्ते मूल्य थोड़े के फायदा दुनिया का ऊपर नफा आखिर के से, जो कि रिश्त का खाने वाला उलायक में गिरोह मोमिन खास किये गये।

सवाल- अब कहो जी, जो कुछ नजीक खुदा के भलाईयाँ और मेहेरबानियाँ छिपियां बेहेतर हैं नेक कारों को जो तहकीक तीन किताबों के अहल कहे खुदा सेती पकड़ा हो, जिसने कुरान और भेजी जिसको तौरैत और इंजील जिनकी मुराद इस्लाम है, फिरे नहीं हुक्म तौरैत सेती और पैंगबर सेती वह गिरोह खास मोमिन महल वाले खास खुदा से, एह जो गिरोह इस सिफ्त के मोमिन जो पातशाह हब्सा का तिनके यार निज्जासी के हैं। जिनको ये तीन किताबें कहीं तब ए किताबें कौन सी? और ए पातशाह और इनके यार सो कौन से? वह कहाँ है? जिनके हाथ आखिरत का नफा कहा।।

सवाल- अब कहो जी, कुरान तो रसूलिल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम पर, तौरैत मुसा पर, इंजील ईसा पर, सो तो दुनिया सब कोई जानती है और ए तीन किताबें एक ठौर मेहेरबानी एती खुदा की छिपी उतरी है जो आखिर की कही

66. अतः समझाईयें कि :

- (क) दरिया रहमत (मेहरसागर) कौन सा है?
- (ख) दरख्त पर मुर्ग (पक्षी) कहा सो कौन है?
- (ग) मुर्ग द्वारा खाक (राख) छोड़ने से संसार में अंधेरा क्यों हो जायेगा?
- (घ) मुर्ग दरिया (सुमुद्र) का सो क्या है?
- (द) दरिया में कभी अंधेरा क्यों नहीं होता है?
- (ज) जहाँ जिब्रील (जोश शक्ति) नहीं पहुँच पाया तथा उनके पंख जलने लगे वहाँ पर मुर्ग (पक्षी) क्यों कर कहा?
- (अ) जिस चोंच में खाक (राख) कही सो खाक क्या है?

खास उम्मत सो जाहिर क्यों नहीं हुई? ए दोनों तरफ के सवाल साबित रख के मायना मुकर्रर करना?

सिपारा चार (4) लन्तला वरक 85 में लिखा है मिन् अजूमिल उमूरे-बेहेतर है उस्तवारी उन कामों से वे काम जो दीन के हैं और दुरुस्त निशानी उनकी साँच एह इमाम है, वइज अखजल्लाहो-याद कर ऐ मुहम्मद उन किसी को पकड़ा है खुदा ने, मीसाकल्लीजीन कौल-और कौल वे कोई अतुल्किताब-याने बख्शी है उनके ताई तौरेत और इंजील, उल्मा बनी इसराईल के का, कौल एह है, लतुबेये नुनूह तहकीक बयान करो, लिन्नासे वास्ते आदमियों के किताब के बीच खास मुहम्मद के है ।।

सवाल- अब कहो जी, बेहतर उस्तवार काम दीन के जिनके ताई पकड़ा है खुदा ही याद करवाता है जिसको खुदा, रसूलिल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम पे, जिन के ताई तौरेत इंजील दी। ए जो बनी इसराईल के उल्मा कहे सो कौन से?

सिपारा चार (4) लन्तना लु पाना 119 वरक 177 में बयान है अहलुल किताबें- कि उलमा बनी इसराईल के ऊपर पैंगबर आखिर जमाने के ताई उतरया याने कुरान, तकाना-अगर इन पर हो सिदक और इमाम खैरल्लहुम्- बेहतर है उनके ताई जो सिदक ल्यावे कुफर से और इन्कार से ।।

सवाल- अब कहो जी, ए बनी इसराईल के उल्मा पर उतरया आखिर जमाने का

67. मेअराजनामें में लिखा है, कि रसूल के साथ जिब्रील सिद्रतुलमुंतहा (अक्षर धाम) से आगे न चल सके। तथा रसूल के हुक्म से चलने पर उसके पँख जलने लगेंगे। तब रसूल के लिये अस्माफील (जाग्रत निजबुद्धि) आया, तत्पश्चात् रफ़-रफ़ (इश्क) के सिंहासन द्वारा हुज़रः (मूल मिलावा) में पहुँचें तहां पर रद-बदल (वार्तालाप) किया। तो फ़िर जिब्रील कहाँ से आयतें-सूरते लेकर आया। क्यों कि जिब्रील तो अर्शे मजीद (परमधाम) जा नहीं सका। इस प्रसंग का क्या सबब (कारण) है। विवेचन कीजिए?

68. मेअराजनामें में ही लिखा है कि खुदा तआला (परब्रह्म स्वामी) ने

पैंगंबर और कुरान। जो कोई उन पर ईमान ल्यावेगा बेहतर है उनको। सो बनी इसराईल कौन से? और उसके उल्मा कौन से?

सिपारा तीसवां (30) सूरत इन्नाअंजलना मों लिखा है पन्ना 409 मों कि रसूलिल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम ने असहाब अपने को खबर दी, कि एक बनी इसराईल ने हजार (1,000) महीने बख्तर पहिना और लोहा बाँधे बीच राह खुदा के और लड़ाई की। असहाबों ने अचरज होय के कहा के हम इस ऊपर थोड़ी से इस दौलत को क्यों कर सके पहुँचें। जैसे कि एक बनी इसराईल ने बीच बाबत दीन खुदा के कोशिश की। खुदा तआला ने एह सूरत बीच बाब उसके भेजी, इन्ना अंजलनाहूँ। बदुरुस्ती कि भेज्या में कुरान के ताँई। निशानी ऊपर और के जिकर किया गया, याने दलील ऊपर मर्तबे जाहिर उसके करता है, के बीच बुजरकी अघावने के हैं याने खुदा तआला बुजरक है और अघाया है जाहिर और उतरना सिफत उसके का ऊपर अपने सनद दिया है बीच वक्त जैसे कि कहा है।।

सवाल- अब कहो जी ऐ बनी इसराईल कौन सा? जिनने हजार (1000) महीने लोहा बाँधे, कोशिश की खुदा की राह पर या दीन पर जिस पर उस सूरत नाजिल हुई। एह खबर रसूलिल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम ने यारों को दी। तब यारों ने यह खबर सुन के कहा कि हम इन मर्तब कों क्यों कर पहुँचे छोटी उमर से। ऐ बनी इसराईल कौन सा? जिनका मर्तबा सुनके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम के यार अबू बक्र सिद्दीकी और अली मुतर्जा, जिन यारों का मर्तबा आप जैसा कहा उन यारों ने कहा कि हम इस मर्तबे को क्यों कर पहुँचेगे?

कहा कि ऐ मुहम्मद! देख दाहिने हाथ तो मोती (मोमिन) नज़र (दृष्टिगोचर) आयें। जिनके मुख पर कल्फ़ (विस्मयता / कौतूहल) देखा। तब उनको निर्देश हुआ कि यह तेरी उम्मत (समुदाय) का दिल है। जिसका भेद (द्वार) तेरे दिल से ज़ाहिर (प्रकट) होगा। सो किस प्रकार तथा कहां भेद प्रकट होगा?

69. हे विद्वानो! निश्चय करके कहो कि दाहिने हाथ मोती कौन से कहे हैं? इनके मुँह पर कल्फ़ क्यों कर रहा है? उम्मत (सुंदर साथ) के दिल में क्या है? मुहम्मद साहिब के दिल को इनके भेद का द्वार क्यों कहा है?

70. हदीसों में जगह-जगह पर लिखा है कि ईसा रूहुल्लाह (देवचंद जी)

ऐ बनी इसराईल कौन सा? और कहा कि भेज्या में कुरान के ताई ऊपर और के, याने दलील ऊपर मर्तबे ज़ाहिर उसके करता है बुजरक है खुदा तआला और बुजरकी से अघाया है और उतरना सिफ़्त उसके का सनद पर अपने किया है ॥

सवाल- अब कहो जी, एक तो बनी इसराईल की इतनी बड़ी सिफ़त करी और दूसरी सिफ़त और की पैंगबर अलैहिस्सलाम ने अपने यारों को कहा और ऊपर उनके कुरान नाजिल हुआ और सिफ़त उनकी माफ़िक सिफ़त खुदा के कही वह मर्द कौन सा?

सिपारा पहला (1) सूरतुलबक सूर व अलिफ लाम मीम पाना 49 वरक ॥ मों बयान है ल यशतरू बिही-जो लेवे या बदला करे बीच बंदों के कलाम बिदी है, याने हरूफ़ और बाजे लिखते है समननू क्लीलन्-मूल्य थोड़े को, उल्माव जहूद वास्ते लेने सोहोबत के सिफ़त मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम की कही बीच इस तौरैत के इस भाँत होवे कि मर्द एक, नेक मुँह चोटी बाल उसके कि, रंग उसका गेहूँवा वरन, स्याह आँखे, ए आखिर जमाने का पैंगबर। जहूद कहा सो क्यों कर? और शख्स एक दराज कद सब्ज आँखे, सुपेत चमड़ी, तले डाले हुए बाल एक आँख के। ए दज्जाल ने साथ अपनी को कहा कि ए पैंगबर कौल किया हुआ कि नहीं?

सवाल- अब कहो जी, ए दज्जाल लानती जो इस आखिरी पैंगबर को नहीं मानता सो कौन? और ए आखिरी पैंगबर जहूदों में आया तिनसों मिलने का दज्जाल ने अपनी गिरोह को मना किये। सो दज्जाल के तौंक कौन से, जो इस तौरैत और इस

हिजरी दसवीं (10) सदी में आयेगें, चालीस 40, वर्ष तक पातसाही करेंगे। तो दसवीं (10) सदी को बीते हुए भी साल के करीब यानि तीन सौ सत्तासी (387) हो गये तो ईसा क्यो नही प्रकट हुऐ? क्योँकि कुरान तो बरहक (पूर्ण सत्य) है। यह भेद बताईये?

71. हदीसों में ही ऐसा भी लिखा है कि दसवीं (10) सदी में ईसा के आने के बाद ग्यारहवीं (11) सदी हिजरी में ज्यादा रोशनाई (प्रसिद्धि) फैलेगी। तो वह रोशनाई (ब्रह्मज्ञान प्रकाश) बारहवीं (12), तेरहवीं (13) सदी में अत्यधिक फैलेगी, सो क्योँकर? इस प्रश्न का उत्तर कुरान पाक, हदीसों से प्रमाणित करके कहियेगा?

पैंगबर को क्योँ नहीं मानते है?

सिपारा दूसरा (2) सयकूल पन्ना 166वरक 41 वकाल लद्म- कहा बनी इसराईल को नबीयो हुम-पैंगबर इनका, इन्ल्लाह-तहकीक खुद है। कद बअस लुकुम-तहकीक उठाया वास्ते तुमारे।

तालूत मलैकन्-तालूत के ताई पातशाह, कालू-कि मुँह दराजी के से अन्ना यकूनों-क्यों कर होवे, और कहा है लुहुरमुल्को-तालूत को पातशाही अलैना ऊपर हमारे व नहनों अहबको-और हम लायक तर है। बिल्मुल्के बेइस्मि। बीच पातशाही के गिरोह जहूदों का है।।

सवाल- अब कहो जी, पैंगबर बनी इसराईल का तहकीक खुदा कहा, उठाया वास्ते इनके तालूत पातशाह और गिरोह जहूदों का लायक पर पातशाही के कहे, जिन बनी इसराईल का पैंगबर खुद कहा, तिन सेती बनी इसराईल मजकूर आखिरत मों सिपारा ग्यारहवां (11) मिने कही है और ठौरों भी कही है। सो बनी इसराईल की गिरोह जहूदों की कही सो कौन सी? जिनकी इतनी बुजरकी कही।

सिपारा ग्यारहवां (11) बअलमूयात जस्म पाना 276तौल उनूजिल-किस वास्ते तले भेज्या न गया, अलेहे- ऊपर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम के, आयतुन मोज़िजे मिन् रब्बेही-उसके पालनहार से मोज़िजों से भागते हैं हम, और वह जारी होना मेहतरोँ का है और सिफ्त होना आसमान का उतरने आए, तो कैसे बीच सूरत बनी इसराईल के मजकूर होवेगा, जो चाहा खुद

72. हदीसों में लिखा है कि जो आदमी यह कहे कि मैं इमाम महदी हूँ। उसे झूठा जानियेगा। क्योंकि आख़रूल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज्जाँ, रुहुल्लाह (ब्रह्मात्मा, बाकी बिल्लाह (अनादि अखण्ड), हुज्जतुल्लाहु (अलौकिक तार्किक)'' (विजयाभिर्नन्दबुद्ध निष्कलंक अवतार) अपने मुख से नहीं कहेंगे कि मैं खुदा (परब्रह्म) का प्रतिनिधि हूँ। हदीस में ऐसा भी कहा है कि इमाम महदी (श्री जी साहिब जी) ईसा रुहुल्लाह (देवचंद जी) के बिना नहीं होगा, इसका क्या भेद कहा है?

73. किताब मिस्कात में कहा गया है कि ईसा (देवचंद जी), महदी (श्री जी) तथा दज़्जाल (कलियुगी राक्षस), दाब-तुल-अर्ज़ (विशाल

उनका बका है। फ़कुल- पीछे कहा बीच बाब इनके ए उतरना आयत मक्का के है, और बेशक है- इन्न मत् ग़ैबो लिल्लाहे- छूट इस नहीं के इल्म ग़ैब का खास खुदा के ताई है वह के बीच सबब उतरने आयतों के, के फेरा एह राह करने वाला बेराह होवे के फेर रखने वाले आयतों के ताई उतरने से।।

सवाल- अब कहो जी, बनी इसराईल कहता है, क्यों नाज़िल नहीं होते हैं? मोज़िजे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम पर कि खुदा तआला से उससे जारी होवे नहरें और सिफक होवे आसमान। **जवाब** हुआ कि आयतें और माज़िजे और इल्म ग़ैब का उतरना बेशक कहा है, ए छूट इस नहीं के इल्म ग़ैब का खास खुदा के ताई है, वह के बीच सबब उतरने आयतों के, फ़ राए तराह- करने वाले बेराह होवे के फेर रखने वाले आयतों के ताई उतरने से।।

सवाल- अब कहो जी, बनी इसराईल कहता है, क्यों नाज़िल नहीं होते हैं। मोज़िजे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम पर कि खुदा तआला से के उससे जारी होवे नहरों और सिफाक होवे आसमान। **जवाब** हुआ कि आयते और मोज़िजा और इल्म ग़ैब का उतरना बेशक कहा है, एक छूट खुदा और को नहीं। पहुँचे, और उतरने आयतों के से बेराह होवे तिनके ताई राह खुले और फेर रखे आयतों के ताई उतरने के से, ए सब मजकूर बीच सूरत बनी इसराईल के कहा सो बनी इसराईल कौन से? जिन पर इतनी बुजरकी ग़ैब से उतरी और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम और मोज़िजे ऊपर इनके नाज़िल हुए ए

दानव), याजूज़-माजूज़ (दिन-रात), सूरज मगरिब (पश्चिम) की तरफ़ से निकलना इत्यादि निशान, यह सब एक समय पर प्रकट होंगे। तथा हदीस में ही लिखा है कि इमाम महदी (श्री जी सहिब जी), ईसा (निजानंद स्वामी) के डेढ़ सौ (150) वर्ष बाद प्रकट होंगे। इसका क्या सब ब (कारण) है? इनका विवेचन एक साथ मिलाकर किस प्रकार कहेंगे समझाईये?

74. इमाम महदी (श्री जी साहिब जी) अपना नाम क्यों कर न कहेंगे? ईसा मुस्तदी (साक्षी) होंगे। इमाम साहिबुज्जमाँ के सत्य होने की तथा इमाम महदी (श्री जी) छोटी निशानी है और ईसा देवचंद जी की बड़ी

आखिरत में बनी इसराईल कौन से?

सिपारा तीसरा (3) तिलकर्सूल बरक 4 इल्ला बिमा शाज- मगर वे के चाहे उसके हाथ ल्यावने वाला होवे और उस रेती मले, बलअ-ऊपर पहुँचा गुंजाईश। पाई है कुसी ओहु-के रखी एक कि वह तले अर्श के हैं और तले आसमान के है या ऊपर पकड़ा है, इल्म उसके नस्सिमावते-सब आसमान और जो कुछ बीच उसके है, बलअर्ज-और तमाम जमीन और जो कुछ के ऊपर उसके है, वलायउकुहू-और उसके ताई बीच रंज के न डाले, और उस पर भारी न आवे हिफजोहुमा-निगाह रखना आसमान और ज़मीन का। बुवबल अतीयों-और वह बिलंदतर है, हदवतम-के से, अल अज़ीम।। बुजरक तर है फिकर समझ के से एह ऊपर आयत एक बुजरक तरह है आयत कुरान के से बीच हदीस के आया है, कि एह आयत के ताई जुबान एक है, पाक करे खुदा से पीढ़ी ताई याने पीढ़ी नजीक अर्श के खास और फजलाई उसकी बीच ख़बरों के बहुत है, ला इकरा:-कछू कराहत एक नहीं याने शक-शुबह संदेह नहीं।

सवाल- अब कहो जी ऊपर पहुँचा है और गुंजाईश पाई है, गिरोह एक के वह तले अर्श के है, और तले आसमान के है, और ऊपर पकड़ा है इल्म उसके में सो गिरोह आसमान और जमीन के बीच जो कुछ हैं, जिनको बीच रंज के न डाले, निगाह रखे सो ऐसे बिलंदतर है, हद वहम के से बुजरकतर है, फिकर समझ आयत के से याने कुरान के से, पाक करे खुदा से नजीक पीढ़ी अर्श की तोड़ी, ऐसी जो बुजरक गिरोह

निशानी कही गई है। सो ऐसा क्यों कर कहा है?

75. एक हदीस में लिखा है कि इमाम महदी, इमाम हसन-हुसैन के वंश में होगा। तथा एक हदीस में लिखा है कि यहूदी / हिन्दू में होगा। एक स्थान पर मक्का (अरब) में प्रकट होना लिखा है। वहां फिर मक्का से मशरिक (पूर्व) में जाकर रहेगा। दूसरे स्थान पर हिंद (भारत) में जाहेर (प्रकट) होने का कहा है। तो एक इमाम महदी (श्री जी साहिब जी) को भिन्न-भिन्न स्थानों पर प्रकट होना लिखा है। सो किस प्रकार से है?

76. हदीसों में लिखा है कि याजूज-माजूज सबसे बड़े हैं। एक वचन में याजूज सौ हाथ (100) गज लम्बा तथा माजूज एक (1) गज / हाथ

कही जो जमीन और पीढ़ी अर्श के तोड़ी पाक करेगी खुदा से, सो गिरोह कौन सी? जिसकी इतनी बुजरकी?

सिपारा पहला (1) सूर: अलबक्र अलिफ़ लाम मीम पन्ना 59 वर्क 14 फरीकु न्मिन्हुम-गिरोह एक इनके वल अक्सरो हुम-बल्कि बहुत इनसे ला यूमिनन् न ईमान लाते थे- बीच तौरैत के, वलम्मा जाअहुम्-उस वक्त कि आया ऊपर इनके रसूल, मिम्ईन्दिल्लाहि भेजा- गया खुदा तआला के से याने, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम, मुसहिकुम-इतबार रखने वाले ते मा म अ हुम् उस तौरैत के से, साथ इनके हैं, नबजफरीकुन्-डालना किया गिरोह एक को मिनल्लजीन अतुल्किताब-इस वास्ते कि बख्शना किया है, बीच तौरैत के याने आलिमों ने उसके ताई डाला- किताबुल्ला-तौरैत के ताई या कुरान के ताई बराज जुहरे हिम् डाला है, पीठ पीछे याने इनके पढ़ें तौरैत को रद किया। हक अन्नहुम् चोचा-कि वो आलम ला यालमून नहीं-जानते हैं कि वह कलामुल्लाह है मुहम्मद रसूलिल्लाह ॥

सवाल- अब कहो जी, गिरोह को मिन से एक का डालना किया, सो गिरोह कौन सी? और दूसरी पर आया मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम नजीक खुदा तआला से के से। और दी इनको तौरैत, उनसे बख्शीस पाई ए जो एतबार रखने वाले गिरोह में कलामुल्लाह कहे सो तौरैत कौन सी? जिनकी पढ़े नहीं जानते हैं कि कलामुल्लाह बरहक़ मुहम्मद रसूलुल्लाह ॥

कहा गया है, तो यह सबसे बड़े किस प्रकार से है? क्योंकि एक हदीस में याजूज़-माजूज़ को भिन्न-भिन्न कहा है। इनकी उम्मत (समुदाय) चार लाख (4,00,000) कही गई है। तथा मरने से पूर्व चार सौ हजार (400,000) पुत्र जन्मेंगे, इस भेद को समझाईयेगा?

77. हदीसों में वर्णित है कि याजूज़-माजूज़ फरिश्तें हैं। तथा एक वचन में कहा है कि नूह नबी के पौत्र हैं। तो नूह नबी तो आदमी थे, उनके पौत्र फरिश्तें किस प्रकार से होंगे? तथा पैगंबर के पोत्रे, पहाड़, जंगल, दरख़्त (वृक्ष), जानवर दरिया (सुमुंद्र) कैसे खा-पी जायेंगे?

78. किताब मिस्कात में लिखा है कि रसूल सल्ल० मुहम्मद साहिब ने

सिपारा दूसरा 2 सयकूल पाना 89 उम्मतन् वसतन्-गिरोह एक अदल सेती उठाई गई है, लेकिन तो होवे शाहिद-गवाह वास्ते पैंगबरों के, अलन्नासे-ऊपर मुन्करो के पैंगबरों से रोज़ कियामत के, व यकून रसूला- और होवे भेज्या मेरा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, अलैहुम ऊपर रास्ते तुम्हारे शाहिद (गवाही) अदल पाक तेरे की।।

सवाल- अब कहो जी, गिरोह एक कही जो अदल से उठाई गई वास्ते शाहिदी देने, सब पैंगबरों की सब मुनकरो के ताई क्यामत के। भेज्या रसूलिल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम वास्ते गवाही खुदा की राह रास्ते के। एक गवाही देने वाला रसूलिल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम। दूसरी गिरोह, जो इनके बराबर गवाही देवे, सो कौन सी गिरोह।?

सिपारा चौदहवां (14) रूबमा वरक 356मों बयान है युनन्जिलुत्मलायकतो- तले भेजता है फिरिश्तों ताई, बिरूहे- वही से या कुरान से, कि सब वह या दिल का है, या मलायक के ताई सब रूहों के भेजता है। रूह कौन है? नजीक दरगाह खुदा के से। बीच तबिया नेक कहता है कि कोई फिरिश्ता तले न आवे मगर उस वक्त ताई कि रूह उसके साथ है, और रकीब उसका जैसे कि ऊपर आदमियों के खबरदार होता है और हर एक भाँत से तले उतरना फिरिश्तों का होता है। मिन अमेही-खुदा के फुरमान से, अल मैंयशाओं- ऊपर हर एक के जो चाहता है, मिन् इबादेही तू बंदे अपने से, हक्र नबूबत का उसे ताई साबित होता है, जुबान मलायकों की से उसके साथ अंबिया कहते हैं, अन् अन्जिरू खबरदार करो। अशह

फरमाया कि इमाम महदी (श्री जी साहिब) जब तक पातसाही करेंगे ! तक तक दज्जाल (कलियुगी दानव) से लड़ाई करेंगे । तो क्यों कर ?

79. पारः आठवां (8) में लिखा है कि इब्लीस (शैतान) ने खुदा (परब्रह्म) से समय सीमा माँगी । जिससे कि आदम (आद नारायण, महामानव) के वंशजों की राह अवरूद्ध कर सके । तो उसको यह बख्शीस (शोभा) हुई है । तो यह कब तक मोमिनों की राह (मार्ग) रोकेगा ?

80. पारः छः में वर्णित है कि ईसा (देवचंद जी) दज्जाल (कलियुग) को मारेगा फिर चालीस (40) वर्ष पातसाही करेगा । अतः निश्चय करके चाहिए कि दज्जाल (कलियुग) कैसे मरेगा ? तथा दुनिया (संसार)

दू ला इलाह इल्लाह अशहदू अना- तहकीक खुदा दूसरा लायक इबादत के नहीं मगर वह । मैं कि पैदा करनेवाला हूँ और रोजी देने वाला हूँ, सबों का फलकून-पस (अतः) डरो मुझसे, पूजा करो, मेरे ताँई मेरी बंदगी करो । तो रखने वाला मैं हूँ बंदों से, तो खावंद में हो ।

सवाल- अब कहो जी, खुदा की दरगाह मिने रूहों की कौम कही, सो रूहे कौन से ? सिपारा तीसवां (30) अम्म यत सालून सूरः नबा मों पाना 7 वरक 38 मों बयान है, यौम यकूय रूहो- बीच रोज कायमी रूहों के, याने जिस रोज बरपाय होवे, रूहें, व मलायकतो सफकनू-और खड़े होवे फिरश्ते सफ बाँध के । रूह है सो मलायक एक है, याने फिरश्ता एक मुवक्कल है ऊपर अरवाहों के और बीच आलम के-कहता है कि पैदाश उससे बुजरकतर नहीं, रोजवया मतकों वे सफें होवे सब और तमाम फिरश्ते साथ बहुत शुमार के और बुजरकी के, केती एक सफ, और वे बीच बंदगी के बराबर होवे ।। और इन लमआनी-कि बेटे पस ऊपर राजी हूजो, खुदा रिवायत के है कि मर्तबा रूहों का चौथा आसमान है । और हर रोज बारह हजार (12,000) तस्बीह करते हैं । हर तस्बीह उसकी सेती फिरश्ता पैदा होता है । और कहते हैं कि रूह तायफ है, याने सिफत करने वाले कहते हैं, कि रूह जो है सो जिबराईल है । ऊपर फिरश्तों के सफ़ खैंचे । ला चतकल्लमून- सुकन कहे बीच बाब शिफायत के, इल्ला मन अजिन- मगर जो कोई कि हुक्म देवे, जुहूर रहमानो- उस किसी के ताँई, कि खुदा तआला शिफायत न करे यो करे, शिफायत जिस किसी के ताँई कि हुक्म करे मेरे बीच शिफायत के, व काल और कहा होवे उनने बीच दुनिया के सबका-

किस प्रकार शैतान (दानव) की पकड़ से आजाद (स्वतंत्र) होगी?

81. किताब मिस्कात के अनुसार इमाम मुहम्मद महदी (श्री जी साहिब जी) सबको एक दीन (निजानंद, संप्रदाय) में लेकर सबको आन्नदित करेंगे। सो किस प्रकार से एक धर्म चलायेंगे?

82. पार: सोलहवां (16) में वर्णन है कि महदी (श्री जी) मुसलमानों (ब्रह्ममुनियों) को दज़्ज़ाल (कलियुग) के बदीगृह से छुड़ावेंगे तथा ईसा (देवचंद जी) दज़्ज़ाल (कलियुग) को मारेंगे। समस्त संसार को एक धर्म के आधीन ल्यावेगे, वह धर्म कौन सा व कहाँ पर है? अतः निश्चय करके कहो, कि दज़्ज़ाल (कलियुग) को ईसा (देवचंद जी) या

कलमा तौहीद का छूटे, मोमिन और किसी के ताई शिफायत न करे।।

सवाल- अब कहो जी, ए रूहों की सफ कही और फिरिश्तों की कही जो अंबिये औलिये फिरिश्ते पैगंबर और सब पैदाश रूहों बराबर बुजरक है और कोई नहीं। सो रूह कौन सी? और फिरिश्ते बेशुमार बंदगी में बराबर कहे सो क्यों कर? और रूह चौथे (4) आस्मान तसबीह करते हैं, तिन तसबी सों फिरिश्तें पैदा होता है। सो क्यों कर? सो रूहें कौन सी? और शकल आदमियों की कही इन आदमी से। सो आदमी कौन से? और लिख के कलमा तौहीद का कहा होवे तो भी छूटे मोमिन और की शिफायत न करे। सो मोमिन कौन से? और कलमा तौहीद का कहने वाले को शिफायत न करे, सो कौन से? सिपारा पच्चीसवां (25) इलेहे यूरछो-सूरत जखरूफ मों लिखा है- सब के ऐसा इल्म है, सायत के ताई, उससे जानो नजीक आवना क़ियामत का।।

सवाल- अब कहो जी, इस इल्म साईत का कहो सो क्यों कर? तिन साईत के इल्म से नजीक आवना क़ियामत का कहा सो क्यों कर? और भी इसी सूरत मों लिखा है जो, हजरत ईसा दो (2) जामें रंगीन पहनेगे। एक (1) हरा हुल्ला दूसरा (2) सुफेत (सफेद) गुदरी चालीस (40) बरस पातशाही करेगा।।

सवाल- अब कहो जी, चालीस (40) बरस में दो जामे एक (1) हरा हुल्ला दूसरी (2) सुफेत गुदरी पहनेगा कहाया है, एती उमर में मों क्यों कर?

सिपारा छः (6) ला युहिब्बुल्लाह मों लिखा है कि हजरत ईसा आवेगा

महदी (श्री जी) मारेगा तथा सबको एक दीन (धर्म) कौन करेगा?

83. किताब तारीखनामः में लिखा है कि दुनिया की उम्र (आयु) छः हजार (6000) वर्ष बीतने (व्यतीत) पर वह आयेंगे तो मुहम्मद साहेब को संसार में केवल चौदह सौ अड़तीस (1428) वर्ष बीत गये हैं। पारः पहला (1) के अनुसार 'कुल संसार की उम्र (आयु) ही सात हजार (7000) वर्ष कही गई है। तो क्या अभी ईसा रुहुल्लाह (देवचंद जी) तथा इमाम महदी (श्री जी साहिब) साहिब का दौर (समय) आना बाकी (शेष) है? तथा क्या सबका एक दीन (धर्म) में आना भी शेष है?

84. अतः हिजरी सन शम्सी (सूर्य) तथा कमरी (चंद्रमा) के अनुसार

मुहम्मद सल्ल० की उम्मत में, सब दुनिया का कुफर तोड़कर एक दीन मुहम्मद का करेगा।

सवाल- अब कहो जी, खातमुलनबी तो आखिरी पैगंबर को कहा। और कहा कि आखिर को पैगंबर ईसा आवेगा। क्यामत तिनसे होयगी। साफ दुनिया होयगी। एक दीन होयगा? तो खातमुल् नबी रसूल कों क्यों कर कहा? और जो खातमुल नबी रसूल को कहा, तो हजरत ईसा आवेगा, सो क्यों कर कहा? जिन सेती क्यामत होयगी। ए दोनो कौल अल्लाह के साबित रख के मायना दुरुस्त करना? जिन सेती ये उम्मी समझें?

सिपारा दूसरा (2) “सयकूल” में लिखा है कि खुदा दुनिया के शहरग से नजीक है। और कुरान में ठौर-ठौर लिखा है- के रसूल और खुदा के दरम्यान जिबराईल आता-जाता सूरतें आयतें ल्यावता।।

सवाल- अब कहो जी, रसूल खुदा के दरम्यान जिबराईल आता जाता, सो क्या रसूल से खुदा दूर थे? दुनिया के शहरग के नजीक कहा, सो क्यों कर।।

ए दोनों कौल साबित रख के मायने दोनों मुकरर करने

सिपारा सत्ताईसवां (27) काल फमा खत्वुकुम में लिखा है कि रसूल सल्ल० ने देखा उस वक्त छिपाया था सदर के तांई।

सवाल- अब कहो जी, सदर (परमधाम) अर्श का खुदा तआला का नूर तिनकों छिपाया कहो सो क्यों कर? इन सवालों को मुकरर करना?

गणना करके देखिए, तो सात हजार (7000) वर्ष के अतिरिक्त कितने वर्ष बीत गये हैं। तो जो उल्मा (विद्वान) क्रियामत को दूर कहते हैं। सो किस गणना के द्वारा ऐसी व्याख्या करते हैं। कृपया समझाईये? जबकि कुरान पाक बरहक़ (पूर्ण सत्य) है, तो गणना में अंतर क्यों कर हो सकता है?

85. जो कोई मोमिन (ब्रह्मसृष्टि) मुस्लिम (ईश्वरीसृष्टि) कहता है कि हम मुहम्मद सल्ल० के सच्चे अनुयायी हैं। तो वह इन उपयुक्त सवालों (प्रश्नों) का जवाब (उत्तर) दिये बिना क्योंकर खाना-पीना, नींद (निद्रा) करेगा? सच्चा मुसलमान तो एक पल के लिये भी खुदा तआला

मेअराजनामें मों लिखा है कि अक्सा मस्जिद पैगंबर दाऊद ने समारी (सवारी) है, तिन मस्जिद के द्वार (दरवाजे) पर पत्थर डाला था, तिस पर पाँऊ मुबारक धरा तिन पत्थर ने आवाज की, कहा के मेरे ताँई सत्तर हजार (70,000) बरस हुए हैं। अक्सा मस्जिद के दरवाजे (द्वार) पड़ा किसी बुजरक का पाँऊ मेरे ऊपर नहीं पहुँचा, मैं चाहता भी नहीं के किसी का पाँऊ पहुँचे।

सवाल- अब कहो जी- अक्सा मस्जिद पैगंबर दाऊद की सवारी कही सो कौन सी? तिनके दरवाजे पर पत्थर कहया, जो पुकारा सो कौन सा? तिन मस्जिद के द्वार (दरवाजा) पड़ा कहा तिन पर सत्तर हजार (70,000) बरस तोड़ी, किन का पाँऊ न पहुँचा, कहा सो क्यों कर और पत्थर ने कहया के मैं नहीं चाहता हों, के मुझ पर किसी का पाँऊ पहुँचे और पहुँचा नहीं सो क्यों कर।। और लिखा है, कि दुनिया तो सात हजार (7000) बरस रहे ज्यादा न रहे, तो इन मस्जिद के द्वार पर सत्तर हजार (70,000) बरस का पत्थर सो क्यों कर?

सिपारा उन्नीसवां (19) व कालल्लजी न सूरत नमल व लकद आतेना दाऊद मों लिखा है के दाऊद इसाक का बेटा। सिपारा पाँचवां (5) वल मुहसनात फकद आतेना आले इबराहीम मों कहा है कि दाऊद, मूसा, ईसा, औलाद इब्राहिम की है। ईसा का जमाना तो अब नजीक हुआ, तो सत्तर हजार (70,000) बरस की मस्जिद दाऊद की सवारी कही सो क्यों कर? ए हरूफ तो कलामुल्लाह के सो तो इख्तलाफ होने के नहीं। तिस वास्ते ए कौल साबित रखकर इन नौ (9) सवालों का मायना दुरूस्त करना?

(परब्रह्म स्वामी) की याद (स्मृति) के बगैर (बिना) नहीं रह सकता है। और यह जो चार (4) सुकन (निशान) किसी यार-दोस्त (मित्र) फ़कीर के (ऋषि) पास लिखवाएँ हैं। इसीलिये कोई चिह्न अशुद्ध लिखा हो तो शुद्ध करके पढ़ लीजिएगा। फ़रमान तमाम (पूर्ण) हुआ।

श्री जी साहिब महंमत प्राणनाथ जी का यह पत्र विक्रमी संवत् 1737 हिजरी सन 1099 में आकोट (विर्दभ) में बैठकर विद्वान भीम जी भाई द्वारा फ़ारसी एवं देवनागरी लिखवा कर औरंगाबाद के शेख़ फ़तुल्लाह, क़ाज़ी हिदायतुल्लाह और दीवान अमान ख़ान को भेजा गया। फिर क़ाज़ी शेख़ुल इस्लाम, शेख़ रिजवी ख़ान दीवान, देहली

और भी मेअराजनामें मों लिखा है के पैगंबर ने कलमा इशारत से कहा और दरवाज़ा खोला, दरिया रहमत का देखा, तिसके किनारे दरख़्त देखा, तिस दरख़्त पर मुर्ग (पक्षी) बैठा था, थोड़ी चोंच में खाक लिये, हर सायत (पल) कहता था कि खाक छोड़े तो दरिया सब अंधेरा होवे। पैगंबर ने खुदा से पूछा ए क्या है? तब कहा के खाक तेरी उम्मत का गुनाह है। मुर्ग दरिया पैगंबर ने कहा ऐ खुदा वन्द! ऐ मुर्ग कहता है, ऐ खाक डाले तो दरिया अंधेरा हो जाये। फ़रमाया के रहमत का दरिया कहीं अंधेरा न होय?

सवाल- अब कहो जी, पैगंबर ने कलमा इशारत से कहा तिनसे दरवाजे खोले सो क्यों कर (1) और दरिया रहमत का देखा उजला, सो कौन सा दरिया? (2) दरख़्त उपर मुर्ग कहा, सो कौन सा मुर्ग? (3) मुर्ग कहे के खाक छोड़ो ते दरिया अंधेरा रहे। उस मुर्ग ने यों कहा? सो क्या? (4) उन मुर्ग के चोंच में खाक उम्मत का गुनाह कहा, सो क्यों कर? (5) मुर्ग दरिया कहा सो क्या? (6) दरिया कदी अंधेरा न होवे सो क्या? (7) जहाँ ज़िबराईल न पहुँच सका जो आगे कदम देऊँ तो पर जले। तहाँ मुर्ग कहे तिनके पर क्यों रहे? (8) तिस ठौर चोंच में खाक कही सो उहाँ खाक कहा सो क्या (9) इन सवालों का मायना मुक़र्रर करना ज्यों सब कोई समझे।

मेअराजनामे मों लिखा है- जब रसूलिल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम मेंअराज को चले, तब ज़िबराईल नूर के मकान रहा, आगे चल न सके, के मेरे पर जलें और रसूलिल्लाह सल्लल्लाहों अलैहि व आलैहि व सल्लम आगे चल कर नूर तजल्ला को पहुँचे, तहाँ रद-बदल किया वास्ते उम्मत के।

दरबार के बादशाह आलमगीर औरगज़ेब मुहम्मद मुईनुद्दीन रहतुल्लाह अलैहि को भेजा गया। इस पत्र से प्रभावित होकर बादशाह मुईनुद्दीन छदम वेष में श्री जी साहिब “महंमत साहिबुज्जमाँ” से मुलाकात (दर्शन) करने आया। फिर वहाँ से दिल्ली वापस न लौटकर दक्षिण की युद्ध भूमि में चला गया। तथा औरंगाबाद में ही अंतर्ध्यान हो गया।
महोदय,

कुरान पाक के बारे में कुछ प्रश्न हैं। क़य्या इन प्रश्नों का उत्तर देकर हमारे संशयो का निवारण कीजिए। जिससे कि आपको लोक-परलोक में पुण्य प्राप्त होगा। तथा सब परब्रह्म प्रियतम की कृपा के सुपात्र

सवाल- अब कहो जी, जिबराईल तो खुदा के मकान ताई पहुँच न सका, तो रसूलिल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम के पास खबर ल्यावता सो कहाँ से ल्यावता। और लिखा है कि खुदा के पास से सूरतें आयते ल्यावता। सो भी कौल कर हक। ए दोनों कौल साबुत रखकर दोनो सवालों का मायना दुरुस्त करना?

मेअराजनामे मों लिखा है कि खुदा तआला ने कहा मुहम्मद! अपने दाहिने हाथ पर देख। जो देखा तो मोती नूर से नजर आए। तिन मोतियों के मुँह पर क़लफ़ था पूछा क्या फ़रमान पहुँचा। ऐ मुहम्मद क़लफ़ कहा सो तेरी उम्मत का दिल है और इनकी किल्ली तेरा दिल है।

सवाल- अब कहो जी, दाहिने हाथ पर मोती पूर-नूर से कहे, सो देखे, सो मोती कौन से, और मोतियों के मुँह पर क़लफ़ उम्मत का दिल कहा, सो क्यों कर? और तिसकी किल्ली रसूल का दिल कहया, सो क्यों कर और इन सवालों का मायना भली-भाँत मुकर्रर करना?

सवाल- हदीसों मों ठौर-ठौर लिखा है जो हज़रत ईसा दसमी (10) सदी मों आवेंगे। और चालीस (40) बरस पातशाही करेंगे। दूसरा कौल में चौबीस (24) बरस पातशाही करें। सो दसमी (10) सदी गये तो एकयानवे (91) बरस हुए। अब तक जाहिर नहीं हुए, सो क्या? यह फ़रमाया इख़िलाफ़ होने का नहीं। तिस वास्ते ए कौल साबित रखकर मायना मुकर्रर करना?

सवाल- हदीसों मों लिखा है कि हज़रत ईसा दसमी (10) सदी मों आवेगे अग्यारही (11) में रोशनाई ज्यादा होगी। बारहवीं (12) में तिस सेती ज्यादा

बन सकेंगे।

1. पार: तीस (30) अम्म “इन्ना इंजलिना” का तफ़सीरे मवाहिब आलिया-हुसैनी में वर्णन है, कि नीचे भेजा है। हमने कुरान जिसके उतरने का वर्णन फरमाया हैं। कि एक हजार (1000) माह तक लैल तुल कद्र में रूहें व फरिश्ते उतरने का क्या रहस्य है। जो कि प्रातः काल तक रहेंगे। तो सारा कुरान इस रात में लौहे महफूज़ (अलौकिक आकाश पट्टिका) से संसार में आया है। कहा जाता है कि आयतें, सूरतें सूरते ज़िब्रील तेईस (23) वर्ष तक लेकर आया। तो बताईयें कि वह आसमान (आकाश) कहाँ है जहा से कुरान आया? तथा एक (1) रात में उतरना कुरान का

होयगी। तेरहवी (13) में तिस सेती ज्यादा होयगी। अब कहो जी हजारत ईसा दसमी (10) सदी में आवेगा। कहा। और चालीस (40) बरस पातशाही जमीन पर करेगा कहा है। तो रोशनाई अग्यारहीं (11) में बारहवीं (12) में तेरहवीं (13) में, बढ़ती तीन सौ (300) बरस तोड़ी (तक) कही सो क्यों कर? इन सवालों का मायना मुकर्रर करना? हदीसों में लिखा है। के जो कोई यूँ कहे के मैं महदी हों! सो उसे झूठा जानिये। वह अपने मुँह से न कहेगा, किस वास्ते के महदी ईसा बगैर न होयगा। और मिसकात में लिखा है कि ईसा, इमाम महदी, दज्जाल, दाब तुल् अर्ज, याजूज-माजूज सूरज मगरिब की तरफ ए सब एक मर्तबे जाहिर होंयगे, और हदीस में लिखा है के महदी ईसा के पीछे डेढ सौ (150) बरस से जाहिर होयगा।।

सवाल- अब कहो जी, एक कौल में कहा के महदी बगैर ईसा न होंयगा। दूसरे कौल में कहा के ए एक मर्तबा जाहिर होंयगे। और एक कौल में कहा कि ईसा के पीछे महदी डेढ सौ (150) बरस बाद जाहिर होंगे। अब ये तीनों कौल साबित रख के मायना दुरूस्त करना ज्यों सबों की निशा होय? और कहा के महदी अपना नाम आप न कहेंगे सो किस वास्ते? एक मायना मुकर्रर करना? हदीसों में लिखा है, ईसा सो बड़ी निशा नही है, और महदी जो है सो छोटी निशानी है। महदी इमाम होयगा, ईसा मुक्तदी (अनुयायी, साथी) होयगा।

सवाल- अब कहो जी, छोटी निशानी को इमाम क्यों कर कहा। इन दोनों कौलों को साबित रख कर मायना दुरूस्त करना?

हदीसों में लिखा है के इमाम महदी औलाद रसूलुल्लाह सल्ल० की मो

तथा तेईस (23) वर्ष तक आयतें आने का क्या भेद है। रूहों (ब्रह्मसृष्टियों) व फरिश्तों (ईश्वरी सृष्टियों) के रात्रि से प्रातः तक रहने का क्या रहस्य है। तथा वह क्या कार्य करेंगे? ब्रह्ममुनि विद्वानों के वेष का क्या कारण है?

2. पारः सत्ताईस (27) के अनुसार खुदा (परब्रह्म) के दो (2) दिन की लीला एक (1) दिन सृष्टि निर्माण, दूसरा दिन न्याय का कहा गया है। इन दिनों के मध्य में कही गई रात कौन सी व क्यों कर है?

3. पारः तेरह (13) में वर्णन है कि नूह (वसुदेव) नबी के तीन पुत्रों के द्वारा तूफान रूकने के पश्चात पुनः जीवन चक्र उत्पत्ति प्रारम्भ हुई। तो

होयगा। और एक कौल में लिखा है कि इमाम हसन-हुसैन का बेटा होयगा। और एक कौल में लिखा है कि हिन्दुओं में होगा। एक कौल में लिखा है कि इमाम महदी मक्का से तो जाहिर होयगा। मक्का के मशरिक सेती जाके रहेगा। एक कौल में लिखा उस एक कौल में हिंद के बीच में जाहिर होगा। इस भाँत के कौल जुदे-जुदे लिखे हैं, तिस वास्ते इमाम तो एक और इहाँ तो जुदी-जुदी बातों में जुदे-जुदे ठौरों सेती जाहिर होना लिखा है। सो एक कौल साबित रखकर मायना मुकर्रर करना?

हदीसों में लिखा है कि याजूज-माजूज सब चीजों से बड़े हैं। और दूसरे कौल में लिखा है कि याजूज सौ गज का और माजूज एक गज का।

सवाल- अब कहो जी, एक सौ गज कहा और एक, एक गज का कहा। सो सब चीजों से बड़े क्यों कर कहे? ए दोनों कौल साबित रख के मायना मुकर्रर करना? बीच तफसीर के याजूज कहे हैं, के माजूज जुदी उम्मत है। ए सब चार सौ (400,000) हजार उम्मतें हैं। एक इनमें से न मरे जब तोड़ी (तक) चार हजार (4000) लड़का न जने। और ए चार हजार (400,000) कौम कही सो क्यों कर। ए तीनों कौल साबित रख के मायना मुकर्रर करना?

हदीसों में लिखा है कि याजूज-माजूज फिरिश्ते हैं। एक कौल में लिखा है कि, नूह पैगंबर का बेटा याफिस, ए तिनके बेटे कहे गये हैं।

सवाल- अब कहो जी, नूह पैगंबर का बेटा याफिस सो तो आदमी हो हुआ है। तो आदमी के बेटे फिरिश्ते क्यों कर कहे। ए चारों सवालों का मायना मुकर्रर करो। और फुरमाया सो तो इख्तालाफ होने का नहीं। हदीसों में लिखा है कि नूह पैगंबर के तीन

इनको समस्त संसार क्यों नहीं पहचानता है? यह क्यों कर छिपे हुए है? यदि कोई कहे कि आदम के पश्चात नूह के यहाँ तूफान आने पर समस्त संसार नष्ट हो गया। तो एक जगह नूह नबी तो तूफान आने के पश्चात भी साठ (60) वर्ष जीवित कहा है। दूसरी जगह कहा तीन सौ पचास (350) वर्ष जीवित रहे। किशती (नाव) में शेष प्राणियों के यहाँ किसी बच्चों की उत्पत्ति होने का वर्णन क्यों नहीं कहा गया? समस्त संसारिक प्राणियों को नूह के पुत्रों द्वारा उत्पत्ति क्यों कहा गया है?

4. पारः ग्यारह (11) के अनुसार आदम के पश्चात नूह के यहाँ तूफान आने के बाद कुफ्र (कृत्स्नता) पर कोई व्यक्ति जीवित नहीं रहा, तो फिर

बेटे। पैंगबरजादा याफिस, तिन पैंगबरजादे के बेटे याजूज- माजूज सो सब आलम को खायेगे?

सवाल- अब कहो जी, याफिस पैंगबरजादे के बेटे सो तो आदमी होंयगे? सो सब दुनिया को पहाड़ जमीन दरख्त जानवर दरिआओं को क्यों कर खायेंगे? ए कौल तो हदीसों के सो तो, जैसा कौल कलामुल्लाह का तेता कौल हदीस का? तिस वास्ते इन सवालोंने का मायना समझ के मुकर्रर करना?

किताब मिस्कात का बयान, के रसूलिल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम ने फुरमाया है के इमाम महदी जब तोड़ी (तक) पातशाही करेंगे, तब तोड़ी दज्जाल से लड़ाई करेंगे। सिपारा आठवें (8) व लौ अन्ना मों लिखा है के इब्लीस ने खुदा के पास मोहोलत माँगी, क्यामत तोड़ी के राह मारो आदम के नसल की, जब तोड़ी कोई रहे। खुदा तआला ने ऐ फ़ल बख़सा है।।

सिपारा छठें (6) ला युहिबुल्लाह मों लिखा है के हजरत ईसा मारेगा दज्जाल को। पीछे चालीस बरस (40) पातसाही करेगा। सब दुनिया को साफ करेगा दीन मुहम्मद के से।।

सवाल- अब कहो जी, दज्जाल क्यों कर मरा? और दुनिया क्यों कर साफ हुई? उहाँ तो कहा है के राह मारे इब्लीस क्यामत तोड़ी (तक) ताई, जब तक कोई एक आदमी रहे, तिस वास्ते ए कौल साबित रखने, और मायना दुरूस्त करना? ज्यों सब कोई समझे?

किताब मिस्कात मों रसूलिल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व

रसूल साहिब क्यों कर आयें?

5. पार: तीस (30) सूरत अम्म के अनुसार रूहों (ब्रह्मसृष्टियों) के समान किसी दूसरे की महिमा नहीं है। जो कि चौथे (4) आसमान में सुमिरन करती है। जिससे रूहें (ब्रह्मसृष्टि), फरिश्तें (ईश्वरीसृष्टि) उत्पन्न होते हैं। परन्तु यह व्यक्ति का समूह है। तो चौथा (4) आसमान कहां पर स्थित है? रूहों (ब्रह्ममुनियों) की महिमा क्यों अनंत कही गई है? रूहों के सुमिरन करने का क्या भेद है? सूरत (आकृति) व्यक्तियों के समान क्यों है? इनका संप्रदाय क्या है। स्पष्ट कीजिए?

6. पार: पच्चीस (25) में वर्णित है कि ईसा (देवचंद जी) क्यामत

सल्लम ने फ़रमाया है के इमाम महदी ईसा रुहुल्लाह की जुबान से सिवाय बातें करेंगे। और सब आलमों को मुहम्मद महदी के दीन में लेकर उनकी उम्मेद पहुँचावेंगे आराम देवेंगे। जुल्म कछून रहेगा। और उनमें मुसलमान थोड़े होंयेंगे।

और भी हदीस में कहा है के जिनकों महदी कहेगा मुसलमान सोई होयगा। और भी लिखा के असल मुसलमान महदी से होयगा। सिपारा सोलहवां (16) काल आलम में लिखा है के महदी मुसलमानों को दज्जाल के बंदी खाने से छुड़ावे, हदीसों में लिखा है कि महदी सूरज है आबदार शमशेर है। भी लिखा है के दज्जाल को महदी मारेगा। सिपारा छठें (6) ला युहिबुल्लाह में लिखा है के हजरत ईसा दज्जाल को मारेगा। सब आलम को दीन मुहम्मद के में ल्यावेंगा।

सिपारा पच्चीसवें (25) इलैहि युरदूदु में लिखा है के जब याजूज-माजूज बाहर आवेंगे। तब ईसा मोमिनों को कोहतूर ले जायेगा।

सवाल- अब कहो जी, इहाँ तो कहा के दज्जाल को ईसा मारेगा और सब दीन मुहम्मद का एक कैसे करेगा? और दूसरे कौल में कहा है, के दज्जाल को महदी मारेगा। दीन मुहम्मद का महदी ताज्जा करेगा?

सवाल- अब कहो जी दज्जाल तो एक और दीन मुहम्मद का भी एक। और एक जगह पर लिखा है सो दोनो मारकर एक दीन क्यों करेंगे? ऐ दोनों कौल खुदा के साबित रखकर मायना मुकरर करना। ज्यों दुनिया समझे। जेती कोई किताब में तारीखनामें भाँति लिखे है। या हदीसों में जेती कोई किताबें में पैग़बरों के दौर लिखे हैं, तिन सबों में बरस लिखे हैं?

(प्रलय काल) में उतरेंगे, दज़्जाल (कलियुग) का संहार करेंगे, दो (2) जामें (वस्त्र) पहनेगे, चालीस (40) वर्ष तक पातसाही (आध्यात्मिक नेतृत्व) करेंगे। याजूज़-माजूज़ (दिन-रात) का भेद प्रकट होगा ईसा (श्री देवचंद जी) मोमिनों (ब्रह्ममुनियों) को कोहितूर (अखण्ड गोर्वधन पर्वत) पर सुरक्षित करेंगे। तथा सबकों इल्में लहुन्नी (तारतम ज्ञान) से पवित्र करेंगे। तो वह ईश्वर प्रदत्त “तारतम ज्ञान” कौन सा है? ईसा (श्री जी) का प्रकटना दसवीं (10) सदी में कहा गया था! तो वह दसवीं (10) सदी में प्रकट हुऐ के नही? कलियुग का संहार हुआ कि नही? ईसा (श्री जी) को दो जामें वस्त्र कौन से पहनने को कहा है। दो (2)

तिन देखे सेती यो मालूम होता हो के आदम सेती दुनिया को छः हजार (6000) बरस गुजरे पीछे रसूलिल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम आये और इनको आये अब तो एक हजार (1000) बरसों के ऊपर केतेक बरस गुजरे। और हजरत ईसा के दौर के बरस सो भी क्या अजू बाकी है? और इमाम महदी के दौर के बरस सो भी क्या अभी बाकी है। और दीन सब एक होना। और पहिला (1) सिपारा सुरअलबक्र अलिफ़ लाम मीम मों लिखा है और किताबों में ठौर-ठौर लिखा है कि दुनिया सात हजार (7000) बरस रहे, ज्यादा न रहे? और अपना रसूल साहेब के हिसाब मुसलमानी हिजरी की गिनती जब देखिये तब तो सात हजार (7000) बरसों के ऊपर केतक बरस ज्यादा भये? और मुसलमानी का हिसाब छोड़कर हिजरी सनशमसी-कमरी का हिसाब कीजे तो भी बरस आये गुजर पाये।

सवाल- तिस वास्ते कहो जी, जो कोई उल्मा है सो क्यामत को किस हिसाब से दूर देखते हैं? और जो कोई क्यामत को दूर देखते हैं सो कलामुल्लाह के कौल को क्यों कर देखते हैं? तिस वास्ते ए सब कौल कलामुल्लाह के और हदीसों के साबित रख के मायना मुकर्रर करना, अब यह बात जो कोई आपको रसूलिल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम की उम्मत में गिनता होवे और कुरान को अपना जानता होंवे, तिसको ए बात मुकर्रर किये पीछे नींद क्यों कर आवे? और खान-पान क्यों कर नीका (अच्छे) लगे? आराम क्यों कर होंवे? ऐ जो सवाल लिखे है, सो मुकर्रर किये बगैर असलू मुसलमान खासी उम्मत में का होवे सो तो मुकर्रर किये बिगैर एक

हथेलियों पर फरिश्ते (देवता) किस ज़मीन (पृथ्वी) से आसमान (आकाश) तक क्योंकर कहा है? तथा इसका संहार किस प्रकार से है?

7. पार: छः (6) में कहा गया है कि अहले किताब (यहूदी, ईसाई, मुस्लिम इत्यादि) ईसा (श्री देवचंद जी) पर विश्वास लेकर आयेंगे। यही काफ़िरों (कृत्घनों) को भी ईमान (विश्वास) की राह पर चलायेंगे। कोई भी अन्य संप्रदाय शेष न रहेंगा तो अहले किताब (धर्मग्रंथों के उत्तराधिकारी) कौन से कहे हैं? कलियुग से कुफ़र (कृत्घनता) किस प्रकार दूर होगा? पैगंबर (मुहम्मद साहिब) की सुन्नत (परंपरा) पर ईसा (श्री देवचंद जी) किस प्रकार चलावेगे? सुन्नत (परम्परा) वास्तव में

सायत रह ना सके? और हम जो कुछ पढ़े नहीं। ए चार सुकन किसी यार-दोस्त फकीर के पास लिखाये हैं। तिस वास्ते कोई सुकन टेढा लिखा हो सो दुरुस्त कर पढ़ियो? तमाम हुआ।

फ़कीर सैय्यद मुहम्मद इब्ने इस्लाम की शेख इस्लाम के नाम की लिखी किताब (पत्रिका) तमाम (सम्पूर्ण)



क्या है?

8. हदीसों में ईसा (देवचंद जी) का प्रकटना दसवीं (10) सदी में कहा गया है। एक जगह चालीस (40) वर्ष दूसरी जगह चौबीस (24) वर्ष संसार में रहने को कहा गया है। ईसा के डेढ़ सौ (150) वर्ष पश्चात इमाम महदी (श्री जी साहिब जी) प्रकट होना क्यों कर कहा है? स्पष्ट कीजिए कि ईसा व महदी, (विजयाभिनंद, बुद्ध निष्कलंक) आयें, कि नहीं आये?

9. पार: इक्कीस (21) के अनुसार इमाम महदी (श्री जी साहिब जी) की महिमा अपार कही गई है। अतः कहिये कि इमाम (धर्मनेता श्री जी)

॥ कुरान पाक (पवित्र) के

सत्ताईस (27) सवाल (प्रश्न)॥

कुरान के सवाल लिखे हैं तिनका बयान देखना। सिपारा अम्म के में। सूरत इन्ना अंजलिना, तफसीर हुसैनी में बयान है। कहा के तले भेज्या हैं मैंने कुरान को और मजकूर पर। तिसके उतरने का बयान आप फरमावते हैं। कहा के अव्वल से आखिर तोड़ी (तक) सारा कुरान लौहे महफूज सों इसी रात में दुनिया के आसमान पर आया। और कहा के रूहुल अमीन तेईस (23) बरस तोड़ी (तक) सूरते आयतें माफक पर ले आया। और तीन (3) तक़ार लैल तुल कद्र मों कहे हैं और ए रात हजार (1000) महीने से केतक ज्यादा। और हुक्म समेत फिरिश्ते और रूहें इसी रात में उतरे हैं। वास्ते अच्छे कामों के। जो फज़्र तोड़ी (तक) रहेंगे। और भेष आलिमों का और आरिफो का इसी सूरत में बहुत हैं।

सवाल- अब कहो जी, कुरान किस मजकूर पर आया है? खुदा ने जो भेजा है और आप तिसके उतरने का बयान क्यों कर फरमावते हैं और इसी रात मों सारा कुरान दुनिया के आसमान पर उतरया। सो क्यों कर? और दुनिया का आसमान सो क्या? और तेईस (23) बरस तोड़ी (तक) रूहुल अमीन माफक मसले दुनिया के रसूले आयतें ल्याया सो क्यों कर और तीन (3) तक़ार कहे सो कौन से? और रात हजार महीने (1000) से बड़ी कही सो क्यों कर? और हुक्म समेत फिरिश्ते और रूहें इसी रात में उतरे हैं सो क्यों कर? और अच्छे काम कहे सो क्यों कर? और काम से।

की तलवार (खडग) कौन सी है। और जल कौन सा है?

10. पारः छब्बीस (26) में वर्णित है कि इमाम महदी (श्री जी) मोमिनो (ब्रह्ममुनियों) को कलियुग के बंधन से छुड़वायेंगे। तथा अपनी अनमोल संपदा खर्च करेंगे। तो बताईये कि वह संपदा कौन सी है? तथा मोमिन (ब्रह्ममुनि) तूफान से पहले कलियुग के प्रभाव में आये किबाद में आये?

11. हदीसों में कहा गया है कि जिस प्रकार मैं अब खड़ा हूँ उसी प्रकार न्याय के दिन मोमिनो (ब्रह्ममुनियों) की शिफायत (प्रशंसा) करूंगा तथा इनके गुनाहो (पापो) से क्षमा दिलाऊंगा। तो मोमिनो (ब्रह्मसृष्टियों) के गुनाह (पाप) कौन से कहे हैं? जिब्रील (जोश

और फज्र ताई रहेंगे। सो कौन सी फज्र? और भेष आलिमों का और आरिफों का सब इसी सूरत में है, सो क्यों कर और कौन था? इन सवालों का जवाब देना।

सिपारा सत्ताईसवां (27) काल फमा खतबु कुम्। सूरत पचपन - (5) अरहमान बेटा एहिया का फरमाया है सरासर जमाने नजीक खुदा के दो (2) दिन हैं। एक (1) दिन तो पैदाईश आलम की। दूसरा (2) दिन क्रजा का।

सवाल- अब कहो जी, दो दिन कहे सो क्यों कर और इनके बीच जो रात कही सो क्यों कर? और कौन सी? इन सवालों का जवाब देना।

सिपारा तेरहवां (13) वमा उबर्रिऊ मिन्दाब्बतिन्। नूह के तीन बेटे, साम, हिसाम, याफिस तमाम पैदाईश आलम की इनों पर मुस्तकीम होती है। तफसीर हुसैनी में लिखा है। जो पहले पैदाईश आदम की है, पीछे सब पैदाईश है और लिखा है, के नूह के तीन (3) बेटे हैं। एक हिसाम तो हिन्द में आया और साम जो हैं सो बरारब (अरब) और फारस (ईरान) में आया और याफिस जो है, सो तुर्कीस्तान में आया। अब इनों की पहचान जाहिर नहीं हुई, सो जाहिर कर देनी। जो ए कौन है? जिनकी पैदाईश सारा आलम ही है सो छिपे क्यों कर रहे हैं और नूह तो आदम की पैदास से कहाया। और आदम की, और नूह की पैदाईश न कही और इन तीनों बेटों की पैदाईस कही, सो क्यों कर। अगर कोई कहे ज्यों आदम के पीछे नूह तूफान में सब गर्क हुए। सो नूह तो तूफान के पीछे साठ (60) बरस रहया। और दूजे ठौर कहाया है, के नूह तूफान के पीछे तीन सौ पचास (350) बरस रहया और किस्ती में भी बहुतक थे। और तिनमें किसी ते पैदाईस ना कही। और इन तीनों (3) की पैदाईस आलम

(निजबुद्धि शक्ति), असमाफील सबको आनन्द देंगे। तो मोमिन (ब्रह्मात्मा) होने का दावा (अधिकारिक घोषणा) करके आप क्यों क्रियामत (प्रलय) के दिन से भयभीत होते हैं? एक जगह हिंदू से दूसरी जगह अरब में इमाम के प्रकटना कहा है। एक स्थान पर हिंदुओं में एक स्थान पर इमाम हुसैन के वंश (मुहम्मद साहिब के नवासे इमाम हुसैन रह० हज़रत अली तथा फतिमा बीबी के पुत्र थे। जिन्होंने उस समय के अत्याचारी, निर्दयी, खलीफ़ा (प्रतिनिधि) दुबुद्धि यज़ीद के आंतक का निर्भीकता एवं बहादुरी से सामना करके धर्म संघर्ष किया। स्वयं का तथा अपने परिवार के बहत्तर (72) वीरों का बलिदान दिया। परन्तु अन्याय,

सारे की कही, सो क्यों कर? इन सवालों का जवाब देना। सिपारा ग्यारहवां (11) या तज़ि़रून इनमें लिख्या है। न थे आदमी, मगर एक उम्मत दीन में बीच जमानें आदम के, या पीछे तूफ़ान के छूटे नूह कोई न था। जमा थे ऊपर कुफ़्र के। इसका जवाब देना?

सवाल- जो कोई न थे मुसलमान तूफ़ान के पीछे जब तार्ई रसूल आया, सो क्यों कर? सूरत अम्म का बयान, किताब मआलम में लिख्या है, के और पैदाईश रूहों से बुजर्गत नहीं। और क्यामत को इनकी जमा होयगी। और बंदगी में सब बराबर है। और ऐनुल मानी में बेटा मुर्शिद का कहता है के रूहों का मुकाम चौथा (4) आसमान है। रोज बारह हजार (12000) तसबी करते हैं। और हर तसबी इनों की से फिरिश्ते पैदा होता है। और कहते हैं के एक तोहफा है। पर ए आदमियों से पैदाईश नहीं। क्रियामत को इनकी जमात होयगी।।

सवाल- अब कहो जी, चौथा (4) आसमान रूहों का मुकाम कहा सो क्यों कर? और सब पैदाईश बुजरक है सो क्यों कर सो रूहें कौन सी? और रूहें बारह हजार (12000) तसबीह क्यों कर करते हैं। और हर तसबीह से फिरिश्ते की पैदाईश क्यों कर होती है? और जिस तसबी से फिरिश्ते पैदाईश होती है सो तसबीह कौन सी? और फिरिश्ते कौन से और रूहों का तोहफा कहा सो कौन सा और सूरत आदमियों की कही सो क्या? और आदमियों की पैदाईश न कही सो क्यों कर? और कल क्रियामत को इनकी जमात खड़ी होयगी, सो क्यों कर? और कौन सी? इन सवालों का जवाब देना।

अत्याचार के सामने दीने हिजाजी (सत्य धर्म) का सिर न झुकने दिया इन्ही के बलिदान दिवस को मुह्ररम माह की दिनांक दस (10) को प्रतिवर्ष याद (स्मरण) करके ताजिएँ निकाले जाते हैं। इमाम हुसैन साहिब की बीवी की बहन (साली) बीबी महपारा फ़ारसी, सिंध के राणा वीरेन्द्र सिंह की पत्नि चद्रप्रभा रानी थी। इन्ही के वंश में के नाम से प्रदिद्ध माता धन बाई पिता श्री केशव ठाकुर के यहाँ श्री मेहराज ठाकुर जी का जन्म हुआ था) में इमाम श्री जी का अवतरण कहा है। स्पष्ट कीजिए?

12. पारः उन्नतीस (29) में वर्णित शब्द की व्याख्या किताब मुअल्लिम में कहा है कि क्रियामत के दिन आसमान-ज़मीन (आकाश-पृथ्वी) के

सिपारा पच्चीसवां (25) में इलैहि यूस्दूद सुरत तैतालीस (43) जखरूप, सच्चे के ईसा का इल्म है माहत के ताँई। जानो इनसे नजीक आना क्यामत का। एक अलामत क्यामत की उतरना ईसा का। के निकलने दज्जाल के आसमान से तले आवेगा नजदीक मुनारे बेजा के। मशरिक की तरफ दश्मिक सों। ईसा दो (2) जामे रंगीन पहनेगा। और दोनो हथेलियाँ फरिश्ते के परोँ पर धरे होएगा और गालों पर अरक चुएगा। जो सिर तले करेगा तो अर्क मोतियों की भाँत मुँह पर से चलेगा। और दम (सुगंध) इसका जिस काफ़िरोँ को पहुँचे। सो मरेगा और मोमिन कायम होंगे, और दज्जाल को विलायत शाम सों वाय मारेगा। पीछे याजूज़-माजूज़ जाहिर होंयेंगे। और ईसा मोमिनोँ को कोहतूर तले पनाह देयगा।।

सवाल- अब कहो जी, सो इल्म कौन सा? और सायत कौन सी? और ईसा तो दसमी सदी में जाहिर कहे हैं। अब क्यामत कही सो नजदीक के दूर? और कहा के दज्जाल के निकलने के पीछे आसमान से ईसा तले आवेगा। सो दज्जाल निकसा है, के नाही? और मुनारा बेजा मशरिक की तरफ कहा, सो कौन सा? और दो (2) जामे कहे सो कौन से पहनेगा? और दोनों हथेलियाँ कौन से फ़िरश्तोँ के परोँ पर धरे होयगा। और अर्क मोतियों की भाँत मुँह पर चलेगा। सो क्या? और इनके खस सों काफ़िर मरेगा। सो क्यों कर? और दज्जाल को विलायत (परदेश) शाम मों जाय मारेगा। सो क्यों कर? जिसका कद आसमान से तो जमीन ताँई कहा है। और याजूज़-माजूज़ जाहिर होंयेंगे। सो क्यों कर और हजरत ईसा तो एक दीन करेंगे, तब सो मोमिन कौन से, जिनको कोहतूर तले ले जायगा। इन सवालों का जवाब भली-

बीच में आठ (8) अर्श (धाम) होंगे। इसका विवेचन कीजिए?

13. पार: तीसवां (30) के अर्श शब्द की व्याख्या किताब मुअल्लिम में वर्णित किया है। कि वह एक दाना है। सफेदी के बीच में उसकी लम्बाई चौड़ाई ज़मीन (पृथ्वी) से, आसमान आकाश तक तथा पूर्व से पश्चिम तक, किनारें उसके रत्न-मणियों से सुसज्जित है। एवं चारो और फरिश्ते (देवता) है। अब बताइये कि वह दाना सफेद क्या है? जिसकी लम्बाई चौड़ाई चारो दिशाओं में कही है। फरिश्ते (देवगण) कौन से है। तथा कौन से अमूल्य रत्न तथा कहाँ पर सुसज्जित है?

14. पार: पच्चीसवां (25) में वर्णित है कि मुहम्मद स० ने सुब्हान तआला

भाँत देना।

सिपारा छ: (6) ला युहिब्बुल्लाह-कहते हैं कि अहले किताब ईमान लावेगे, ऊपर ईसा के। वक्त होयगा के आसमान से तले आवेगे और दज्जाल को मारेंगे। याने जानों के पैंगबर था और इन सबों को दीन में ल्यावेगा। और कुफ़र जुदागी आलम से दूर होवेगी। छूट गिरोह दीन और कोई न रहेगा। ईसा हुक्म माफिक कजा के और किताब के और सुन्नत पैंगबर की करेगा। और चालीस (40) बरस जमीन पर रहेगा।

सवाल- अब कहो जी, अहले किताब सो कौन, जो ईमान ल्यावेगे? और ए तकरार क्यों किया और लिखा है जो ईसा दज्जाल को मारेगा और सबके दीन में लाए कुफ़र सबका दूर करेगा। छूट गिरोह दीन और कोई न रहेगा। और हुक्म माफिक कजा के और किताब के और सुन्नत पैंगबर की के करेगा। अब ए सब हुक्म इमाम महदी करेंगे? के हजरत ईसा करेंगे? इन सवालों का जवाब देना। सो हदीसों में बयान है जो हजरत ईसा दसमी (10) सदी में जाहिर होंयगे। सो दसमी (10) सदी तो गुजर गई।

सवाल- अब कहो जी, हजरत ईसा कहाँ है, क्यों कर हैं? और एक कौल में फुरमाया है रसूल साहेब ने, के हजरत ईसा चालीस (40) बरस रहेगा। और कौल में चौबीस (24) बरस रहेगा और दसमी (10) सदी को तो गये तो कितने बरस होने आये।

सवाल- अब कहो जी, हजरत ईसा जाहिर होय गये कि अब होंयगे? जाहिर

(परब्रह्म स्वामी) से दो पर्दों (आवरणों) में वार्तालाप किया। इन सोने व मोती के पर्दों के मध्य सत्तर (70) साल (वर्ष) का अंतर है। तो बताईये कि सोना व मोती क्या है? सत्तर (70) वर्ष का राह (मार्ग) क्यों कहा गया है?

15. पार: सत्ताईवां (27) में वर्णित शब्द की इब्ने अब्बास के द्वारा व्याख्या की गई, कि एक पल में रसूलिल्लाह ने दो बार अल्लाह (परब्रह्म प्रियतम) को दिल की दृष्टि से देखा। दूसरे मायने में कहा गया है। कि सात (7) आसमान पार करके बुराक जिब्रील (जोश) को छोड़कर अर्शें मजीद (परमधाम) अकेले गये। प्रत्येक कदम में पाँच सौ (500) वर्ष

हुए सो किन मोमिनों ने देखे? या देखे नहीं, या अब देखेंगे?

इन सवालों का जवाब देना। और हदीसों में रसूल साहेब ने फरमाया है। के इमाम महदी साहिबुज्जमाँ, और हजरत ईसा रूहुल्लाह, और दज्जाल और दाब तुल अर्ज और याजूज-माजूज और सूरज मगरिब की तरफ। ए सब इकट्ठे जाहिर होंयेंगे। अब ए बयान करो! अंजूम मोमिन क्यों नहीं देखते? और हदीस में बयान है के खुदा के हुक्म से ईसा तले आवेगा नूर के कुब्बे में। और कुब्बा सुफ्त अंबर से होयगा। और हरा हुल्ला (अलौकिक वस्त्र) पहनेगा। फेर सुफ्त (सफ़ेद/उज्ज्वल) हुल्ला फकीरी का पहनेगा। ए बयान करना के दो (2) हुल्ला क्यों कर पहनेगा है, के दसमी (10) सदी ऊपर हर (प्रत्येक) सदी (100 वर्ष) ताई दीन उम्मत मेरी के ताई ताज्जा करेगा। सो इमाम महदी जानियों और जाहिर होना इमाम महदी का दसमी सदी में कहा है। और कहा के ईसा के पीछे एक सौ पचास (150) बरस में इमाम महदी जाहिर होयगा। अब ए बयान करना के इमाम महदी, ईसा रूहुल्लाह आये हैं? के अब आवेंगे? और एक ठौर कहा है के हजरत ईसा मुक्तदी (अनुयायी) होयगा और एक ठौर लिखा है के इमाम महदी मुक्तदी (अनुकर्ता) होयगा। अब ए बयान करो ए क्यों कर है?

सिपारा इक्कीसवां (21) उल्लु मा ऊहिय सूरत सज्दा (32) किताब लबाब में तफसीर नक्कास सो नकल है, के बुजुर्ग निकलना इमाम महदी आखिरी का, हमशेर आबदार सों।

की राह कही। तो बताईये कि एक पल में दिल से परब्रह्म को किस प्रकार देखा? तथा सात (7) आसमान कौन से छोड़े एवं प्रत्येक कदम में पाँच सौ (500) वर्ष का अन्तर क्यों कर है?

16. लैल तुल कद्र के तीन (3) तकरार में क्या भेद छिपाया है। दायें-बायें उड़ने वाले सुनहरे परों वाले का क्या रहस्य है। तथा जिब्रील (जोश/शक्ति) का हद (सीमा) से न गुज़रने (निकलने) का क्या अर्थ है।

17. पार: सत्ताईसवां (27) में वर्णित कौन सा दरिया (सुमुंद्र) है। उस दरिया की चालीस (40) धाराएँ कौन सी हैं। तथा चालीस (40) फ़व्वारें कौन से हैं?

सवाल- अब कहो जी, इमाम की शमशेर सो कौन सी? और आब सो कौन सा? इन सवालों का जवाब देना।

सिपारा छब्बीसवां (26) हामीम सूरत मुहम्मद (47) इमाम शाफई और इमाम अहमद फ़रमावतें हैं के इमाम आखिरी में छुड़ावेगे, मोमिनों को बंदीवानो से माल अपना खर्च कर।

सवाल- अब कहो जी, मोमिन क्यों बंदी बने होंगे? और इमाम महदी क्यों कर छुड़ावेंगे? और माल कौन सा खर्च करेंगे? अब ए मोमिन बंदीवान नूह के तूफान से पहले हो गये, के तूफान के पीछे रसूल आये तोड़ी (तक) हुए हैं? या बंदीवान हैं? के सब होंगे? इनका बयान भली-भाँत सो करना? और हदीस में रसूल साहेब ने भली भाँत फुरमाया है, के ज्यों में अब दीन में खड़ा हो, सो यो आखिर में भी खड़ा होऊगा। और उम्मत के गुनाह बख्सावाऊँगा। और कहा के ज़िबराईल साफ करने वाला है, रूह, मोमिनों के ताई और अव्वल रूहों पर और भी सबों को सुख देवेगा। और इसराफील खुश आवाज से जैसा कोई न गावेगा जुबाँ गावना, कुरान का सूर करेगा तब फिरिश्ते काम छोड़ पीछे-पीछे फिरेंगे।

सवाल- अब कहो जी, हजरत ईसा, इमाम महदी और ज़िबराईल, इसराफील सुख देने, मोमिनों के वास्ते आवेंगे और मेहमानी मोमिनो की करेंगे। अब जो मोमिन आप कहावते हैं सो कियामत से क्यों डरते हैं? इन सवालों का जवाब देना? और एक ठौर कहा के इमाम महदी मक्के में जाहिर होंगे? और हदीस में कहा है कि हिंद में और काबुल के बीच में जाहिर होंगे? भी कहा है हसन-हुसैन का बेटा होयगा?

18. पार: तीसवां (30) में वर्णन किया गया हौज़ कौसर कौन सा है? जिसके किनारे अमूल्य अलंकरणों से सुसज्जित है। तथा जल इसका मधुर, उज्ज्वल व सुगंधित है। जिसके पीने से पुनः प्यास नहीं लगती है।

19. पार: तीसवां (30) में ही कहा गया है, कि मेअराज में जिब्रील (जोश) ने मुझे तकिया (सहारा) दिया तथा दिल (हृदय) चीरकर पवित्र किया, तब कहिए! कि जिब्रील (जोश) ने हृदय चीरा सो क्यों? दिल को कौन से ज़मज़म (अरब के पवित्र इस्लामी जल स्रोत) के पानी से मैकाईल (ब्रह्म जी) ने धोया? तथा कौन सा नूर (आभा) व ईमान (विश्वास) दिल में रखा? इसका रहस्य स्पष्ट कीजिए?

भी कहा है कि हिंदुओं में जाहिर होंगें? आप इन सवालों का जवाब देना। ऐ क्यों कर हैं?

सिपारा उन्तीसवां (29) तबार कल्ल जी, सूरत हाक्का किताब मजालम यों ल्याया है, के क्यामत के रोज आठ (8) अर्श होंगें। सूरत पहाड़ी बकरी के। सीने से तो रान ताई। और फर्क ज़मीन आसमान से तो आसमान ताई।

सवाल- अब कहो जी, एते संकेत मिने एते कुसादे अर्श कहे सो क्यों कर? और कौन से, इनका बयान भली-भाँत सो करना?

सिपारा तीसवां (30) अम्म। सूरत बुरूज (27) वस्समाइ जातिलबुरूजे-किताब मआलिम मों लिखा है के लौह एक दाना है, बीच सुफेदी के। और लंबाई उसकी आसमान से तो जमीन ताई। और चौड़ाई मशरिक से तो मगरिब ताई और किनारे उसके याकूत से हैं। गिरद अर्श के फिरिश्ते हैं।

सवाल- अब कहो जी, एक दाना सुफेदी में कहा सो क्यों कर है? और लंबाई उसकी आसमान से तो जमीन ताई कही सो क्यों कर? और चौड़ाई मशरिक से तो मगरिब ताई कह सो क्यों कर। और किनारे उसके याकूब से कहे सो और गिरदवाय उसके फिरिश्ते अर्श कहे सो क्यों कर और कौन से? इन सवालों का जवाब देना।

सिपारा पच्चीसवां (25) इलैहि यूरददु सूरत बीच किताब मों ज्यों के ल्याया है, के खुदा तआला ने पेंगबर सो बातें करी, परदे दो (2) हिजाब। यानि रसूल बीच दो (2) हिजाब थे। और खुदा तआला की बातें सुनी। एक हिजाब तो सोने का। दूजा हिजाब मोती सफेद का। इन दो (2) हिजाबों के बीच सत्तर (70) बरस की

20. रसूल सल्ल० ने मेअराज में कौन सा दरिया जोय (जमुना) नदी देखा। उसके किनारे दरख्त (वृक्ष) पर बैठा कौन सा पक्षी देखा? इस पक्षी की चोंच में कौन सी खाक है। जिसके छोड़ने से दरिया में अंधकार हो जायेगा?

21. पार: चौबीसवां (24) में वर्णित वह दज़्ज़ाल (कलियुग) कौन सा है? जिसकी विशालता दसों (10) दिशाओं में व्याप्त है। तथा इसके आधीन समस्त प्राणी क्योंकर है। स्पष्ट कीजिए?

22. पार: सोलहवां (16) में वर्णन है कि याजूज-माजूज सारा कड़वा व मीठा पानी पी जायेंगे व कीचड़ इत्यादि खा जायेंगे तथा इनकी फौज़

राह (मार्ग) है।

सवाल- अब कहो जी, सोने का हिजाब कहो सो क्या? और मोतियों का हिजाब कहो सो क्या? और सत्तर (70) बरस की राह कही सो क्यों कर? इन सवालों का जवाब देना। सिपारा सत्ताईसवां (27) काल फ़मा खत्बु कुम। सूरत नज़्म-बेटा अब्बास का फरमावता है, के पैंग़बर ने खुदा को शबे मेअराज मों दिल के दीदों मों दो (2) बार देखा एक सायत में और दूसरे मायने में कहते हैं के बुराक पर सवार होय सात (7) आसमान छोड़ आगे दो (2) कदम गये। और बुराक और जिबराईल को छोड़ के और हर कदम में पाँच सौ (500) बरस की राह कही।

सवाल- अब कहो जी, एक सायत में दिल के दीदों से देखा सो क्यों कर? और सात (7) आसमान छोड़ दो (2) कदम गये तिनके आगे हर कदम में पाँच सौ (500) साल की राह कही सो क्यों कर? इन सवालों का जवाब करना। और कहा के रसूल ने देखा, उस वक्त छिपाया था सदर के ताई। जो कछू के छिपाया था सदर को। याने फिरिश्ते बहुत जमा थे ऊपर दरख्त के, हर पत्तों पर फिरिश्ते आस-पास उसके मानिंद पर, याने सुनेरी के उड़ते थे। याने नूर खुदा का छिपाया था और कहते हैं के न नजदीक सदर के बहिश्त के, आराम की जगह मुत्तकियों की, या जगह अरवाह सैयदों की और रसूल ने दायें-बायें न देखा और हद सों न गुजरा। मुकर्रर यों ही था और बुजरक हिम्मत रसूल की के उस रात में साया मेहेरबानगी की किसी जेर पर नजर न डारा, दीदे छूट देखने जमाल खुदा के और काहू ना खोले।

सवाल- अब कहो जी, तीन (3) तकरार सदर छिपावने के कहे सो क्यों कर? और

(सेना) चार लाख हजार (4,00,000) वर्ष कहने का क्या रहस्य है? एवं चार सौ हजार (400,000) पुत्र उत्पन्न होंगे कैसे?

23. पार: सत्तरहवां (17) में अल्लाह तआला (परब्रह्म स्वामी) का वचन है, कि मैं परीक्षा लेता हूँ तब ही अध्यात्मिकता प्रदान करता हूँ। तो किनकी परीक्षा लेने का संकेत है? एवं किस प्रकार तथा कहाँ पर परीक्षा लेने को कहा है?

24. पार: पच्चीस (25) में वर्णित है कि कियामत के दिन सुब्हान तआला (प्रियतम स्वामी) प्रत्येक मोमिन (ब्रह्ममुनि) के दिल में खुद (स्वयं) को मेहमान बनकर बैठायेगा। इस कथन का क्या आशय है? तथा मोमिन

कौन से और फिरश्ते दरख्त ऊपर जमा थे। और हर पात पर फिरश्ते मानिंद पर याने सुनेरी के उड़ते थे। सो क्या? और नूर खुदा का छिपा कहा सो क्यों कर? और दायें-बायें क्यों न देखा? और हद से क्यों न गुजरा? और न देखना चाहा दायें-बाँये, यों मुकर्र था। सो क्यों कर? और जहाँ मेहेरबानी के किसी पर न डारा, सो किस वास्ते। और ए ठौर आराम मुत्तकीयों की और सैयदों की और अरवाहों की कही सो ए भिस्त कौन सी? नजदीक सदर के कही सो क्या है? और सदर कहाँ है और कजा का दरवाजा खोला, तब तो कोई भिस्त में न जाय सके। और कहा कि दरवाजा जब खोला तब सैयदों की और अरवाहों की कही सो क्यों कर? ए सैयद मुत्तकी कौन से? और दीदे दिल के छूटे देखने जमाल खुदा के और कहा न खोले सो क्यों कर इन सवाल्लों का जवाब देना।

सिपारा सत्ताईसवां (27) काल फमा खत्बुकुम्। सूरत तूर (52) कहा है के, सौंगध है दरियाओं उमड़े की। यानी दरिया दरगिरंदा बहरूल हैवान। याने ज्यों तले अर्श के हैं उस दरिया सों चालीस (40) फव्वारा कबरों पर बरसेगी।।

सवाल- अब कहो जी, दरिया उमड़ा दरगिरंदा कहा सो कौन सा? और चालीस (40) फव्वारें कबरों पर बरसेगे। सो क्यों कर? इन सवाल्लों पर जवाब देना।

सिपारा तीसवां (30) सूरत कौसर (108) किताब मआलमलजील सों- रसूल सुन के कहे ज्यों बीच बहिस्त के जोय कौसर है। किनारे उसके सोने सों, और जंगल उसका पूर मोतियों और लालों से और खाक उसकी खुशबोय मुश्क सों, ओर सफेद बरस सों, और हदीस मों है, के हौज मेरा, याने हौज कौसर फूटा है मुद्दत पस

ब्रह्ममुनि क्यों क्रियामत (न्यायदिवस) को दर्शन पावेंगे स्पष्ट करके कहिए?

25. पार: चौदहवां (14) में कहा है कि मैंने भेजे हैं, रूहें व फरिश्ते नीचे ज़मीन पर, तो वह रूह मोमिन (ब्रह्मसृष्टि) तथा फरिश्ते (ईश्वरीसृष्टि) कौन से हैं? जो कि हक़ सुब्हान तआला (परब्रह्म प्रियतम स्वामी) के साथ दरगाहे इलाही (परमधाम) में विराजमान है।

26. पार: तीसवां (30) में लिखा है कि रात्रि आवरण है। प्रियतम से मिलने का तथा दिन तो बाज़ार (बिक्री स्थल) है। तो वह कौन से आशिक (प्रेमी) कहे हैं? तथा आशिक (प्रेमी) किस मासूक (प्रियतम)

अंततः महीने (30 दिन) की, और पानी उसका सफेद दूध सों, और बोय उसकी अच्छी मुश्क सों, और कुंज उसके मानिंद सितारे आसमान के, जो कोई उस हौज से पानी पिये सो कदी प्यासा न होय।

सवाल- अब कहो जी, ए भिस्त कौन सी? और आब जोय कही ज्यों किनारे उसके सोने सो कहे। और जंगल पूर मोती और लालों से कहा सो कौन? और खाक सफेद, सो जमीं कौन सी? जिसकी खुशबोय मुश्क सों ज्यादा। और हौज अपना कहा, मुद्दत एक महीने (30 दिन) की कही सो कौन सी? पानी उसका सफेद दूध से बोयदार (सुगंधित), सो पानी कहा है, सो कौन सा? और कुंज मानिंद सितारों के हैं, सो क्या? और ए हौज कौन सा? जिन पानी पियें फ़ेर प्यासा न होय। सो ए पानी पीवने वाले कौन से? जिनकी प्यास जाये? इन सवालों का जवाब देना? सिपारा तीसवां (30) सूरत अलम् नशरह (94) हदीस मों फरमाया है के शबे में अराज में जिबराईल ने मुझे तकिया दिया। और सीने से तो नाभ ताई चीरा। और मैकाईल लौटा आबे जमजम का भर ल्याया। और चीर कर धोया, कि हिकमत से, ईमान मेरे दिल में पूर किया। फिर उसकी जगह एरख्या और कहते हैं के नूर से पूर किया। जैसे उसकी लज्जत का अरक अपने मों अब तोड़ी (तक) पावता है। और दिल मेरा झूठ इस भेद कहूँ नहीं। और हाथ कज़ा की ने दरवाजा बाँधा। और वकीली दिल की पहचाने दर्ई है।

सवाल- अब कहो जी, जिबराईल ने तकिया दिया सो क्यों कर? और सीने से नाभि

को मिलने के लिए प्रयासरत रहते हैं? इस रहस्य को स्पष्ट कीजिए?

27. पार: सत्ताईसवां (27) में वर्णन किया गया है कि अल्लाह तआला (परब्रह्म स्वामी) व मोमिन (ब्रह्ममुनि) बहदत (एकदिल) हैं तो उनका मुकाम (स्थान) किस जगह (स्थान) पर स्थित है? तथा वह कौन है? जो अर्श (धाम) के पातशाह के करीब (साथ) रहने वाले हैं।

28. पार: चौबीस (24) के अनुसार समस्त संसार की रचना “कुंन” (हो जा) शब्द से कही गई है। कुरान पाक के ही अनुसार रूहें व फरिश्तें नाज़िल (प्रकट) किये गये हैं। तो वह कौन सी रूहें (ब्रह्मसृष्टियां) व फरिश्तें (ईश्वरीसृष्टियां) हैं। तथा किस जगह (स्थल) पर प्रकट हुए हैं।

ताई चीरा, सो क्यों कर? और सोई मैकाईल लौटा आबे ज़मज़म का लाया सो क्या? और छाती से नाभ तक का धोया सो क्या? किस हिम्मत सँ। ईमान दिल में पूर किया। सो क्या? और इस जगह रख्या सो क्यों कर। और नूर सों क्यों कर पूर किया? और लज्जत उसकी अब ताई पावते हैं सो क्यों कर और कौन सी? और छूट इस भेद दिल को नहीं सो भेद कौन सा? और हाथ कजा के दरवाजा बाँधा सो क्यों कर? इन सवालों का जवाब देना।

सूरत इन्ना आतेना। हदीस मों के शबे मेंअराज में रसूल ने सातवें (7) आसमान पर आबे जोय देखी, तिस पर खेमे देखे याकूत से और मोती हीरों से। तिस आब जोय पर सब्ज मुर्ग देखे। जिबराईल से पूछा ए क्या है? कहा के ए जोय कौन रहे, और अल्लाह तआला ने तुझे बख्शीश करी है।

सवाल- अब कहो जी सातवें (7) आसमान पर आबे जोए मोतियों याकूब हीरों से खेमे देखे, सो कौन से? और सब्ज मुर्ग सो क्या? और जिबराईल ने कहा के अल्लाह तआला ने तुझे बख्शीश करी है सो क्या? इन सवालों का जवाब देना। और हदीस मों है के शबे मेअराज मो रसूल ने कलमा इशारत सों कहा। और दरवाजा खोला। दरिया रहमत का देखा। दूध सफेद और शक्कर से मीठा जहाँ दरख़्त था, तिस दरख़्त पर मुर्ग बैठे थे। थोड़ी-थोड़ी खाक चोंच में लिये। हर घड़ी कहते थे जो एक खाक छोड़ेंगे तो दरिया अंधेरा होय। सो क्यों कर? और दरिया रहमत का अंधेरा न होय सो क्यों कर? इन सवालों का जवाब भलीभाँत देना?

तथा कुंन से दुनिया की उत्पत्ति का रहस्य क्या है?

29. पारः अठ्ठारह (18) में वर्णन है कि क्रियामत (प्रलय) के दिन काफिर (कृत्घन) अंधे हो जायेंगे। सब अंधेरे में लीन होंगे तथा मोमिन (ब्रह्मात्मा) नूर (अलौकिक आभा) से ओत-प्रोत रहेंगे। अतः स्पष्ट कीजिए कि अंधेरे में कौन से काफिर (कृत्घन जीव) क्यों कर है तथा कौन मोमिन (ब्रह्ममुनि) नूर अलौकिकता से क्यों ओत-प्रोत है?

30. काफिर (कृत्घन) के काम (कार्य) व मोमिन (ब्रह्मसृष्टि) तथा मुस्लिम (ईश्वरीसृष्टि) के कार्य-कलापो में क्या अंतर कहा गया है?

31. तफ़सीर मवाहिब आलिया / हुसैनी में लिखा है कि मोमिन रूह

सिपारा सोलहवां (16) काल अलम्। सूरत ताहा (20) बैत मुर्गनियों का फरमावता है, के सात (7) तबक जमीन के फिरिश्ते के कांधे पर हैं। और पाँऊ उसके दो शिखरों पर है और शिखरा बैल के सींग पर है और बैल बहिस्त का है। और बैल के चारों (4) पाऊँ मछली की पीठ पर हैं। और मछली हौज कौसर की है। और मछली साबित है दरिया पर। और दरिया दोजख पर है और दोजख रौँ कछुए पर है। और कछुआ हिजाब पर है हिजाब अंधेरी सों। और ए हिजाब सातवें (7) तबक पर है।

सवाल- अब कहो जी सात (7) तबक जमीन के कहे सो किस फिरिश्ते के काँधे पर है? और दोनो पाऊँ शिखरे पर कहे सो शिखरा कौन सा। और शिखरा बैल के सींग पर है और शिखरा बैल के सींग पर है सो क्या? और बैल भिस्त का कहा सो क्यों कर? और चार (4) पाऊँ मछली की पीठ पर कहे सों क्यों कर? और मछली हौज कौसर की कही सो हौज कौसर कौन सा? और मछली दरिया पर साबित कही सो क्यों कर? और मछली दरिया पर साबित कही सो कौन तरह? और रौँ हिजाब पर कहा सो क्या? और हिजाब अंधेरी सो कहा सो क्यों कर? सो अंधेरी कौन सी? सो हिजाब सातवें (7) तब ऊपर कहा सों क्यों कर? इन सवालों का जवाब देना भली भाँति सों?

सिपारा चौबीसवां (24) फमन् अज्जल्म्। सूरत मुअमिन कौल वाजे मुफस्सरोँ का ए है- याने पातसाही दज्जाल की जंगल और दरिया सब जगह करार होनी। और अब

(ब्रह्ममुनि) अगर नाखून पर्दे से बाहर निकालती है। तो समस्त संसार उसके नूर (अलौकिक शक्ति पुंज) से उज्ज्वलित हो जाता है। तो हे विद्वानों! निश्चय करके कहिए कि वह मोमिन रूह, औरते कौन सी, जिनकी इतनी अनंत महिमा कुरान-पाक में वर्णित है तथा इनका स्थान कहाँ पर स्थित है? कृप्या शुद्ध मन से एवं प्रमाणित ग्रंथ के संदर्भों से हमारे संशयो का निवारण कीजिए? जिससे कि आपको पुण्य प्राप्त होगा तथा हम भी अपने आत्म संबंधियों के साथ धर्म के वास्तविक भेद समझकर लाभान्वित होंगे।

जोय उसके हुक्म से चलेगी। और निशानी खुदा तआला की से एक ए भी निशानी है। और इनों के दिल में गुमान है के हवा-हिरस पातसाही है, के पैदा करे आस्मान ज़मीन से उसकी पैदास बड़ी है। और अगले आदमी जानते नहीं के दज्जाल एक है पैदास मेरी से। चाहिए यों जान के, ओ आदमी सूँ कद कर लंबा और आँख एक (1)।

सवाल- अब कहो जी, पातशाही दज्जाल की जंगल और दरिया सब जगह करार हुआ है, के अब होयगी? और आब जोय उसके हुक्म से चल गया के अब चलेगी? और गुमान कहा सो किनकों है? के पातशाही हिरस हवा उसको न पहुँचेगी। सो यों कौन जानते हैं और सूरत उसकी आदमियों सी क्यों कर? और आसमान जमीन के पैदा करने से उसका पैदा करना बड़ा कहा सो क्यों कर? और कौन नहीं जानते हैं। के दज्जाल पैदायश मेरी से? और कद कर लंबा कहा क्यों? और आँख एक कही सो क्या? इन सवालों का जवाब देना भली भाँति सूँ।

सिपारा सोलहवां (16) काल अलम में। हदीस मों बयान है के याजूज-माजूज सब चीजों से बड़े हैं। और हमेशा लंबे और नंगे जाते हैं। और कान ऐसे लंबे हैं जो एक जोड़ते हैं और दूसरा बिछा है और हमेशा दिवाल को चाटते हैं, जब कागज के मानिंद रहती है, फेर सूरज की रोशनाई देखते हैं, तब कहते हैं के इन्शाअल्लाह तआला कल को लेंयेंगे। फिर जो दिवाल जैसी की तैसी होगी जो कि कियामत के दिन टूटेगी। और तफास्सिर तो कहते हैं के याजूज-माजूज तो उम्मत

“कुरान पाक का पत्र”

हे विद्वानो! जिस प्रकार महाराजा छत्रसाल के जी घर धाम-धनी (प्रियतम स्वामी) की मेहरबानी अवतरित हुई है। तो महाराजा जी ने परिवार समेत सत्य धर्म “निजानंद संप्रदाय” में दीक्षित होकर श्री जी साहिब महंमत प्राणनाथ जी पर अपना तन, मन, धन समर्पित कर दिया है। समर्पण होने के कुछ लक्षण लिखे हैं। विचारियो!

इन्होंने सत्य धर्म की दीक्षा दुनिया (संसार) के भौतिक पदार्थों की इच्छा से नहीं ग्रहण की है। बल्कि श्री जी की सत्यता, ईशदूत, और परमधाम की सच्चाई तथा आध्यात्मिकता की पहचान करके ग्रहण की है।

जुदी है। और सब चार सौ हजार (400000) कौम हैं। वल्कि ज्यादा और एक इन मों से न मरे जब लग हजार (1000) बेटे न जाने। और हदीस में है, के जिस दिन याजूज-माजूज निकले तब तीन (3) लश्कर होंगें। एक तो तूला जो अच्छा पाना पियेगा, और ताबः गंदा कडुवा पानी पीयेगा। तीसरा शाबः- जो कीचड़ और गंदा सब खायेगा। और माजूज सौ (100) गज का है और तंग चश्म और माजूज एक (1) गज का।

सवाल- अब कहो जी, सब चीज से बड़े सो क्यों कर? और दिवाल को क्यों चाटते हैं और नंगे जाते हैं सो क्या? और दिवाल कौन सी जो मानिंद कागज के रहती हैं? और सूरज की रोशनाई नजरों आवती है, तब कहते हैं के इंशा- अल्लाह तआला कल को लेयेंगे। फेर तैसी की जैसी सो क्यों कर होती है? और सो दिवाल कियामत को क्यों कर टूटेगी? और याजूज-माजूज जुदी-जुदी उम्मत कही सो क्या। और एक इनमें से न मरे, अब तोड़ी (तक) हजार (1000) बेटे न जने- सो क्यों कर? और तूला सो क्या? और दूसरा ताबा कहा जो सारा कडुवां पानी पियेगा, सो क्यों कर? और तूला सो क्या? और ताबा सो क्या? और तीसरा शाबा, जो गंदगी कीचड़ सब खाय जायेगा सो क्यों कर? और शाबा सो क्या। और माजूज सौ (100) गज का। और तंग चश्म कहा सो क्या। इनका तो बयान बहुत है पर एक (1) दो (2) सवाल में पूछे हैं। तिनका जवाब कहना।

सिपारा सतरहवां (17) इक्त रब लि नासे। खुदा तआला फरमावता है के मैं

अंततः सभी प्राणियों ने इसी सत्य धर्म में दीक्षित होना है क्यों कि हिंदू-मुस्लिमों के धार्मिक ग्रंथों में महाप्रलय से पूर्व सभी को एक धर्म को ही अवश्य अंगीकार करना ही है। इसके बारे में धर्मग्रंथों में अनेको प्रमाण लिखवाये गये हैं। यदि किसी का विश्वास परब्रह्म प्रियतम स्वामी के कथनानुसार अवतरित श्री जी साहिब पर होता है। तो धाम-धणी (प्रियतम स्वामी) उसका विश्वास द्रढ़ कर देते हैं तथा कलियुग के प्रभाव से उसे मुक्त कर देते हैं। इसके लक्षण अग्रलिखित वर्णन किये गये हैं।

संसार में चार पद्धतियों की श्रेणियों द्वारा परब्रह्म स्वामी का

तुमारे साथ मामला आजमावना का करता हों। तो मर्तबा है हरेक को पूरा सो और कहे सो मालूम होय।

सवाल- अब कहो जी, खुदा तआला किनकों अजमावता है और मर्तबा किनका देखता है। इन सवालों का जवाब जवाब देना।

सिपारा पच्चीसवां (25) इलैहि यूरदद में बयान है, के मेहमानी के दिल एक मुकाबिल होयगा, बीच हर खुदा के, अल्लाह तआला मोमिनों को हरेक को नया पर बैठावेगा और सब दीदार पावेगे।

सवाल- अब कहो जी-ऐ मेहमानी किनकी करेंगे? और सब दीदार पावेंगे सो क्यों कर? और ऐसा दिन खुशहाली का कहो है, तो मोमिन इस दिन सों क्यों कर डरते हैं? कहते हैं के या इलाही, क्यामत ना दिखाइये! इन सवालों का जवाब देना?

सिपारा चौदहवां (14) रू बमा, कहो के तले भेजे मैंने फिरश्ते। या फिरिश्तों को साथ-साथ रूहों को भेजा है। और रूहें नजदीक हैं दरगाह खुदा की।

सवाल- अब कहो जी- रूहें नजीकी दरगाह खुदा की कही सो कौन सी रूहें? और फिरश्ते कौन से?

सिपारा तीसवां (30) सूरत अम्म मों शेखुल इस्लाम फरमावता है के रात परदा है राह जाने वालों को और दिन बाजार है। दिन गाबे-दादों (व्यस्तता) का कहा सो क्या? और रात आशिकों का भेद कहा सो आशिक कौन से और भेद कौन से? इन सवालों का जवाब देना।

साक्षात्कार किया जा सकता है।

1. शरिअत (नियम, परंपरा पालन करना)
2. तरीकत (मानसिक रूप से साधना करना)
3. मारिफत (आध्यात्मिक पहचान प्राप्त करना)
4. हक़ीक़त (सत्य परब्रह्म का साक्षात्कार करना)

शरिअत (नियम) का पालन करने के पाँच मूलभूत सिद्धांत हैं।

1. कलमा (मंत्रोच्चारण या तारतम पढ़ना)
 2. नमाज़ (प्रार्थना, पूजा-पाठ केवल परब्रह्म स्वामी की ही करना)
 3. रोज़ा (उपवास में निर्गुणता का पालन करना)
-

सिपारा सत्ताईसवां (27) काल फमा ख़तबु कुम्। सूरत इक्त्-र बतिस मो फरमावता है के अल्लाह तआला ने मुकाम सवारा है। दोस्त उस मुकाम में रहेंगे। नजदीक पातसाह के है।

सवाल- अब कहो जी- मुकाम किस दोस्त के वास्ते सवारा है? पातशाह के नजीक कौन रहेंगे? इन सवालों का जवाब देना।

सिपारा चौबीसवां (24) फमन अज़्लमु तफ्सीर कबीर में का है, के तमाम पैदाइश कुँन से हुई है। और कुरान में कहा है के फिरिश्ते और रूहें समेत नाजिल किये हैं। और रूहें नजीकी दरगाह खुदा की है और फिरिश्ते भी नजीकी है। अब कुँन से पैदाइश कही, सो पैदाइश क्यों रहे? इनका जवाब देना।

सिपारा (18) कद अफल, सूरत नूर (24) कहता है के क़ियामत को काफिर सब रूजू होंयगे अंधेरी, सो मोमिन के अक्स पीछे। किस वास्ते के मोमिनो के ताई रोशनाई नूर बुलंद के की है। औरों काफिरो के ताई अंधेरी होयेगी। तारीख बाजे पर बाजे। और मोमिन अंधेरी से दूर आये है। जरूर कर रोशनाई नूर बुलंद की से आये हैं। और काफिर दिल को ख़्वाह है। हाल और काम उनका अंधेरी है, बीच अंधेरे के हैं।

सवाल- अब कहो जी- काफिर अंधेरी सो क्यों कर रूजू होयगें? और मोमिनो को रोशनाई नूर बुलंद की फरमाई सो क्यों कर?

सवाल- अब कहो जी- नूर बुलंदी का कहा सो कौन सा? और काफिरो को होयेगी

4. जकात (दान के द्वारा निर्धनो की सहायता करना)

5. हज (तीर्थयात्रा द्वारा धार्मिक स्थानों का भ्रमण करना)

शरिअत (नियम) के अंतर्गत कलमा (तारतम) पढ़ना तथा तन से परब्रह्म स्वामी की उपासना की जाती है। वर्ष में तीस (30) दिनों के रोजा (उपवास) रखना, अपनी आमदनी (लाभांश) में से चालीसवां (40) (2/5) अंश निर्धनों को जकात (दान देना) एवं वर्ष में हज (तीर्थयात्रा) करना है। परन्तु यह नियमावली केवल संसारिक व्यक्तियों के लिये निश्चित की गई है।

तरीकत (मानसिक पूजा) के अनुसार कलमा (तारतम), नमाज़ तारीखी बाजे पर बाजे कहे सो क्यों कर? और मोमिन अंधेरी से दूर आये कहे सो क्यों कर? और सो मोमिन कौन से और ए जो रूहें कही सो कौन सी? जो रोशनाई नूर बुलंद के से आई है। और काफिर तारीक दिल के तई ख़्तारी कही सो क्यों कर? और चाल और हाल और काम उनका अंधेरी है बीच अंधेरी के कहे सो क्यों कर? इन सवालों का जवाब भली भाँति देना?

॥ तफ्सीर हुसैनी में लिखा है के औरतें मोमिनों की अगर एक नोह (नाखून) बाहेर काढ़े तो मशरिक (पूर्व) से तो मगरिब (पश्चिम) ताँई रोशनाई हो जाय ॥

सवाल- अब कहो जी- औरतें कही मोमिनों की सो कौन सी? इन सवालों का जवाब देना।

॥ कुरान पाक के सवाल तमाम ॥



(प्रार्थना) रोज़ा (उपवास) जकात (दान) हज (तीर्थयात्रा) दिल (हृदय) से करना होता है तथा दान के चालीसवें (40) हिस्सों में से एक (1) हिस्सा अपने लिये रखा जाता है।

मारिफ़त व हक़ीक़त की राह (मार्ग) केवल मोमनीन (ब्रह्ममुनियों) के लिये निर्धारित की गई है। क्योंकि यही ब्रह्मसृष्टियाँ नूर बिलंद (परमधाम) से अवतरित हुई हैं। तथा संसार की उत्पत्ति तो “कुंन” (हो जा) शब्द के द्वारा कही गई है। समस्त संसार के प्राणी (जीव) कहे गये हैं। तथा मोमिनो (ब्रह्मसृष्टियों) के दिल को ही हक़ीक़ी (सत्य) कहा

“पत्र कुरान पाक का”

अब जिन (जिस) भाँति इनके घर बैठे मेहरबानी चली आई है और ए दीन मुहम्मदी हक़ीक़ी छत्रसाल ने या इनके कबीले ने या गैरों खासों ने खुदा का और खुदा के रसूल का हुक्म कबूल किया है, सो दो एक सुकन लिखे हैं। ताथे एह समझे।।

इनों ने दीन इस्लाम हक़ीक़ी (सत्य धर्म निजानंद संप्रदाय) कबूल किया है। सो ए ना कछू दुनिया के मतलब से किया, के फकीर ने हक़ सुब्हान के दीनें हक़ीक़ी का और हक के रसूल की और अर्श अजीम की और बैतुल्ला की हक़ीक़त मारिफ़त की पहचान कर वाय (इनको) दीन में लिये है। इस दीन के बीच हक के फरमाये माफ़िक सबों को आवना है। तो जाहिर करेगा दीन के ताँई ऊपर सब दीनों के, एक दीन होना हिन्दू-मुसलमानो की किताबों में लिखा है। सो सब किताबों को दिखाये दाखिले मिलाय दिये, तब इनों को इश्क ईमान आया। सो ईमान ऐसा ऊपर का नहीं आया सो ए डिगे इनों के दिलों पर पहचान के नक्स हुए हैं। साहिब डिगने ना देवे। जिन भाँति इनों को समझाये, सो इख़्लास से के, दो एक सुकन लिखे हैं।

शरीयत, तरीक़त, मारिफ़त, हक़ीक़त, चारो मकान की राहें खोली चारों राहें इनको दिखाई। नेक तिनका बेवरा।

दीन शरीयत (नियम) का पाँचो बिना ए के मुसलमान की पालना। कलमा, नमाज़, रोज़ा, जकात, हज।। ए पाँचों जुबान से कबूल करना। कलमा कहना वजूद

गया है। जैसे कि हदीस का वचन है कि “ब्रह्ममुनि का हृदय ही परब्रह्म प्रियतम स्वामी का निवास स्थान है।”

इन दिलों (हृदयों) की पहचान सच्चे सदगुरु के बिना असंभव है। क्यों कि ब्रह्मसृष्टियों के अतिरिक्त कोई भी परब्रह्म की लीला का भेद तारतम के बिना कैसे ज्ञात कर सकता है? जो सच्चा ब्रह्ममुनि है। केवल वही सीधे सत्य मार्ग का अनुसरण कर सकता है। संसारिक प्राणी केवल संसारिकता की छल रूपी मृगतृष्णा में समाहित (भग्नित) है।

अतः संसार में बहत्तर (72) फ़िर्के (संप्रदाय) नर्कगामी कहे गये हैं। केवल एक (1) फ़िर्का (समुदाय) ही अर्श (परमधाम) की अखण्ड

से बंदगी करनी। तीस (30) रोजे रहना। चालीसवां (40) हिस्सा जकात (दान) देना। हज से बंदगी करना। ए जाहिर परस्त दिल मजाजी के हैं। और राह तरीकत (अध्यात्म) की। सो पाँचो (5) बिना कलमा, नमाज, जकात, हज, ए दिल सों करना। जकात उनतालीसवां (39) हिस्सा देना। एक (1) हिस्सा अपना रखना। और हकीकत (सत्य ब्रह्मज्ञान) मारिफत की राह जो लेनी है जो मोमिनो के हैं। जिनको ब्रह्मसृष्टि कहते हैं। मोमिन नूर बिलंद से उतरे हैं। और कहा है के “कुंन फया कुंन” कहते है दुनिया जुल्मत से पैदा भई। दिल मजाजी इनको कहा है, और हकीकी दिल मोमिनो का कहया है। जैसे के बीच कुरान हदीस के आया है। “कल्बुलमोमिनीन अर्श अल्लाहू तआला”। मोमिनो का दिल अर्श खुदा तआला का है, लिखा है के इन दिलो की पहचान कामिल मुर्शिद बगैर ना होवे। ऐ दरवाजा और किसी सो कैसे खुले और जो मोमिन है सो ए सब बीच की सिरातुलमुस्तकीम दाएं वांये चलेगा सो नारी होयगा। सो ऐ आखिर लग बहत्तर (72) नारी हुए। एक (1) नाजी हुआ। जिनको हिदायत हक की लिखी है। सो अब एह जो हिदायत हुई है सो देखो बीच हिन्द के हुई है। सो ए जो खलक मिली है और मिलती है तिनको हिदायत किनने करी है। और किन सो इमाम ने समझाये या किन मुसलमान ने समझाये हैं। एह दीन इस्लाम की चारों (4) राहें किनने बतलाई। ए जो मुल्कों मुल्कों शहरों-शहरों से और लाखों हिन्दुओं को ईमान रसूल साहेब पर आया, सो एह किनने दिया। ए देखया चाहिये। और बीच मिस्कात के लिखया है, बाब फितने

संपदा का उत्तराधिकारी कहा गया है। क्योंकि इनको परब्रह्म प्रियतम स्वामी का अलौकिक निर्देशन प्राप्त है।

अतः देखिए! कि परब्रह्म स्वामी की कृपाशीलता हिन्दुस्तान (भारत वर्ष) में श्री जी साहिब महंमत रुहुल्लाह साहिबुज्जमाँ प्राणनाथ जी के रूप में अवतरित हुई है। जिससे कि समस्त प्राणी “ वसुधैव कटुम्बकम् ” के सिद्धांतानुसार एक दीन (धर्म) सत्य धर्म (निजानंद संप्रदाय) की ध्वजा के आधीन होकर, कलियुग रूपी राक्षस की दुष्टता को नष्ट करके, संपूर्ण आध्यात्मिक संपदा को ग्रहण करके मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं। श्री जी ने असंख्यों हिंदू-मुस्लिमों को यह ब्रह्मज्ञान रूपी तारतम

की मों, बीच हदीस के आया है, के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम ने फरमाया है, के जो मेरे पीछे इमाम की पहचान कर दीन में आवते हैं। कलमा, नमाज, रोजा, हज, हजूर बीच अर्श के रूह सों करते हैं। जकात में अपनी अरवाह कुरबानी करके बंदे होय के रहते हैं। कलमें का जो कहना- पहचान हक की और तीनों सूरतें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि व आलैहि व सल्लम को हक कहते हैं। मोमिनों की कहनी एह है- जो मासिवाअल्लाह तरक कर कहते हैं। और बीच हदीस के आया है के मोमिन सोई जिनकी असल है, बीच अर्श के। सो मोमिन की सूरत जो बीच अर्श के है, सो तिनकी हादी पहचान कर उनों को बीच दीन के लेता है।। इन हकीकी दिलों का इश्क ईमान हक तआला और हक तआला का रसूल डिगने नहीं देता है। ए सब मायने इन भाँति के हिन्दू और मुसलमानों के सब किताबें हिन्दुओं को दिखाए, दाखिले मिलाए दिये। तब से रसूलुल्लाह की कलामुल्लाह की खुबी हिन्दू देख कर उठ हुवे। और जो सुनता है सो उठ होता है। तिनकों इश्क ईमान आवता है। इस भाँति झंडा दीन इस्लाम हकीकी का खड़ा हुआ है। और इन हकीकी झंडे तले बहुत लोग हिन्दुओं के आये हैं। आवते हैं। आवेगे, हम सो ए तीनों (3) तक़रार लैल तुल कद्र की फरदा रोज कियामत की फ़ज़्र हैं। इन बक्त के सो जानेगा। जिनकों की रूहानी नजर हक देवे और हक देवे रसूल ने खोली होयगी। सो देखेगा और यह जमाना जो है सो सख़्त भी है और नूर का भी है। सो ऐसे नूर के जमाने में खुदा तआला ने और खुदा के रसूल ने खलीफा (प्रतिनिधि) दीन का महाराजा

“कुलजम सरूप” प्रदान करके नवीन सत्य धर्म की शुद्ध अद्वैत की पहचान कराई है। जिससे कि हिंदुस्तान के प्रांतों में कोने-कोने से ग्रामों व नगरों में से लाखों परिवारों ने आकर सत्यधर्म “निजानंद संप्रदाय” में दीक्षित होकर अंतिम ईशदूत श्री जी की सत्यता की शुद्ध पहचान प्राप्त की है।

इसीलिये विचारिये ! कि यह ब्रह्मज्ञान “तारतम” हमें किसने प्रदान किया है। यह अवश्यमेव देखना चाहिये। क्योंकि मिस्कात नामक किताब में लिखा है। कि जब फित्नः (धर्म-संघर्ष) का प्रारंभ होगा तो जो प्राणी सत्य धर्म की पहचान करके अंतिम धर्मनेता श्री जी के निर्देशानुसार

छत्रसाल देव जू को किया है। सो दुनिया अज लग (आज तक) पहचानती नहीं है। इन खलीफा ऊपर भाँति-भाँति की मेहरबानी कर के दिखाई है।

वसीयतनामे बड़ी दरगाह से आये हैं। तिनमें यूँ लिखा है के किसी का ईमान नहीं रहा और क्यामत के निशान जाहेर हो चुके। और हिसाब बीच हिन्द के हुआ है, और जो वास्ते हिसाब के बैतुल मुकद्दस के नजीक तख्त रब्बिल्आलमीन था, उन लोगों की नजर तहाँ थी, सो तहाँ से हुक्म खुदा का और खुदा के रसूल ने हुक्म किया, के हिसाब हिन्द में होवेगा। सो हिन्द का खलीफा महाराजा छत्रसाल जू देव को किया है। खुदा ने और खुदा के रसूल ने मेहरबानी की है। सो इन बीच सख्त कुफरान के दीन इस्लाम हकीकी के नूर का झंडा खड़ा किया है। और के हजारों-लाखों हिन्दू ईमान ल्याये हैं और ल्यावेगें। तो इतना विचार कोई नहीं करते हैं। के विचार क्या करेंगे। किस वास्ते जमाना निपट सख्त आया है? पर सो साहेब के हुक्म से एक दीन होता है। सो भी फरमाया है के ऐसे ही सख्त वक्त में एक दीन होयगा।

सब किताबों में ऐसी भाँति लिखया है। सो एक दीन हुए बगैर क्यों कर रहेगा। ए झंडा जो दीन इस्लाम हकीकी का खड़ा हुआ है। सो अपने मजहब फिरके छोड़ के दुनिया बीच दीन के आवती है। सो सब नसीब (भाग्य) खलीफा हिंद के का है। या मोमिनों के है, न और किसी का है। ए सब जाहिर हुए खलीफा की पहचान होयगी।

सिपारा पन्द्रवां (15) सुब्हानल्लजी में लिखया है के सूरत लफ़ज में है और

जीवन यापन करेगा। वही वास्तव में मोक्ष का अधिकारी होगा।

हदीस में भी ऐसा लिखा है कि जो व्यक्ति मेरे (मुहम्मद) निर्देशानुसार इमाम (धर्मप्रमुख श्री जी) की पहचान करके कल्मा, नमाज, रोजा, हज (तारतम मंत्र, प्रार्थना, उपवास, तीर्थयात्रा) दिल से करते हैं। तथा जकात (दान) में अपनी आत्मा से परब्रह्म पर न्यौछावर होकर, सच्चा व्यक्ति बनकर जीवन निर्वाह करेंगे। वही वास्तव में ब्रह्ममुनि है।

कल्मा “ला इलाह इल्लल्लाहु मुहम्मद रसूलिल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि व आलैहि व सल्लम”

तारतम मंत्र निजनाम श्री कृष्ण/साहिब जी अनादि अक्षरातीत। सो तो

भी लिखया है कि मोमिन काफिर जुदे होंयगे, रोशनी जाहिर हुए सब जुदे होंयगे। फज्र ऐसी बातों की होयगी।

सिपारा उन्नीसवां (19) व कालल्लजीन मों लिखया है के सूरज मारिफत का रसूल साहेब के दिल से उगेगा। सो जो फज्र के वक्त एक दीन होयगा। सो हकीकत के बाब सों एक दीन होयगा, न किसी और बालब सों होयगा।।

सिपारा उन्तीसवां (29) तबार कल्लजी मों लिखया है के अगले दीन और अगली शरीयत मन्सूख होवेगी। सब दीनों के ऊपर दीन ऐह है।। तब सब पैंग़बरों पे जायेंगे और सब उम्मत जमा होंयगें। और सब पैंग़बरों पर जायेगें। सब कोई आप अपनी खता जाहिर करेंगे और कहेगे के हम शर्मिंदे हैं। तुम जाओ रसूल साहिब पे, तुम्हारा काम रसूल साहेब सो होयगा। तब सब रसूल साहेब पे आवेंगे। रसूल साहिब सबो को बख्सावेंगे। सिपारा उन्नीसवां (19) व कालल्लजी न मों लिखया है के कुरान का माजिज़ा और नबी सल्ल० की नबूवत, एक (1) दीन हुए साबित होवेगी। रसूल साहिब की कस्द थी, सो एक दीन पर थी। तिस वक्त ईसा रूहुल्लाह और इमाम महदी साहिब और रब्बानी गिरोह आई न थी। तब शर्त कही के हम आखिर को फरदा रोज कल कियामत को आवेंगे। और सब यारों असहाबों कों सबों को फ़रमाया के तुम सुन्नत जमात से जुदे जिन (नही) पड़ो। जुदा पड़ेगा सो नारी (नर्की) होयगा। बीच हदीस के आया है, के लिखया है। के अब्दुल्लाह ने पूछा, तिन सों रसूल साहेब ने जवाब दिया बात बताई होयेंगे। तिन सो साबित जमाने के मों,

अब ज़ाहेर भये, सब बिध वतन सहित ।। को कहने का आशय है । कि जो परब्रह्म प्रियतम स्वामी की पहचान करके उनकी तीन लीलाओं (ब्रज, रास, जागनी) की पूर्ण पहचान कर लेंगे वही वास्तविक ब्रह्मसृष्टि कहलाने का तथा मेरा (श्री जी) सच्चा उत्तराधिकारी होगा ।

हदीस मे वर्णन है कि वास्तविक मोमिन (ब्रह्ममुनि) वही है । जिसका वास्तविकता अर्शे मजीद (परमधाम) में है । सच्चे सदगुरु उनको पहचान प्रदान करके, उन्हे एक अद्वैत का भेद समझाकर अपने सत्य निजानंद संप्रदाय में दीक्षित कर लेंगे । वेद-कतेब के गूढ़ अनभिज्ञ रहस्यों को मिलाकर सत्य सदगुरु ने एक राह (मार्ग) दिखाया है । जिससे कि हिंदुस्तान के लोग कुरान पाक के रहस्यों को जानकर ईमान (विश्वास) की निधि पाकर आन्नदित हो गये । उन्होने रसूल (ईशदूत श्री

मैं तिनसो डरता हो, के उम्मत मेरी को गुमराह करेंगे । कौल तोड़ जुदे कर डालेंगे, के जुदे-जुदे कर डालेंगे । और आदमी ऐसे लिखे हैं के वजूद आदमी का होयगा और दिल इबलीस का होयगा ।

और सिपारा उन्नीसवां (19) व कालल्लजी न मों लिखा है के निकाह (संबंध) आदम हव्वा से होयगा । और औलाद आदम की होयगी । तिनका निकाह इबलीस से होयगा । बीच हदीस के आया है, के दुनिया के वजूद में इबलीस लहू की भाँति ही होयगा । और सिपारा पहला (1) सूर अल बक्र अलिफ लाम मीम मों लिखा है, के इबलीस दुनिया को आँखों में दीन दिखावेगा, और दुश्मनी से उलटे डार के राह मारेगा । सो फरमाया सो सब हुआ है, और होता है, और होवेगा यों बहुत भाँति मजकूर लिखा है, सो पाती में केता लिखें । जब की साहेबुज्जमाँ मिलावेगा, सो साहेब में हुकमें कहया जायेगा ।

फकीर की भी एही कस्द (इच्छा) है । जब से हक तआला की तरफ से हिदायत की मेहेरबानी हुई है, तब से फकीर ने ए खलीफा हिंद का जान कर इनों की तरफ छोड़ी नहीं है । सो अब इनकी हकीकत यूँ कर है ।

ए जो मेहेरबानी हुई है, सो पहले रूहुल्लाह पर हुऐ हैं । एह अल्लाह सेती इन फकीर पर हुई है । सो फकीर के जानया के ए जो मेहेरबानगी मुझ पर हुई है सो वास्ते खलीफा हिंद के ऐ मेहर हुई है ।। और इस वक्त में खलीफा भी ऐसा ही हुआ है । तब इम जानया के ऐ जो मेहेरबानी हक की हिदायत की जो रूहुल्लाह से हमकों पहुंची

जी) के वास्तविक स्वरूप को पहचान कर ली है।

अतः इनका ईमान (विश्वास) कलियुग से प्रभावहीन रहकर सत्य अद्वैत का आनन्द ले रहा है। तथा सत्य धर्म का झण्डा अरब से हटकर हिन्द में पूर्ण वेग से लहरा रहा है। हिंदुस्तान के अनेक परिवार इस झण्डे के नीचे आकर धन्य-धन्य हो गये हैं। क्यो कि उन्होंने लैल तुल कद्र (ब्रज, रास जागनी) की सत्यता समझकर परमधाम के अखण्ड प्रियतम का आत्म साक्षात्कार द्वारा साक्षात दर्शन किया है।

इस सत्य धर्म का मुख्य ध्वजवाहक प्रतिनिधि महाराजा छत्रसाल जी को बनाया गया है। तो दुनिया उनकी वास्तविकता से अनभिज्ञ है। मदीना से आये चार (4) वसीयतनामों के अनुसार क्रियामत प्रकट हो गई

है, सो खलीफा को पहुँचे। तो भला है। ऐसा जानकर हम इहाँ बुदेलखंड में आये। तहाँ साहेब के हुक्म से विचार किया, के एक (1) दीन कायम करने को खड़े रहे। खलीफा की भी एही कस्द है। और यहाँ जो देखें, तो कुफरान का जोर अमल है। तब हम साहेब के हुक्म में दाखिल हुए। हमको जो इनायत इल्म की हुई। सो तो तब किताबों को खोले। सो इन छत्रसाल को हिन्दुओं की किताबों से समझाये। तिनसे इनकों ईमान आया। तब कलामुल्लाह से दाखिल मिलाये दिये। तब इनों को मुहम्मद साहेब की और कलामुल्लाह की, खासलखास रब्बानी गिरोह की और दूसरी (2) फिरीशतों की गिरोह की और दूसरी (2) फिरीशतों की गिरोह की। जब एह बुजरकी इनों ने देखी नीके कर दिल सो आई, तब साहेब के हुक्मे एह मुहिम थी, सो पूर हुई। तब साहेब ने और साहेब के रसूल ने इनों का नीके कर इश्क ईमान दिया, के तहकीक दिया। केतेक हिंदुओं के कबीले इनके साथ थे, तिनकी कस्द (कार्य) दीन तरफ उलटी थी। सो साहेब की और साहेब के रसूल की और बरकत रूहुल्लाह की से सीधी हुई। दीन से दुश्मनी रखते थे, सो मुहम्मद साहेब की पहचान हुई तब दीन के बंदे हुए। सो सब मेहरबानी खलीफा के ऊपर खुदा ने और खुदा के रसूल ने करी है जिन किनों ने दीन इस्लाम मुहम्मदी हकीकी कबूल किया है सो सब खलीफा के ताबे हुए हैं। तिनकी हकीकत यूँ कर है।

जब रूहुल्लाह उतरे, तब और रूहुल्लाह पर खुदा और खुदा के रसूल की मेहेरबानी हुई। सो मेहेरबानी रूहुल्लाह ने हुक्म सेती फकीर पर करी। अर्श का

है। तथा ईसा रूहुल्लाह (देवचंद जी) इमाम महदी साहिबुज्जमाँ, (श्री जी साहिब) हिन्दुस्तान में प्रकट हो चुके हैं। जो सच्चा मोमिन (ब्रह्ममुनि) है। वही इस सच्चाई को जानता समझता है कि अंतिम कठिन समय प्रारंभ चुका है।

इसीलिये सभी पवित्र धर्मग्रन्थों के प्रमाणित निर्देश अनुसार हमें एक सत्य धर्म “निजानंद संप्रदाय” की छत्रछाया में आना चाहिये। जो कोई इस सत्य धर्म निजानंद संप्रदाय को अंगीकार (स्वीकार) करके दीक्षा ग्रहण करेगा, तो महाराजा छत्रसाल जी उस पर तन, मन, धन से न्यौछावर होते हैं। इसी कारण लाखों परिवार इस सत्य धर्म के अनुयायी बन चुके हैं तथा विभिन्न मतों के व्यक्ति सत्य ब्रह्मज्ञान को ग्रहण करके निजानंदी बन रहे हैं।

दरवाजा खोला। सब हकीकत और तब हक के रसूल की और दरगाह के रूहों की और नजीकी फिरशतों की सब निसबतों की तीनों गिरोहों का, अरू खलीफा दीन का किया, श्री महाराजा छत्रसाल जू देव के आगे कही छत्रसाल की अरवाह मोमिन है, अर्श की पहचान के गलतान हुआ। और मोमिन जेता कोई दीन हकीकी मों आवता है सो अपनी निसबत पहचान के आता है। मोमिन की अरवाह जो हैं, हक के हुकम से अर्श से उतरियाँ हैं। जिन सों हक तआला ने कौल किया है।। सिपारे नौवां (9) का ल लमलऊ में लिख्या है। “अलस्तो बेरब्बि कुम्-कालू वला का जिनों ने जवाब दिया। ए जो रूहें अर्श से उतरे, तिनमें सिरदार रूह, रूहुल्लाह की लिखी है। तिन अरवाहों को कहा के मैं तुम पर अपना माशूक रसूल भेजूँगा। और फुरमान भेजूँगा। इशारतें रमूजें लिखूँ। सो तुम को रसूल पढ़कर समझावेगा। तिस वक्त जिन तुम भूल जाओ। सो रसूल साहेब फरमाये माफिक आये। और फ़रमान कहा था, सो फरमान आया तब रसूल साहेब ने कौल किया है, के रूहुल्लाह हमारे पीछे आवेंगे। और इमाम मुहम्मद महदी आवेंगे। और गिरोह खासुल खास रब्बानी मेरे भाई आवेंगे। और बीच हदीस के आया है के ज्यों मैं अब्वल काम पर खड़ा हो त्यों ही आखिर खड़ा रह काम करूँगा। सो रूहुल्लाह अपनी शर्त पर चौथे (4) आस्मान से उतरे और गिरोह रब्बानी जो फरमाई थी, सो केतिक आई। और आवती है। और फरमाये

पार: पन्द्रहवां (15) में वर्णन है कि मोमिन (ब्रह्ममुनि) काफ़िर (कृत्घन जीवों) से भिन्न होंगे।

पार: उन्नीस (19) में वर्णित है कि मारिफत (ब्रह्मज्ञान) का सूरज रसूल (ईशदूत श्री जी) के दिल (हृदय) से उदय होगा। जो फ़ज्र (प्रातःकाल) के समय सभी धर्म-संप्रदायों के अनुयायियों को एक सत्य धर्म में निजानंद संप्रदाय दीक्षित करेगा।

पार: उन्नतीस (29) में ही लिखा है कि पूर्व की शरिअत (नियमाणली) रद-बदल होगी। सब धर्मों में सत्य धर्म निजानंद संप्रदाय महिमामंडित होगा। तब सभी पैगंबर (अवतार) अपने अनुयायियों से कहेंगे कि हम शर्मिदा हैं। अतः आप आखिरी रसूल (अंतिम ईशदूत श्री

माफ़िक सब आवेगी और जो गिरोह आई तिनकों हक तआला ने रूहुल्लाह से संदेश कहे। और कलामुल्लाह से शाहिदी हादी ने कौल मिलाय शाहिदियाँ दिवाई। एही कौल बीच मिस्कात के, हदीसों माहे दिया, दिवाईयाँ जो मुनकर न होवे, जो मोमिन की रूह होवे और एह सुकन सुने कौल मिले। शाहिदियाँ देवे, तिने इश्क ईमान क्यों कर ना आवे। और गलतान क्यों करना होवे। दिल हक्रीक्री होवे और अर्श की निसबत की अरवाह मोमिन क्यों कहिये। बल्कि ए निसबत मजाजी दिलवाले सुनकर ईमान ल्याये, भिस्ती होते हैं। तो “क़लूबल्मोमिनीन अर्श अल्लाहु तआला” जिनों के दिलों को कहे हैं सो आशिक क्यों गलतान होवे। बल्कि एह बात इन हिन्दुओं में एक बात हकीकत मारिफत की पट खुल पाई, “क्यों कुल मोमिन इख़ वहादत” कुल मोमिन वाहिद तन है।” एह सुकन हिन्दुओं की किताब से भी दिखाया। तब जो रूह कोई मोमिन की थी। सो तो सब गलतान समर्पित हुई। और सिरदार इनों में छत्रसाल था, सो ए बात सुनके आँखों आँसू भर आये, रोय दिया और दर्द सो कहया, के अब खुदा तआला और खुदा के रसूल मुझे ऐसी अकल ना देई जो दीन से फिरने के हम, बल्कि एक दीन करने ऊपर हम कमर बाँधे- और खलीफा के काम आवे। और भाँत की अब मुझ से क्यों ये ना होवे, और खुदा तआला उलटी हमसे कबूँ न करे, और जेता कोई मोमिन होयगा, दीन इस्लाम मुहम्मदी हकीकी

जी) की शरण में जाओ। कि वह आपकी व हमारी भी मुक्ति की प्रशंसा परब्रह्म स्वामी से करेंगे।

पार: उन्नीस (19) में ही यह भी वर्णित है, कि रसूल स० के अरब में अवतरित होने के समय रूहें व फरिश्ता (ब्रह्ममुनियों देवगणों) का समूह पृथ्वी पर अवतरित नहीं हुआ था। इसीलिये कल (भविष्य काल) के दिन क्रियामत आने का वचन कुरान पाक कुरान पाक लिखवाया गया।

हदीस में वर्णन है कि रसूल स० ने कहा कि मेरा संप्रदाय तिहत्तर (73) समुदायों में विभाजित होगा, उनमें से केवल एक (1) समुदाय मोक्ष का अधिकारी होगा शेष बहत्तर (72) समुदाय नर्कगामी होंगे, तथा ऐसे लोग संसार में होंगे कि तन उनका आदमी का होगा। परंतु दिल उनका

पहचान कर के जो दाखिल हुआ होयगा। सो तहकीक जानों के मोमिन की, ए अर्श की अरवाह होयगी। तिनकी एह भाँति होयगी। इनका शाहिद खुदा और खुदा का रसूल है। तिस दिन से फसाद छत्रसाल ने छोड़ दर्ई है। सो सब खल्क जानती है। सो एह काम हक्क के फरमाये माफिक से फकीरों ने किया सो सब वास्ते खलीफा हिंद के किया है। सो खलीफा देखेगा, तब जाने के वास्ते हमारी किया, और हमारी तरफ वसीला खँचा, और बीच कुफरान के वसीला खँचा, फकीरों में सो सब वास्ते हमारे और ए सब निशानियाँ जब खलीफा को मिलेंगी तब कुल सुख पावेगा और जानेगे के एह सब मेहरबानी या भाँति-भाँति की, खुदा ने, खुदा के रसूल ने मुझ पर करी है। जब खलीफा ए मेहरबानी आप पर देखेगा। तब खलीफा ऊपर जो मेहरबानी हुई है सो सब खल्क (दुनिया) देखेगी। जब लग खलीफा ने खुदा की मेहरबानी आप पर नहीं देखी, तब लग दुनिया क्यों कर देखे। और एह जमाना मोमिनों के हिस्से का है। बुजरक आया है। और काफिरों के हिस्से का सख्त आया है। इहाँ बुजरकों का बड़ा मिलावा होता है। बारहवीं (12) सदी में फरदा रोज है। लैल तुल कद्र के तीसरे (3) तकरार का फज्र हैं। कुरान की हकीकत मारिफत खुलनें से सबकों जाहिर होयगा। ए खलीफा जो हिंद का पातशाह है सो दीन का सतून (स्तंभ) है। और खुदा ने और खुदा के रसूल ने इन पर भाँति-भाँति की मेहरबानी करी है। और वसीयतनामे

इब्लीस (कलियुगी राक्षस) के आधीन होगा ।

पार: उन्नीस (19) के ही अनुसार इस कलियुगी राक्षस ने आदम-हव्वा (समस्त मानवों से पूर्वज) के वंशजों की इंद्रियो तथा रक्त को अपनी नियंत्रण में रखने की आज्ञा परब्रह्म से माँगी हुआ है । यही दानव सबका मन नियंत्रित करके गलत (असत्य) मार्ग की ओर अग्रसर / प्रेरित करता है । जिसका प्रतिफल केवल बस केवल पछतावा ! ही पछतावा है ।

पत्र में अधिक क्या लिखें श्री जी की अपार कृपा के अनुसार यह जो कुछ निशान (चिह्न) लिखे हैं । उनको विचारिये ! कि क्यो हिंदुस्तान के व्यक्तियों पर कृपा बरसने को मुहम्मद सल्ल० ने कहा था ? छत्रसाल जी

आये जो बड़ी दरगाह से, सो इन खलीफा के वास्ते आये हैं । तिनकी अजू किनकों खबर नहीं हुई हैं । बैतुल्लाह से उन बुजरकों पाक जमीन में दीन इस्लाम ईमान का झंडा था । सो उहाँ से उठाय, खुदा और खुदा के रसूल के फरमायें से बीच हिन्दुस्तान के आप खड़ा हुआ है । एते दिन दुनिया की नजर उहाँ थी, सो खुदा और खुदा के रसूल और रूहुल्लाह के आप फरमाये से सबों की नज़र हिंद पर होयगी । उन बुजरकों के खदिमों का लिखा आया है । के हिसाब बीच हिंद के होयगा । दुनिया की बरकत । और फकीरों की शफकत । और कुरान मजीद । ए अग्यारही (11) सदी पूरी होयगी, सोई मकान हक़ का है । सोई मकान खासुलखास रब्बानी रूहानी उम्मत का । सोई मकान सब पैगंबर फिरशतों का है गिरोह का सोई मकान सब पैगंबर का है खासुल-खास । और सोई मकान सब बुजरकों का है । सो एह सब मेहेरबानगी जो हिंद के खलीफा पर भई है । ए जो कौल वसीयतनामे के बुजरक आये हैं सो सब मेहेरबानी खलीफा हिंद के ऊपर भई है । सो अजू लग दुनिया में पहचान किनकों नहीं हुई, दुनिया तब देखेगी जब पहले खलीफा अपनी नजरों आप पर मेहेरबानी देखेगा । शुक्र बजाय ल्यावेगा । और शादी (आन्नदोत्सव) बजावेगा । तब दुनिया सब देखेगी ।

एह लाखों कबीलें हिन्दुओं के मुल्कों-मुल्कों मुहम्मद साहेब की सिफत

ने तथा उनके परिवार वालों ने जब हिंदू धर्मग्रंथों से यह प्रमाण समझ कर आत्मसात किया, कि श्री जी ही अंतिम अवतार है। तो इन सभी ने इस्लाम (निजानंद) धर्म से घृणा करनी छोड़ दी। तथा स्वयं परिवार समेत निजानंद संप्रदाय में दीक्षित होकर सत्य धर्म को समस्त संसार प्रचार प्रसार करने की घोषणा कर दी। जब संसार में अंतिम अवतार श्री देवचंद जी तथा मेराज जी (ईसा, महदी) श्री जी साहिब महंमत रुहुल्लाह प्राणनाथ जी के रूप में अवतरित हुए, तो उन्होंने परमधाम के समस्त रहस्य इस मायावी संसार के धर्म ग्रंथों के प्रमाणों द्वारा स्पष्ट कर दिए।

पारः नौ (9) में वर्णित तौहीद (अद्वैत) “अलस्तो वे

बगैर बोलते नहीं। ज्यों शरीयत में बकरा कुरबानी देते थे, त्यों दीन बगैर बोलते नहीं। शरीयत में बकरा कुरबानी देते थे, त्यों दीन इस्लाम मुहम्मदी हकीकी के बीच अपनी अरवाह कुरबानी करके बंदे होय के रहते हैं। ऐसे सख्त वक्त में साहेब ने और साहेब के रसूल ने हिन्दुओं को ऐसा इश्क-ईमान बख्शा है। ऐसा दीने इस्लाम हकीकी ईमान का झंडा बीच हिन्दुओं के खड़ा हुआ है। जो झंडा नूर ईमान का बीच मक्के-मदीने खड़ा था खुदा के रसूल ने और तिनके यारों असहाबों मिल के झंडा खड़ा किया था। शरीयत को यह ऊपर ले खड़े थे, तिन वह बीच, वह साहेब के हुकमें रसूल साहेब के और वह मदद से खड़े थे, सो साहेब ने और साहेब के रसूल ने बशरी मलकी हकी, तीनों सूरतों ने हिंद के खलीफे पर बख्शीस करी है। आखिर क्यामत के वक्त का नूर और अदलाई शरीयत-तरीकत की, हकीकत मारिफत की। यूँ इस्लाम हकीकी की न्यामते सब भाँति का बीज हिंद के खलीफा ऊपर बरस्या। सो सब दुनिया देखेगी। पहले जिन ऊपर मेहेरबानी हुई है, सो देखेगा, पीछे सब खलक देखेगी।

बीच हदीस मिसकात के लिखा है के दुनिया कुफर से और जुल्म से पूर हुई है, त्यों नूर और अदल से पूर हुई चाहिए। सो साहेब के हुकमें पातशाही महाराजा छत्रसाल जू देव को बख्शीस करी हुई है। और कै हजारों लाखों हिन्दू ईमान यहाँ ल्याये हैं। और दिन बरतर दिन ल्यावते हैं। और मुल्कों-मुल्कों पसारा हुआ है। और होता है इतना कोई विचार नहीं करता है ऐसे सख्त वक्त में विचार क्या करे, जो

रब्बिकुंम”-“कालू बला” (निःसदेह परब्रह्म प्रियतम ही सभी के स्वामी है) का भेद भी ब्रह्ममुनि सुंदर साथ पर प्रकट किया कि कुरान पाक में लिखित ब्रह्मज्ञान माया देखने से पूर्व ही परब्रह्म प्रियतम स्वामी ने हमें बता दी थी। परन्तु हम सब कुछ भूल गये हैं।

जो कोई ब्रह्ममुनि होगा वह तारतम ज्ञान से जाग्रत हो कर तथा अपने मूल संबंध अद्वैतवाद को स्मरण करेगा, तथा जो मायावी जीव होगा वह तो नर्क का ईंधन बनेगा तथा अंतिम समय में केवल पश्चाताप ही करेगा, कि मैंने क्यों सत्य धर्म को त्यागा ब्रह्ममुनि के दिल में परब्रह्म की सूरत विराजमान है तथा जीव के दिल में माया समाई है।

किसी मुसलमान ने वसीयतनामे पढ़े। तो पढ़ कर ढाँप (छिपा) छोड़े। पर आगे ना चलाये और किस ने न पढ़यो न सुन्यो, ना तो सौगंध दे फ़रमाया था। सो ए विचार क्या करेंगे। किस वास्ते के जमाना निपट सख्त आया। पर सो साहेब के हुक्मों एक दीन होना है। सो फरमाये माफिक ऐसे ही सख्त बक्त में एक दीन होयगा।। जैसे के बीच सिपारे उन्नतीसवां (29) तवार कल्लजी सूरत जिन्न (72) मों लिखा है। पाना 93।। वरक 70।। ला युज़हिर् अला गैबिही अहदिन। मायने तो जाहिर करेगा दीन के ताँई, ऊपर सब दीनों के है, अपना दीन सबमें जाहिर करेगा। **चौपाई-**

करनी कजा चौदे तबकों, देना सबों हक्र का आकीन।

कुरान मोज़िजा नबी नबूबत, दोऊ साबित होवे एक दीन।

(किताब कुल्ज़म सरूप)

अब यह हकीकत एक यही फ़िक्र कर भली-भाँति दिल मों लीजो। खुदा के हुक्म से तो एक दीन होने को है। सो हुकुम से यह बात भी होनी है और जमाना बदल गया है। तिन जमाने की भी चिन्हार नहीं किसी को।। कियामत की अलामतें (निशानियाँ) जाहिर हुई हैं और होती हैं और ठौर-ठौर से पुकार आती हैं। तो भी आँख नहीं खोलते। जो एक दीन हो गया। हजरत ईसा आये। सब दुनिया दीन इस्लाम हक़ीकी कबूल करेंगे। रूहुल्लाह के इल्म सेती। तिसकी आयत सिपारा छठाँ (6) सूरः निशा (4) व इम्मिन अहलिल किताबि- और नहीं है अहले किताब में से एक- “इल्ला लयुम्मिनन् बिही-” मगर वह के ईमान ल्यावे ईसा पर, कबल मौतिही-आगू मरने के। अपने के बीच वक्त देखने मौत अपनी के, के उसके ताँई

किस प्रकार से समस्त ब्रह्ममुनि एक तन है? इसका भेद भी श्री जी ने हिंदू-मुस्लिम ग्रंथो से प्रकट कर दिया। तब छत्रसाल जी ने आँखो में आँसू भरकर कहा कि हे धाम-धणी! श्री जी। हम धर्म-संघर्ष में आपके साथ तन, मन, धन से समर्पित है। जिस प्रकार श्री जी ने छत्रसाल जी पर कृपाएं करके उन्हे साधारण व्यक्ति से परिवर्तित करके महाराजाधिराज बुंदेलखण्ड पन्ना राज्य बना दिया। प्रमाण: छत्ता तेरे राज में धक-धक धरती होए इत चंबल उत नर्मदा, इत जमुना उत कोस। छत्रसाल से लड़ने की रही, ना काहू को बची होश।। जब संसार के व्यक्ति श्री जी की इस कृपा का भेद जानेंगे तभी श्री जी की वास्तविकता को पहचान करके उन पर न्यौछावर हो सकेंगे। यह शोभा सर्वप्रथम ब्रह्ममुनियों को मिलेगी, तत्पश्चात संसार के जीवों को भी नर्कों की अग्नि से निकाल कर अनंत

ईमान पस कहते हैं। अहले किताब ईमान लावे ईसा पर। के आगू मरने के। और वह उस वक्त होयगा के ईसा आसमान से तले उतरे और दज्जाल के ताई मारे। और अहले किताब सब उस पर ईमान ल्यावे, जाने प्के वह पैंगबर था। तथा साथ इस्लाम के दलील करे। याने इस्लाम बरपा करे।। जिस वक्त वह पैदा होय तो दरम्यान सों इख्तालाफ उठ जाय सारी आलम का, सारी आलम एक (1) होवे सब। और सिवाय गिरोह इस्लाम के और कछू न रहे। और चालीस (40) बरस बीच दुनिया की जमीन के रहे। उसके पीछे वफात करे। मोमिन उस पर नमाज करे। “यौमल कियामत”- बीच रोज कयामत के “यकुनु” होवे सो ईसा, “अलैहिम् शहीदा”। ऊपर इनके अहले किताब के याने गुहाई (गवाही) देवे, ऊपर जहूद के और झूठ उनके की, ऊपर नसारों के, बेटा खुदा का कहते थे। और पातशाही बरस चालीस (40) हजरत ईसा की कुरान में लिखा है। और वसीयतनामें पाक रोजें रसूलुल्लाह अलैहि व अलैहि व सल्लम के से आये। तिनमें हजरत ईसा की आया कहया। और इमाम को आया कहया। और कयामत को आया कही। और लिखा है के जिबराईल कुरान को ले जावेंगा। और दुनिया की बरकत और फकीरों की शफकत ले जावेंगा। ए सब अग्यारही (11) सदी तमाम हुए होयगा। सो कुरान उठाया, तो क्या हजरत ईसा तिसके पीछे पातशाही करेंगे? तो क्या एक दीन कुरान के उठे पीछे होयगा? तो क्या इमाम साहेब तिसके पीछे पातशाही करेंगे?

वसीयतनामे पर शक ल्यावते हो। के कुरान में लिख्या है, तिन पर शक

कृपाएं मिलेगी।

मदीना से आये चार (4) वसीयत नामों में भी श्री जी के हिंदूस्तान में अवतरित होने का स्पष्ट संकेत है। पहचानिये! कि ग्यारहवीं (11) सदी वि.स. 1735 में श्री जी ने प्रकट होकर अपने वचनानुसार समस्त संसार के प्राणी जगत में ब्रह्मज्ञान “कुल्ज्जम सरूप” का प्रचार-प्रसार करके उदघोष किया, कि “सोई खुदा सोई ब्रह्म” यथा- “सुख शीतल करू संसार ” “पार पुरूख प्रीयतम एक” “मुक्त देसी सबन को” “जागो और जगाओ” जिससे कि ब्रह्ममुनियों को यह ज्ञात हो गया कि परमधाम कहाँ पर है, परब्रह्म की लीलाएँ क्या है? तथा संसार में ब्रह्ममुनियों की क्या महिमा है?

ल्यावते हो! के कियामत आई तिन पर शक ल्यावते हो! तिस वास्ते ए बात हुक्म से होनी है। सो थोड़ी कलामुल्लाह की शाहिदी सेती लिखी है। जो आयत कर लिखता है, तो तूलू होता है। सो जो मोमिन हजरत ईसा पर ईमान ल्यावेंगे, सो हजरत ईसा आये, मोमिन उतरे, सब नव सौ नब्बे (990) और नव (9) जब हुए तब सो नाजिल हुए। मोमिन अहले किताब बीच जहूदों के पर किसी को सुध नहीं है। तिसकी आयत सिपारा ग्यारहवां (11) यअतजिरून सूर: में लिख्या है। “अहसन माकून”-बहुत खूब उससे के बीच राह हक़ के थे। “चामब्लून”-अमल करते थे नेक, जो नेक ताई देवे बदला नेक उससे भी ज्यों न ल्यावगे। वास्ते बहुत के सवाल करने वाले। और बहुत कुछ उसकी बीच याने नबी के फरमाया है जो मिसाल गाजियों के ताई हजार (1000) बंदगी करे यह एक सबसे नेकतर होवे हक़ पास उसके ताई सवाब बड़ा देवे। नव सौ नब्बे नव (990) और नव (9) और दूसरे (2) बरकत उसकी से मकबूल करने एक के ताई, बराबर उसके सवाब देवे। तो ख्वाहिश उसकी लिखी है। मुजाहिद-याने खुदा की राह के कोशिश करने वाले, बुजरकी ऐसी उससे रखते हैं। बीच लड़ाई के कमर कोशिश की बांधते हैं। ल्याये हैं। के जो भाँति-भाँति का डर, “बाबना”-बीच बाब खिलाफ, के करने वालों पर, के नाजिल हुए मोमिन कस्द करने वाले हुए, ऊपर उसके। एह साहेब के हुकुम सेती और हज़ूर ईसा के इल्म सेती, कलामुल्लाह के दरवाजे हकीकत मारिफ़त की बीच खासी उम्मम के खुले हैं। जो कहीं मिसाल गाजियों के, जो शाहिदी देवेंगें पेंगबरों

अतः यदि कोई इन लीलाओं को देख-सुन कर भी विश्वास न करे तथा संशयग्रस्त अवस्था में बना रहे। तो वह निश्चित रूप से मायावी जीव है। तथा उसका स्थान भी नर्क में है। जहाँ पर केवल पश्चाताप ही पश्चाताप है !

धाम-धणी (प्रियतम स्वामी) ने तीनो बसरी, मलकी, हकी सूरतें (ब्रज, रास, जागनी) मुहम्मद स० ईसा (देवचंद जी), महदी (मेराज जी), के भेद स्पष्ट रूप से समझा दिये। तथा सभी को शरिअत, तरीकत मारिफत, हकीकत की बंदगी साधना स्पष्ट रूप से बता दी है। यदि कोई व्यक्ति मदीना से प्रेषित चार (4) वसीयतनामों एवं श्री जी के फ़रमान नामक पत्रावली संहिता को पढ़कर इनकी बातों में संदेह करके सत्यता

की, ऊपर उसके मुनकरों के रोज कयामत के। इस हकीकत की खबर दिल दे के लीजियो जो बक़्त आय पहुँचा है नजीक। तुम खासी उम्मत में हो तो तुमकों लिखते हैं। हम जान्या के तुमकों कलामुल्लाह की हकीकत मारिफत के दरवाजे खोल देवें और कयामत के निशान सब बतावें। हजरत ईसा, इमाम महदी साहेब, दज्जाल, दाब तुल अर्ज, याजूज-माजूज का सूरज मगरिब की तरफ, और कयामत के निशान है। फेर पीछे, तौबा: का दरवाजा मुदंता है। सों मुंदे (बंद होने) पीछे तुम्हारा-हमारा मिलाप होयगा, तब क्यों तुम ईमान ल्यावोगे। सो नफा तुमकों क्यों कर देवेगा। सो सन (1089) एक हजार उन्नासी के साल से मजकूर तुम से होती है। हनोज जेती कोई अदालत की मजलिस इन सबों की खबर हुई है। और तुम पहले से भी इस बात के भली-भाँति जानते हो। और जब के मनसद पर बैठे हो तब के तुमको कागद लिखते हैं। पर तुम्हारी सबों की एक (1) साल सें हुई हैं, एक बात दुनिया की पर खड़े हो। जानते हो के जिन दुनिया हमारे हाथ से छुट जाय। और दीन की तरफ नहीं देखते हो। जो मजलिस को आखिर को निशाँ कयामत के बक़्त की, रसूलुल्लाह अलैहि व आलैहि व सल्लम की होयगी के तिन मजलिस का हजरत ईसा रूहुल्लाह, पाक इमाम महदी, रसूल साहिब अपनी खासी उम्मत सहित फिरिश्ता जिबराईल और असराफील और पैंगबर कुल और खुदा आप काजी होय के बैठेगा। सब दीदार पावेगे। ए मिलावा कुरान के बीच आना लिखा है। जो कोई मुसलमान पाक दरगाह मों तलब (प्रस्तुत) होयगा, सो इस मिलावे से होयगा। सो इस मिलावे की बात जो

को छिपाने का प्रयत्न करता है। तो निश्चित रूप से वह (ब्रह्ममुनि) नहीं हो सकता। निःसंदेह ! वह संसारिक जीव है। तथा उसका स्थान नर्क ही है। क्योंकि मुहम्मद स० ने सौगंध देकर यह सत्य वसीयतनामों लिखवाए है।

पार: उन्नीसवां (19) में वर्णन है कि सत्य धर्म निजानंद संप्रदाय की महिमा सभी संप्रदायों में सर्वश्रेष्ठ है। तथा कुरान पाक की सत्यता सर्वसिद्ध है। मुहम्मद साहिब श्री जी अंतिम अवतार है। जो कोई इस सच्चाई को झुठलाने का प्रयत्न करता है। निःसंदेह ! वह गलत मार्ग पर अग्रसर प्रेषित है। जिसका कोई प्रतिफल नहीं प्राप्त होगा।

पार: छः (6) के अनुसार श्री जी के अवतरण से समय के पश्चात

कोई करता है, सब तिनसो उलटी दुश्मनी रखते हो। सो ए मजलिस की हकीकत इनों की दुश्मनी की बदौलत कोई देख के तुमसों कोई बातें कर नहीं सकता हैं। ए अमल दुश्मनी जो करते हैं सो कयामत को तुम्हारा क्या हाल होयगा? खुदा के ग़ज़ब, से डरो रे ! डरो रे ! डरो रे !

वसीयतनामों में लिखा है- के पाँचवें (5) बरस जब अग्यारही (11) सदी तमाम हुई तब जिबराईल कुरान को ले के जायगा। तो क्या एह जो मिलावा हक का है, सो कलामुल्लाह उठे पीछे होयगा। सो क्या तुम कैसी फिक्क करते हो। के ना एक आँख दुनिया की रखते हो। एक तो आपको दगा देते हो। मसनद पर बैठते ही वक्त लैल तुल कद्र की तीसरी (3) तक़रार की फ़ज़ के वक्त नूर का हुआ है। और दज़्जाल के गुलबे ने भी जोरा किया है।। तिन जोरे ने तुमकों दिया हैं। पर तुम इन दोनों (2) वक्तों को देखो। जो तुमको कुरान के, हकीकत मारिफत के दरवाजे जो खुले होवें। तो जो कदी लाख बेख़बरी करी तो तिन सेती छूटना नहीं। ग़ज़ब खुदा का ! सिर आया। पर हम अब बहुत इस बात की सबूरी करी। किस वास्ते के तुम तो, जो आखिरी जमाने का खाविंद है, तिनसों तो ऐसी दुश्मनी रखते हों। तो साहेब की मजलिस के दुश्मन होंयगे, सो तुमको क्या कहेंगे। और नफा क्या देंवेगे। तो बक्त ऐसा आया है। और वसीयतनामों आए हैं तिनमें ऐसा लिखा है। हिजरी सन एक हजार नब्बे (1090) ईमान सों रूहें बाकी जो रहे, तिनमें ईमान का नक्स नहीं रहा। ऐसे वसीयतनामों रसूल साहिब की दरगाह से आए हैं सो झूठें क्यों कर होवे? और

के समस्त व्यक्तियों को निजानंद संप्रदाय में दीक्षित होना ही होगा। अन्यथा वह माया जगत के भ्रमजाल से नहीं निकल पायेगा।

वसीयतनामों के अनुसार श्री जी इस संसार में ग्यारहवीं सदी हिजरी 1099 एंव विक्रमी संवत् 1735 में अवतरित हुए हैं। तथा जिब्रील (जोश) ने फकीरो की शफकत (श्रृषियों की गुणवत्ता) तथा बरकत (कृपाशीलता) कुरान पाक के बातिनी शब्द ज्ञान एवं शरिअत (नियमावली) तरीकत (पवित्रता) के अतिरिक्त मारिफत हक्रीकत (ब्रह्मज्ञान सत्य) की महिमा प्रकट कर दी है।

अतः यदि कोई कुरान पाक व हदीसों से श्री जी के वास्तविक स्वरूप की

तुम क्या करो, ए वक्त ऐसा आखिरत का जानकर एक दीन करने का सवाब तुम कर नक्शा बाँध्या है। सो आखिर जमाने का खाविंद जिनके हाथ सब कोई नफा पावेंगे सो वह ईमान का दरवाजा ऐसा मुंदया (बंद) है जो तिन बुजरकों का नाम तुम्हारे आगे कोई ले नहीं सकता है। सो इन बातों करके ईमान का दरवाजा बंद किया है। और यहाँ एते मुल्लाँ, काजी, आलिम, आरिफ, खलीफा, कहलावते हैं। और खासी उम्मत में नाम धरावते हैं, पर सो तिन सो कछू न होयगा। जिनके ऐसे फैल हैं, और बुजरकी उम्मत की लिखी है सो लेने चाहते हो और आपको खासी उम्मत से गिनते हों तो तिन खासी उम्मत की जो बुजरकी लिखी है, तिन बुजरकी की एक निशानी दे सकोगे? तिनकी आयत सिपारा पहला सूर अल बक्र (1) अलिफ लाम मीन मों वरक 65 के लिखा है। “तिल्क”-ऐ दावा हर तोयफा करते हैं। अरूमानीयों हुम-और की आरजू ऐ झूठी हैं। “कुल हातू”- कहो के ल्याओ बुर्हान, कुन्तुम् रवा - “दे किने” जो तुम हो तुम साँचे कहने वाले बीच इस कौल अपने के।।

“अलस्तु बेरब्बि कुंम”- याने हो मैं परवरदिगार तुम्हारा।

रोज कुंन के कहया तुम ने “कालू बला”। याने सच है साहेब हमारा। सो एह शाहिदी कुंन के रोज की दे सकोगे?

सिपारा दूसरा (2) सयकूल मों लिखा है “उम्मतन् वसतन्” -के गिरोह एक अदल से उठाई गई। ले तकन-तो होवे शाहिदा- गुहाई (गवाही) वास्ते पैंगबरो के, अलमासे-ऊपर मुनकरो के, नबूवत रोज क्यामत को। यकूर्नरसूलो

पहचान करके एक ही परब्रह्म प्रियतम स्वामी की उपासना करता है तो उसे तत्काल एक हजार (1000) प्रार्थनाओं का प्रतिफल प्राप्त होगा।

पारः ग्यारह (11) के अनुसार ईसा के इल्मे लहुन्नी (श्री जी के तारतम ज्ञान) पर जो कोई विश्वास करेगा तथा निष्ठापूर्वक (परब्रह्म प्रियतम) सेवा करेगा। उसे तुरंत अपनी साधना का अनंत प्रतिफल प्राप्त होगा।

वसीयतनामों के अनुसार याजूज-माजूज (दिन-रात) दज्जाल (कलियुग दानव) सूरज का मगरिब (पश्चिम) से निकलना, दरवाजा तौबाः (प्रायश्चित) का बंद होने का वास्तविक रहस्य श्री जी ने स्पष्ट किया है। कि “आधुनिक दिन-रात नें प्रातः दोपहर, सांय रूपी कलियुग के

आवे भेज्या मेरा- याने मुहमंद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम ऊपर रास्ती तुम्हारे, गुहाई (गवाही) दे अदल पाक तेरी की। ए क्यामत के रोज का है पैंगबर, तुम मों आया है। ए गुहाई (गवाही, साक्षी) कौन देता है? और मुन्करी कौन करता है, इन मजलस सों। तिनकों तहकीक करो। पारः तीसवां (30) अम्म, सिपारा चौरानन्वे (97) तनज्जलुल मलाइकतु- तले भेजता है फिरिश्तो के ताई। बर रूहु-रूह बड़ी से या कुरान से- के सबब हयाती दिल को है। या मलायकों के ताई साथ रूहों के भेजता हैं। वह रूह कौन है? नजीक दरगाह खुदा की मों? बीच तबियत अपने के कहते हैं, के कोई फिरिश्ता तले ना आवे मगर उस वक्त ताई के रूह है, सो उसके साथ है। और नकीब उसका जो ऊपर आदमियों के खबरदार होता है। और हर एक भाँति से तले उतरना फिरिश्तों का होता है। सिपारा तीसवां (30) अम्मयत साअलून सूरः नबा (80) मों लिख्या है, यौम यकूमुररूहु रोज कायमी रूहों को, याने जिस रोज बरपा होवे, रूहे वल मलाइकतु सफ़्फ़ल्- खड़े होवे सफ बाँध के। रूहे सो मलायक है याने फिरिश्ता एक है। मुवक्कल ऊपर अरवाहों के और बीच मुअल्लिम के कहते हैं पैदास उससे बुजरक तर नहीं है रोज क्यामत को वे सफ होवे सब। और तमाम फिरिश्ते साथ बहुत शुमार के बुजरकी केतक सफें और वे बीच बंदगी के बराबर होवे। और एनुल्मजानी के बेटे मसऊद राजी हू जो खुदा से, उससे रिवायत की है, मर्तबा रूहों का चौथा (4) आसमान।। हर रोज बारह हजार (12,000) तसबीह करते हैं। हर तसबीह उसकी से फिरिश्ता पैदा

दानव की सेनायें हैं। जो कि समस्त व्यक्तियों को अपने आधीन करके भ्रमजाल में भ्रमाकर अनेको कार्यों में सलंग्न रखते हैं। मनुष्य बचपन से लेकर वृद्धावस्था तक केवल मायावी (संसारिक) कार्य में तो रुचि लेता है। तथा सत्य धर्म का अनुसरण न करके कर्मकाण्ड का प्रदर्शन करता है। जिसका प्रतिफल सिर्फ प्रायश्चित्त ही है”।

अतः श्री जी ने अरब की पूर्व दिशा के स्थान पर हिंद (भारत) की पश्चिम दिशा में ब्रह्मज्ञान तारतम्य वाणी “कुल्लम स्वरूप” का उजाला कर दिया है। जिससे लाखों हिंदू-मुस्लिमों का समूह उन के वास्तविक स्वरूप पर समर्पित होकर अखण्ड परमधाम का अमूल्य उपहार प्रेम

होता है। और कहते हैं के रूह तोयफा है। शकल आदमी की। न इन आदमियों से। बीच सफ़ खड़ी होयगी रोज क्यामत के। फिरिश्ते सिफ़्त करने वाले के रूह है, सो ज़िबराईल है, ऊपर फिरिश्तों के सफ़ खैंचै। ला य त कल्लमू न सुकन कहे बीच बाब शिफायत के। इल्ला मन्अजिन- मगर जो कोई के हुक्म देवे, लहुरहमानु- ऊपर उस किसी के ताई के खुदा तआला शिफायत ना करे, या करे शिफायत जिस किसी के ताई के हुक्म करे बीच शिफायत के। व का ल-कहा होवे उतरने बीच दुनिया के, सवाबा-कलमा तौहीद का छूटे मोमिन और किसी की शिफायत न करे। जो गिरोह रूहों की और मलायकों की जिनको सो हजार (1000) महीने लो खैर उतरी है, सो तुम हो। आखिरत को हुक्म तुम्हारा चलेगा। जिन हुक्म से सब कायम होंयगे।

सिपारा अट्ठारवां (18) कद अफ़लह सूरः मुअमिनून (23) में लिखा है के फिरिश्तों की फौज उतरी है, वास्ते कुरान के। और कुरान उतरा है, सो वास्ते उनके। तिस वास्ते जिन फिरिश्तों की फौज के वास्ते कुरान उतरा है, सो वास्ते तुम्हारे फौज फिरिश्तों की उतरी है, और कुरान उतरया है सो वास्ते तुम्हारे उतरया है। सिपारा तीसवां (30) अम्म सूरत नाज़िआत- में लिखा है। अमरन्- फौज असराफील की नाज़िल है ऊपर कज़ा के। के कज़ा ताल्लुक इनके हैं। सो कज़ा तालूम (साथ) तुमारे हैं।

सिपारा तीसरा (3) तिलकरसुल में लिखा है, के गिरोह एक तले अर्श के है, के ऊपर पकड़ा है इल्म उसके ने, सो गिरोह पाक करेगी जमीन से तो अर्श कुरसी

अन्नया के साधना मार्ग से सहज रूप में प्राप्त करके मोक्ष के अधिकारी बन गये हैं। यदि कोई इन महाप्रलय के संकेतों को यह समझकर छिपाना चाहें, कि हमारे हाथों से संसार के समस्त भौतिक सुख छिन जायेंगे, तो वह किस प्रकार मोमिन (ब्रह्ममुनि) होने का दावा कर सकता है? परब्रह्म के निर्देशानुसार श्री जी हिंदुस्तान में बैठकर सबको ब्रह्मज्ञान तारतम वाणी कुल्ज़म स्वरूप साहेब प्रदान कर रहे हैं। यदि कोई श्री जी के ब्रह्मज्ञान कुल्ज़म सरूप तारतम वाणी के पर संदेह करता है। तो वह निश्चय ही नुकसान में रहेगा तथा महाप्रलय के दिन वह परब्रह्म के सम्मुख शर्मिंदा होगा।

वसीयतनामें तो मदीना से महुम्मद साहिब की दरगाह में से स्वयं

तोड़ी (तक) सब आलम को तुम पाक करोंगे, मेअराजनामे मों लिखा है, के अर्श के उठावने वाले फिरश्ते बख्शावना आपका चाहते हैं, के हमको उम्मत बख्शावेगी।। सो उस उम्मत में तुम हो, उन फिरश्तों को तुम बख्शाओगे। जिनों ने खुदा का अर्श उठाया है। सिपारा अट्ठारहवां (18) कद अफलह सूर: मुअमिनून मों लिखा है के मोमिन आये हैं। नूर बिलंद सेती उनके काम और हाल नूर है, बीच नूर के, और काफिर आये हैं अंधेरी सेती, उनों का काम और हाल अंधेरा है बीच अंधेरी के, सो नूर बिलंद सेती तुम आये हो, काम और हाल तुमारे हैं बीच नूर के, सिपारे तीसरा (3) तिलर्करसूल मों लिखा है के वह कौन है साहिब इल्म के वे कौन है, याने मोमिन है, साहिद किताब-शाहिदी देने वाले हर एक इल्म से खबरदार है। इनकी सोहोबत सेती पहचान होवे खुदा की, सो तुम हो, और सब इल्म से तुम खबरदार हो, और तुमारी सोहबत सेती खुदा की पहचान होयगी। और खुदा की गवाही तुम देवोगे सब आलम (संसार) को।

सिपारा उन्नीसवां (19) व कालल्लजी न मों लिखा है के आखिर को गंज अर्श इलाही का खर्च होयगा, सब मोमिनों पावे। सो मोमिन तुम हो, अर्श इलाही का गंज तुम पर खर्च होयगा, ऐ मर्तबा तुम्हारा है। सिपारा दूसरा (2) सयकूल मों लिखा है के बनी इसराईल का पैगंबर तहकीक खुद रूहुल्लाह है। सो खुद पैगबर तुमारा है। सिपारा चौथा (4) लनतनालु मों लिखा है उलमा बनी इसराईल के ऊपर पैगंबर आखिरी जमाने के ताई उतरया है, या कुरान, सो कुरान तुम पर उतरया है, वह उलमा भी तुम हो।

(मुहम्मद) साहिब ने भिजवायें हैं। यदि कोई इनको असत्य मानता है तो वह कलियुग दानव प्रेरित भ्रम के आधीन है, तथा उसका स्थान नर्क में निश्चित है। अतः जो कोई अपने आप को विद्वान, न्यायाधीश, ज्ञानी, पाठी, धर्म के उत्तराधिकारी समझते हैं? तो वह क्यों नहीं वसीयतनामों की सत्यता की खोजबीन अन्वेषण करके श्री जी साहिब जी के द्वारा निर्देशित सत्य धर्म निजानंद संप्रदाय को अंगीकार स्वीकार करते हैं? दुनिया वालों! परब्रह्म स्वामी के दण्ड! से भयभीत होइये।

हे विद्वानो! आप लोग क्षण-भंगुर मायावी संसार के सुखों के लिये अखण्ड परमधाम के अलम्य, अनमोल संपदा को खो रहे हैं। तो विचारिए! कि महाप्रलय के दिन परब्रह्म प्रियतम स्वामी के सम्मुख किस

सिपारा दूसरा (2) सयकूल मों लिखा है के राह दिखलावना न्यामत व सिफ्त मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि व आलैहि व सल्लम की से पीछे उसके बयान किया, मैं राह की वास्ते बनी इसराईल के, राह खुदा ने तुम्हारे वास्ते न्यामत का बयान किया है, सो बनी इसराईल तुम हो।

सिपारे पहले (1) सूर तुल बक्र अलिफ लाम मीम् में लिखा है के पीछे उस्तवारी उस कौल की मकसद उस कौल से हैं। बीच तौरेत के साथ बनी इसराईल के बाँधा है, ऊपर पैगंबर आखिर जमाने का, सो कौल तुम पर बाँधा है, जिस कौल सेती मकसूद होगया, सब खलक का सो कौल तुम्हारे पास है। सो तौरेत तुमको दर्ई है। सो आखिर जमाने का पैगंबर तुम्हारे बीच है। सो बड़ा अचरज है! जो एती कलामुल्लाह की पुकार तुम पर है। और तुम सुनते भी नहीं हैं। मगरूरी (घमंड) अपना नहीं छोड़ते हो। तिसका वास्ते क्या भाग छुटेगे? सिपारा दूसरा (2) सयकूल-मों लिखा है, के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलैहि व सल्लम आये वास्ते जहूदों के, और नसारों के के दी हैं जिनको किताब। के वह ल्यावें हर मोजिजों के ताई। और खुलासा करेंगे। और रसूल साहेब तुम्हारे वास्ते आये हैं। हर मोजिजों की किताब तुमको ल्याए हैं सो सब आलम को खुलासा तुम करेंगे।

सिपारा पाचवां (5) वल मुहसनात-मों लिखा है के गिरोह जहूदों के मों आखिरत को मुल्क नबूवत का है, पातशाही रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलैहि व सल्लम की, बीच फकीरों के साथ इन जहूदों के रखे हैं। सो मुल्क नबूवत का तुम्हारे बीच हुआ है। सो उनके फकीरों का मर्तबा तुम जानते हो। जिन फकीरों के बीच

प्रकार सिर ऊँचा कर सकोगे? विचारिए! कि क्यों हम इस ब्रह्मज्ञान की धर्म गोष्ठी में सम्मिलित होकर अनंत सुखो को प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं? क्या क्षण मात्र के ज्ञान चातुर्य को तिलांजलि देकर हम अखंड ब्रह्मज्ञान को नहीं ग्रहण कर सकते? जो कोई श्री जी की धर्म सभा से दुश्मनी करेगा। वह किस प्रकार मोमिन (ब्रह्ममुनि) कहलायेगा?

अतः हे विद्वत शिरोमणि! आप अपने विद्वान होने के अंह को त्यागकर श्री जी साहिब महंमत रुहुल्लाह साबि?। माँ प्राणनाथ जी के अखण्ड ब्रह्मज्ञान तारतम वाणी “कुल्ज़म स्वरूप” ग्रंथ का स्वाध्याय कीजिए, जिससे कि परब्रह्म की कृपा से आपके समस्त संशय निर्मूल होंगे। क्यों कि अगर हम असत्य वर्णन करते तो आज से तीन सौ (300) वर्ष पूर्व ही यह स्पष्ट हो जाता। उस वक्त (समय) छः (6) वर्ष तक

रसूल साहेब पातशाही करेंगे सो तुम हो। सिपारा दूसरा (2) सयंकूल मों लिखा है, मायने रूजू सब इन उम्मत से होंयगे। वे कोई के जिनकों हमने तौरैत दर्ई है। पहचाने ताई कुरान कों और पैगंबर को जैसे के पहचानने का हक है। सो तौरैत तुमको दी है। मायने रूजू सब तुमसे होंयगे। कुरान को और पैगंबर को तुम पहचानोगे। जैसे पहचानने का हक है। इस भाँति बुजरकियाँ बहुत लिखियाँ हैं। सो बिना दीन का काम किये पानी पीवना भी रवा नहीं।

सो ए पातशाही दीन की श्री महाराजा छत्रसाल जू देव को बख्शीस भई है। जो कि खुदा एक है। मुहम्मद सल्लल्लाहों अलैहि व आलैहि व सल्लम बरहक है। सो हमारा साहिब है। हम पर आया है। हुक्म खुदा से कलामुल्लाह हम पर ल्याया है। हमारे वास्ते हकीकत मारिफत के दरवाजे हमको खोल दिये हैं। खासी उम्मत हम हैं। नूर बिलंद सेती हम उतरे हैं। तौरैत हमको दी है। मायने रूजू सब हम करेंगे। कियामत के रोज की पातशाही है रसूल साहेब की, सो हमारे बीच हुई है, जो गिरोह अदल से उठाई गई है, जो गुहाई (गवाही) पैगंबरों की देवेगी, मुन्करो को रोज कियामत के, सो गुहाई हम देवेंगे। जो रूह बारह हजार (12000) तसबीह करते हैं, चौथे (4) आसमान में, सो रूहे खुदा के हुक्म से हम हैं। जो रूहें खुदा के दरगाह बीच कही, सो खुदा की दरगाह बीच हुक्म हम हैं। और रूहें और फिरिश्ते लैल तुल कद्र के बीच उतरे हैं, तीसरी (3) तक़ार लैल तुल कद्र की मों, जो फज़ के बक्त हुक्म चलावेगें। हुक्म जो फौज फिरिश्तों की उतरी है वास्ते कुरान उतरया है, सो

आपसे पत्राचार केवल सत्य धर्म निजानंद संप्रदाय के प्रचार-प्रसार के कारण किया। अन्यथा हम तो अंपढ़ है। आप विचार कीजिए! क्योवि आप विद्वान है। अतः विचारिये! तथा सत्यता का पक्ष ग्रहण करके अखण्ड मोक्ष के ब्रह्मज्ञान को अंगीकार आत्मसात कीजिए।

समस्त प्राणियो का उद्धार हो, इसी कामना के साथ, आपका एक साथी।



वास्ते इनके सो फौज हम मों आई है। कुरान हमारे वास्ते आया है। जो इसराफील की फौज नाज़िल कज़ा पर है सो ख़ुदा के हुक्म सो फौज हमारे बीच आई है। गिरोह के जो तले अर्श के है, के ऊपर पकड़या है, इल्म उसके ने जो गिरोह पाक करेगी, जमीन से तो अर्श की कुरसी तोड़ी (तक) सो ख़ुदा के हुक्म से, सो पाक कुरसी तोड़ी हम करेंगे। अर्श के उठाने वाले फिरिशतों को हम बख़्शावेंगे। हुक्म ख़ुदा के से मोमिन साहेब किताब जो कहे सो ख़ुदा के हुक्म सो हम हैं, हुक्म ख़ुदा के से। अर्श इलाही का गंज खर्च हम पर हुआ है, हुक्म ख़ुदा के सो। आखिर ज़माने का पैगंबर ईसा रूहुल्लाह, साहिबुज्जमाँ बीच आया है, ख़ुदा के से, राह न्यामत की हमकों दिखलाई है, हुक्म ख़ुदा से, जिन कौल मकसूद होयगा, सबका सो हुक्म ख़ुदा के से हम पर बाँधा है। जो सबों का मकसद होयगा, रसूल साहेब के हुक्म ख़ुदा के से। मुल्क नबूबत का हुक्म ख़ुदा के से हम बीच हुआ है। जो फरमाया है, के आखिर को सारे पैगंबर उतरेंगे। सो हुक्म ख़ुदा के से हमारे बीच उतरे हैं।

अब हम इस खलकें में बैठ, वसीयतनामे को, कुरान को बरहक़ कर कहते हैं और रोशनाई दीन की जाहिर करते हैं, और जिन पर मेहेर भाँति-भाँति की हुई, ये इल्म-ए-लहुनी रूहुल्लाह का है। इन रोशनियों को क्यों कर ढाँपते हो? एह ढाँपना तुमको रवा (उचित) नहीं। ~~इस मजलिस में दुश्मनो को न चाहिए। तुम~~ चाहिए के प्यार करके सुनो! ए तो मुहम्मद साहेब की खूबी है।

तुम मियां जी! ठिकाना कुफरान का जानते थे, तिन ठिकाने कलामुल्लाह और मुहम्मद सल्लाहु अलैहि व आलैहि व सल्लम का और खासी उम्मत और